

ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति



वर्ष : 72

जुलाई, 2021

अंक : 07

मूल्य : 100 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :

बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक

डॉ. मनबीर

सह संपादक

श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :

‘अमर ज्योति’

श्री बिश्नोई मन्दिर

हिसार - 125 001 (हरियाणा)

दूरभाष : 80590-27929

94670-90729

email: editoramarjyotipatrika@gmail.com

editor@amarjyotipatrika.com

Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :

फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद
अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : ₹ 100

25 वर्ष : ₹ 1000

११ अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार
लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे
सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है।
लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से
सम्पर्क करें ११

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र
हिसार न्यायालय होगा।



‘अमर ज्योति’ का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये। विषय अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ |
|---|-------|
| सबद-106 | 3 |
| सम्पादकीय | 4 |
| साखी | 5 |
| सद्गुरु श्री जम्भेश्वर जी की वाणी में योग | 7 |
| बाल कोना: रतन कटोरा (दादी गी बातां) | 9 |
| Recent Pandemics, Environmental Consequences, Inter-relationship and Solutions in Jambhani Philosophy | 10 |
| 1857 की क्रांति और प्रत्यक्षदर्शी संत साहबराम जी | 13 |
| आओ विचार करें-5 | 17 |
| प्राणवायु कहीं प्राणहर्ता न बन जाए! | 21 |
| हरजस | 22 |
| बिश्नोई लोकगीत | 23 |
| कविता: कड़ निवळी कळदार | 24 |
| दुर्गुणों की जड़ है क्रोध | 25 |
| इंतजार चौमासा रो | 26 |
| तीर्थ धाम रोटू ग्राम | 27 |
| हमारी स्वास्थ्य प्रणाली कितनी मजबूत है? | 29 |
| खेतीबाड़ी: उत्तम खेती (भाग-1) | 31 |
| लघु कथा: डर | 34 |
| नारी ओ नारी | 35 |
| करियर: 12वीं मेडिकल के बाद बेसिक साईंस में..... | 36 |
| जैसा विचार वैसा आचार | 38 |
| सामाजिक हलचल | 41-42 |



दोहा

सब प्रचे साबत मिले, समझे काजी खान।
सतगुरु शब्द सुणाइये, जब आवै इमान।

एक समय भ्रमणार्थ काबुल तथा मुलतान आदि देशों में जम्भगुरु जी पधारे थे। रणधीर जी आदि प्रमुख शिष्य साथ में थे। वहाँ पर अनेक देशों में भ्रमण करते हुए, काजी मुल्ला, खानों को अपने दिव्य चमत्कारों से चमत्कृत करते हुए उनसे जीव हिंसा करना छुड़वाते हुए अन्त में मुलतान आये। वहाँ पर एक पहाड़ की टेकरी पर आसन लगाया था। उस समय उनके पास में बारह काजी और तेरह खान आये थे। ये सभी प्रह्लाद पंथी जीव थे। उन्होंने चार पर्चे मांगे थे। वे चारों ही पूर्ण करके दिखलाये तभी से वे जम्भदेवजी के शिष्य बन गये थे। तब उन्होंने श्री देवजी से प्रार्थना की थी कि आप हमें अपने मुखारविन्द से दिव्य शब्द सुनाइये जो ज्ञानवर्धक तथा मार्ग निर्देशक भी हो तथा आपके बारे में भी हम ठीक प्रकार से जान सके। तब श्री देवजी ने यह सबद सुनाया—(विशेष कथा जाम्भा पुराण में पढ़ें।)

सबद-106

सुण रे काजी सुण रे मुल्ला, सुणियो लोग लुगाई।
नर निरहारी एक लवाई, जिन यो राह फुरमाई।
भावार्थ— रे काजी! रे मुल्ला सुनो! हे संसार के स्त्री-पुरुषो! तुम भी कान खोलकर सुनो! मैंने परब्रह्म परमेश्वर से सगुण साकार रूप धारण

किया है। वैसे मेरा वास्तविक रूप तो निराहारी एकत्वपना ही है परन्तु जब भी धर्म की हानि और पाप की अभिवृद्धि होती है तो मैं अनेक बार नये-नये रूप धारण करके पीड़ितों की रक्षा करता हूँ। उस समय मुझे सभी मर्यादाओं को तोड़कर संसार के पदार्थों को भी ग्रहण करना पड़ता है। किन्तु इस समय तो मैंने निराहारी एक वायु के सहारे ही रहकर यह धर्म का मार्ग चलाया है। इसलिये तुम्हें यह अवश्य ही अद्भुत लगता है।

जोर जरब करद जे छाड़ो, तो कलमा नाम खुदाई।
जिनके साच सिदक इमान सलामत, जिन यो
भिस्त उपाई।

यदि आप लोग निरीह जीवों पर जोर-जबरदस्ती करते हो तो करना छोड़ो तथा उनके गले पर छुरा चलाना छोड़ दो तो तुम्हारा कलमा यानि खुदा का नाम लेना जायज होगा और यदि जब तक जीव हिंसा तथा उनका उत्पीड़न चलता रहेगा, तब तक तुम्हारा नमाज पढ़ना, कलमा रखना, रोजा आदि सभी व्यर्थ है तथा जिसके हृदय में सच्चाई, ईमानदारी और दयाभाव सही सलामत विद्यमान है वही स्वर्ग या भिस्त को पहुँचने का उपाय कर रहा है। इनके अतिरिक्त तो सभी ने नरक का मार्ग अपना रखा है।

—साभार 'जम्भसागर'



मानव जीवन अनमोल है। 84 लाख योनियों में कष्ट भोगने के बाद यह मानव जीवन मिला है। इस पंक्ति का अर्थ है- ‘यहां पर किया हुआ शुभ कार्य अंत समय आपके साथ जाएगा।’ गीता में भी कर्म की महता बताई गई है, ‘कर्म करो पर फल की इच्छा मत करो’। रामायण में भी कुछ इस तरह का उल्लेख है कि ‘कर्म प्रधान विश्व कर राखा’। इस तरह सभी ग्रंथ कर्म करने की प्रेरणा देते हैं। सृष्टि के रचयिता ने मानव को बुद्धि, विवेक, हृदय, मन दिए हैं। इनके द्वारा वह त्याग, तपस्या, संयम, वैराग्य, सेवा, दया, करुणा, परोपकार, भक्ति, साधना आदि कर्म कर सकता है। हम यदि जीवन में सुख, प्रेम, मान, बड़ाई, शांति और मोक्ष चाहते हैं तो जो कुछ तुम्हारे पास है उसे उदारता पूर्वक दूसरों को दो। जो तुम दूसरों को दोगे, वह खेत में पड़े बीज की तरह अनन्त गुणा होकर मिलेगा। कई मनुष्य ईश्वर प्रदत्त चीजों का उपयोग नहीं करते, स्वयं अपने पास ही रख लेते हैं। वे चीजें पड़े हुए बीजों की भांति नष्ट प्राय हो जाती हैं। तुम यदि दुख में दूसरों की सहायता करोगे, उनके दुख में शामिल होगे, उनके प्रति प्रेम, सेवा, सहानुभूति, उदारता का बर्ताव करोगे तो सारा जगत तुम्हारा अपना बन जाएगा। निःस्वार्थ भाव से दान करोगे तो ईश्वर की कृपा के पात्र बनोगे। परमार्थ तुम्हें सर्वत्र सम्मान का अधिकारी बना देगा।

भौतिक जगत में भी कर्म करने पड़ते हैं। जीवन यापन करने के लिए धन अर्जित करना, विद्याध्ययन करना, बच्चों का भविष्य बनाना, माता-पिता की सेवा करना, उनका भरण-पोषण, दवा करना, रिश्तों का निर्वाह करना आदि। तीव्र गति से बढ़ती उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानवीय गुणों का हरण करके मनुष्यों को स्वार्थी बना दिया है। मानसिकता संकीर्ण हो गई है, जीवन में सब तरफ आपाधापी मची है। झूठ, भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, धोखा जीवन के अंग बन गए हैं। महामारी के इस समय में नकली दवाइयों का बाजार गर्म हो रहा है। दान के नाम पर अपनी उदारता का दिवोरा पीट जा रहा है। वृक्षों को काटकर नकली इवाख यंत्र से जीवित होने की कोशिश की जा रही है। ये सारे कुकर्म हैं, इन्हें त्यागना चाहिए। आत्मिक ऊन्नति की ओर ध्यान देकर जीवन सफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। ‘सुकस्त अहल्यो न जाई’ अर्थात् शुभ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाते।

आगे सुरपति लेखा मांगे, कह जीवइ क्या करण कमाणो।

जिवइ ने पाछै भूजण लागो सुइत न पछताणो।।

हे मानव, परलोक में भगवान जीवात्मा से शुभ-अशुभ कर्मों का निर्णय पूर्णगे तो पछताना ही पड़ेगा। जिस जीवात्मा ने बुरे कर्म किए हैं जैसे- चोरी, छल, कपट, धोखा, हिंसा आदि तो उसे निश्चित ही नरक में स्थान मिलता है। वह वहां पर अनेक प्रकार के कष्ट पाता है और अपने बुरे कर्मों को देखता है तब उसे पश्चाताप होता है कि अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही खो दिया। इसके विपरीत जिन मानवों ने अपने जीवन में ध्यान, जप, तप, परोपकार, अहिंसा, दान आदि शुभ कर्म किए हैं वे स्वर्ग में रहकर सुख भोगते हैं।

प्रभु ने हमें विचार करने की शक्ति प्रदान की है। विचार यदि सकारात्मक है तो वे हमें ऊंचा उठाएंगे, अच्छे कर्म करने के लिए प्रेरित करेंगे। अन्य लोग हमसे प्रेरणा लेकर सद्कर्म करने की कोशिश करेंगे। हमारे विचार यदि नकारात्मक हैं तो वे हमें अधर्म करने के लिए प्रेरित करेंगे। नकारात्मक विचारों वाला मनुष्य हमेशा अनुशासनहीन जीवन व्यतीत करेगा। ऐसे विचारों वाला व्यक्ति समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होगा। विचारों को मूर्त रूप देने के लिए कर्म करने के लिए हमें दो हाथ प्रदान किए हैं जिनसे हम दान-पुण्य, वृक्षारोपण, नाम जप आदि कर सकते हैं। जन्म कुल में जन्म लेने से कोई यज्ञ, सम्मान नहीं पा सकता। समाज, देश की प्रगति करनी है तो अच्छे कर्म करना चाहिए जिनका सब लोग अनुसरण करके स्वयं वैसा बनने की कोशिश करें। देने वाले को देवता कहा जाता है। प्रभु ने वायु, पानी, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, आकाश ये सभी प्रदान किए हैं और ये सभी हमारे जीवन के आधार हैं। पांचों तत्व ही कर्म करने को प्रेरित करते हैं। इसलिए तो कहा गया है- नर हो न निराश, करो मन को सुकर्म, सुकरो कर्म करो।



मन को बूरो स्वभाव, इनके मते न चालिये।
ये जाणै बहुत उपाय, अनेक जतन कर पालिये।
अनेक जतन कर पालिये नै, झालिये गहि बांहि।
बाहर जातो आणिये नै, काया गढ़ के मांहि।
दश दिश चौकी राखिये नै, दुष्टि जाणे दाव।
निकस जावै पवन ज्यूं, मन को बूरो स्वभाव।
इनके मते न चालिये। 1।

एक शृंगी रिखराज, तप करंतो महाबलि।
मन दीन्ही सिर मांय, मोहनी रूप लियो छली।
मोहनी रूप लीयो छली नै, कियो अन्त अधीन।
गह आयो ले गांव में, दर्शन दुनिया दीन।
सेवा स्मरण हरि कथा, भूल गयो ऋषिराज।
रातो सुख संसार में, एक शृंगी ऋषिराज।
तप करंतो महाबलि। 2।

सुण मन का उपकार, रावण सूं रगड़ा करी।
छेद्या लछमण कुंवार, दश मस्तक लंकेशरी।
दश मस्तक लंकेशरी नै, छिन में दियो गुड़ाय।
मन का मारा मर गयो, महाबलि अंगराय।

भावार्थ- हरजी द्वारा वर्णित अपने ढंग की निराली ये दो साखियां हैं दोनों ही साखियों में मन की चंचलता तथा उससे होने वाले अपराधों के बारे में उदाहरण सहित समझाया है।

मन का स्वभाव प्रायः अच्छ नहीं होता है। अपना भला चाहने वाले से यही कहना है कि मन के पीछे कभी नहीं चलें। यह मन बहुत ही पैतरा बाजी जानता है। यह मन अपनी कलाओं द्वारा रीझाने का प्रयत्न करें तब अनेक उपायों द्वारा इसे रोक कर रखें। एक साधन जब कार्य न करे तो दूसरा साधन अपनाएं। मन की चंचलता अवश्य ही रोकिये, बाहर संसार में भटकते हुए मन की बांह पकड़कर स्थिर कीजिये। बाह्य विषयों से हटाकर मन को काया गढ़ के भीतर ही आत्मस्थ करें। दसों दरवाजों पर कड़ा पहरा रखना चाहिये यह दुष्ट मन बहुत ही तरीके जानता है, न जाने कब कौन सी चालाकी करके बाहर चला जाये। पवन की भांति अदृष्ट एवं वेगवान

रावण असुरा राजवी, लंका तणों दरबार।
रूठो रावण राम सूं, सुण मन का उपकार।
रावण सूं रगड़ा करी। 3।

मन के बहुत मरोड़, जाय रूठो इन्द्र आप सूं।
तिरिया चौसठ करोड़, फंसियो गोतम वाम सूं।
फंसियो गोतम वाम सूं नै, फंस र लियो सराप।
छांटो लागो सुरपति, अजहु अजो लग पाप।
मन अण होणी करै, गिणै न ठोर कुठोर।
मन सूं कदै न धीजिये, मन के बहुत मरोड़।
जाय रूठो इन्द्र वाम सूं। 4।

मन की क्या परतीत, ब्रह्मदेव सूं ना टल्यो।
लियो जगत गुरु जीत, रूप मोहणी कर छल्यो।
रूप मोहणी कर छल्यो नै, सही विसवा वीस।
सागी पुत्री सरस्वती नै, होय दीयो दुरशीश।
सुर नर मुनि जन देवता, सकल भया भय भीत।
जन हरजी की वीणती, मन की क्या परतीत।
ब्रह्मदेव सूं ना टल्यो। 5।

मन झट निकलकर चला जाता है। इसलिये मन के पीछे कभी न चलें। 1।

एक शृंगी ऋषिराज वन में तपस्या करने में लीन थे। मन ने सिर पर चोट मारी यानि बुद्धि को बदल दिया। मन ने ही मोहनी रूप धारण करके छल किया। बुद्धि को मोहित कर डाला। ऋषि को अपने अधीन करके नगर में ले आया। दुनिया का दर्शन हुआ संसार के विषय भोगों का अनुभव किया और संसार के सुखों में रच पच गया। हरि स्मरण सेवा, कथा, वेद पठन-पाठन सभी कुछ भूल गया। ऐसे मन ने शृंगी को नचाया था। 2।

मन राजा का कार्य कलाप आगे और भी देखिये। इसी मन ने ही तो रावण से रगड़ा किया था। इसी मन ने ही अपराध करवाये थे। जिस कारण से लक्ष्मण कुमार ने लंकाधीश रावण के दस मस्तक काटे थे। रावण अकेला ही नहीं, रावण का सम्पूर्ण परिवार मन के मारे ही मर गया था। मन की वजह से ही रावण राम से रूठ गया था।

जिसका परिणाम सर्वनाश ही हुआ था। यह मन के ही उपकार थे अन्यथा रावण स्वयं विद्वान था। उन्हें सीता हरण करने की आवश्यकता ही नहीं थी। जो मन महाबलि रावण से भी टक्कर ले सकता है, तो सामान्य जन की तो बात ही क्या कहें। 3।

मन के बहुत ही मरोड़ है यानि सदा ही टेढ़ा उल्टा ही चलता है। यह मन ही तो इन्द्र से रूठ गया था। जिस कारण से इन्द्र को भी नचा दिया था। जिस इन्द्र के यहां पर चौंसठ करोड़ स्त्रियां रहती हैं। किन्तु उन्हें छोड़कर गौतम पत्नी अहिल्या के यहां जाकर फंस गया था। गौतम ने इन्द्र को शाप दिया था। उसी शाप कलंक को अब तक नहीं धो सका है, यह मन राजा अनहोनी भी कर बैठता है। ठोर-कुठोर, उचित-अनुचित कुछ भी नहीं देखता। मन से कभी परास्त न होवें तथा मन के बहकावे

में आकर पीछे न चलें क्योंकि मन सरल साधु नहीं है। यह स्वयं इन्द्र से भी रूठ गया था और नाच नचा दिया था। 4।

मन का क्या विश्वास किया जावे। यह तो स्वयं ब्रह्माजी से भी नहीं टला। उन्हें भी नचा दिया। जगतगुरु को भी मन ने हरा दिया। मोहनी रूप धारण करके मन ने ही तो उपद्रव किया था। ब्रह्माजी मन के द्वारा छले गये। अपनी पुत्री सरस्वती के ऊपर भी कुदृष्टि डाल दी, यह मन की ही करतूत थी। एक क्षण के लिये ऐसा चमत्कार मन ने ब्रह्माजी को भी दिखा दिया था। इसी मन ने ही सुर, नर, मुनि, देवता, ऋषि आदि सभी को भयभीत कर दिया। हरजी विनती करते हुए कहते हैं कि मन का क्या विश्वास जो ब्रह्माजी से भी नहीं टला। 5।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

जम्भेश्वर नमः

सादर सबको नवण प्रणाम।
परनिन्दा के पाप सिर ना लहै ॥
क्षमा को नित निज हृदय धरो।
सर्वप्रथम निज अहंकार मारो ॥
परनिन्दा पापांसिरै जांभाजी कहै।
परनिन्दा कर भूल पाप मत लहै ॥
पाणी वाणी ईधन दूध लीजै छाण।
ओछी वाणी मर्यादा भंग है जाण ॥
सद्गुरु देव श्री जम्भेश्वर भगवान।
करते 29 धर्म नियम ही बखान ॥
क्षमा न धारै मनमुखी करै बखान।
निज सिर पाप वाणी नै बोलै छाण ॥
बात का ढंग है विचार कर बोलो।
पहले तोलो फिर क्या हो बोले ॥
व्यर्थ बिना सिर पैर की मारो ना।
सद्गुरु आज्ञा मनमुखी धारो ना ॥
सद्गुरु देव श्री जम्भेश्वर भगवान।
दिया है निन्दा ना करने का ज्ञान ॥

क्षमा हृदय धारो गुरु बतावौ जाण।
क्षमा होती जांभाणी की पहचान ॥
गलती का समाधान एक क्षमा है।
क्षमा रूप तप करो क्रोध मना है ॥
सद्गुरु जी श्री जम्भेश्वर भगवान।
जय हो परमेश्वर विष्णु भगवान ॥
तन की खूबसूरती तो एक भ्रम है।
खूबसूरत 'वाणी' भाव का धर्म है ॥
चाहे तो वाणी से दिल जीत लो।
चाहे तो निन्दा कर दिल चीर दो ॥
इंसान सब काँपी कर सकता है।
पर किस्मत व नसीब की नहीं ॥
उनतीस धर्म की आखड़ी, हिरदै धारै जोय।
जम्भराय ऐसे कहै, फेर जन्म नहीं होय ॥

-प्रेमसुख बिश्नोई

कक्षा-12, रा.आ.उ.मा. विद्यालय
जाम्बा की ढाणी (बाप)
मो. 6375750215

सद्गुरु श्री जम्भेश्वर जी की वाणी में योग

21 जून को हम सबने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 'योग के साथ रहें, घर पर रहें' थीम के साथ मनाया। भारत एवं यहां की संस्कृति सदियों से योग से जुड़ी है। बिश्नोई धर्म संस्थापक सद्गुरु श्री जाम्भोजी ने भी अपनी वाणी के अनेकों सबदों में गहराई से योग व साधना का बखूबी वर्णन किया है। गुरु जाम्भोजी ने 'योग' को जीवन जीने की युक्ति और मरने पर मुक्ति 'जीयां नै जुगति अर मूवा नै मुक्ति' का एक उत्तम साधन बताया है। श्रीजम्भवाणी में योग के बारे में उल्लेख से पूर्व योग के बारे में जान लेना आवश्यक है।

योग युज् धात से बना है, जिसका अर्थ होता है 'जोड़ना'। आत्मा और परमात्मा का मिलन योग कहलाता है। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए निज को जोड़ना योग है। विभिन्न विद्वानों व योगाचार्यों ने योग को अनेकों परिभाषाएं दी हैं।

योग की परिभाषाएं:

1. चित्त की वृत्तियों (रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द के लोभ में दौड़ने) को रोकना, चित्त की चंचलता को काबू में करना ही योग है।
2. आत्मा और परमात्मा का मिलन योग है।
3. 'योग कर्मसु कौशलम्' हर कार्य को कुशलता से सम्पन्न करना ही योग है।
4. योग जीवन का ज्ञान, जीवन का विज्ञान तथा जीवन जीने की कला, मानव जीवन के लक्ष्य परम आनन्द की प्राप्ति का साधन है।

योग से उचित लाभ प्राप्त करने के लिए उचित स्थान और समय का निर्धारण बहुत आवश्यक है। प्रतिदिन सुहावने मौसम में शौचादि से निवृत्त होकर खाली पेट सूर्योदय के समय करना बहुत लाभप्रद होता है। ब्रह्म मुहूर्त का समय प्राणायाम और ध्यान के लिए सर्वोत्तम समय होता है।

सद्गुरु जाम्भोजी ने की अमृतमयी वाणी में योग का बखान निम्न रूप में किया गया है। श्रीजम्भवाणी सबद संख्या 46 में गुरुजी कहते हैं कि-

जिंह जोगी के मन ही मुद्रा तन ही कंथाय पिंडै अग्नि शंभायो ॥

जिंह जोगी की सेवा की जैय तू 'ठै भव जळ पारि लंघावै ॥

अर्थात् जिस योगी का मन ही मुद्रा और तन ही कंथा है। जिसकी देह भीतर ज्ञान रूप योगाग्नि प्रज्वलित हो रही है, वही सही रूप में जोगी (योगी) है। ऐसे योगी की सेवा करनी चाहिए। वह प्रसन्न होने पर मनुष्य को भवसागर (संसार-सागर) से पार लंघा सकता है।

श्रीजम्भवाणी सबद संख्या 47 में आगे कहते हैं कि-

काया कंथा मन जो गूंटो सींगी सास उसासुं ।
मन मृग राखिले कीड़िले करसंण यूं म्हे भया उदासुं ।

अर्थात् काया ही कंथा है, श्वांसाच्छ्वास ही सींगी है। चंचल मन रूपी मृग को वश में रखकर सांसारिक आकर्षणों में पड़ने से रोक कर उनसे उदासीन हैं।

श्रीजम्भवाणी सबद संख्या 49 में कहते हैं कि-

अवधू अजरा जार ले अमरा राखले, राखले बिन्द
की धारणां ॥

पताळ का पांणी आकाश को चढ़ायले, भेंट ले गुरु
का दरसणां ॥

अर्थात् हे अवधूत! छः अजर शत्रुओं काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार और मत्सर को वश में कर लें। ये योग के संयम (ध्यान, धारणा और समाधि का सामूहिक नाम है) से ध्यान करके जीवात्मा (बिन्द) को पहचानो। इन छः वृत्तियों को पाताल का पाणी कहा गया है। मूलाधार चक्र में सूर्य अवस्थित है। सहस्रार (चंद्रमा) से जो अमृतरस टपकता है उसे मूलाधार चक्र में स्थित सूर्य सोख लेता है। अतः पाताळ का पाणी सातों चक्र पार कर आकाश में चढ़ लें यानि इन वृत्तियों को ऊर्ध्वमुख करना, विषय-वासनाओं के प्रवाह को मोड़कर या रूपान्तरित कर आत्मा की ओर उन्मुख करना ही 'पाताळ' के पाणी को 'आकाश' में चढ़ाना है। ऐसा ज्ञान, ध्यान, विष्णु नाम स्मरण, सत्कर्म, समता-भाव इत्यादि के निरंतर अभ्यास से ही संभव है। साधक को हृदय में ही आत्मदर्शन होता है। आत्मा ही परमात्मा है। परमात्मा सबका गुरु है। योग के द्वारा आत्मा की परमात्मा से भेंट होगी। वही भेंट (साक्षात्कार) ही गुरु के दर्शन है।

श्रीजम्भवाणी सबद संख्या 51 में कहते हैं कि-

सप्त पताळे भुंय अंतरय अंतरि राखिलो अटळ टळूं ।

अलहा अलेख अडाळ अजूनी सिंभू।

अर्थात् इस मानव शरीर में मूलाधार चक्र से सहस्रार चक्र तक सात चक्र हैं। उनकी सिद्धि से जो मानव मौत के वश में है, अमर हो जाता है। उसकी मौत टळ जाती है। परमतत्त्व अज्ञेय स्वस्वरूप में स्थित, नित्य स्वयंभू है।

पवण अधारी पिण्ड ज लूं॥ अर्थात् प्राणवायु को वश में करके उसके सहारे आत्म तत्त्व को इस शरीर में ही प्राप्त किया जा सकता है।

सबद संख्या 78 में कहा गया है कि-

नवै पौळि नवै दरवाजा, अहूठ कोडि रू राय जड़ी।

रे बन माळी कांयौ सींचौ ईह बाड़ी तो भेळ पड़सी ॥

अर्थात् मानव शरीर (काया) रूपी बाड़ी (बगीचे) के नौ दरवाजे (पौळि) हैं और यह तीन करोड़ पचास लाख रोमावली से जुड़ी हुई है अर्थात् इस शरीर रूपी बगीचे पर साढ़े तीन करोड़ रोमावली है। हे वनमाळी! हे मन! इस बाड़ी को क्यों सींचते हो। यह बाड़ी तो कभी भी भिळ (उजड़) सकती है। काया के ठीक रहते ही तत्त्व प्राप्ति का उपाय करो।

सबद संख्या 79 में कहा गया है-

बारा पौळि, नवै दर साझी, राय अथरगढ़ थीरू।

इस गढ़ि कोई थिर न रहिबाय निहंचौ चालि गया गुर पीरूं।

अर्थात् नौ दरवाजे वाले नाशवान काया रूपी गढ़ में-हृदय में स्थित बारह दलवाला अनाहत चक्र है, उसी में इस काया (गढ़) के राजा जीवात्मा रूप परमात्मा विद्यमान है। यह निश्चित है कि इस गढ़ में कोई भी तत्त्व स्थिर नहीं रह सकता और न ही यह शरीर ही स्थिर रहने वाला है। चाहे कोई कैसा भी और किसी कोटि का है। गुरु हो या पीर, सभी को इसे छोड़कर जाना ही पड़ता है। अतः साधना (साझी), श्री विष्णु नाम-स्मरण, चिन्तन-मनन, ज्ञान-ध्यान इत्यादि के द्वारा आत्म तत्त्व प्राप्ति का उपाय करें।

सबद संख्या-88 में कहा गया है-

गोरख लो गोपाल लो लाल गुवाळ लो लाल लीलंग दैवें।

नवखण्ड प्रथमी प्रगटियौय कोई बिरलो जाणंत

म्हारा आदि मूळ का भेवूं।

अर्थात् इन्द्रियों को वश में रखो, इन्द्रियों को विषयों की ओर जाने से रोको। हे प्रिय! ध्यान से इन्द्रियजीत

बनो। हे भाई! लीला देव परमात्मा (ईश्वर) अनेक रूपों में नवखण्डी पृथ्वी के कण-कण में व्याप्त है। हमारी आदि मूल का रहस्य कोई-कोई बिरला इन्द्रियजीत और ज्ञानी भक्त व्यक्ति ही जानते हैं।

सबद संख्या-89 में कहा गया है कि-

उरधक चंदा निरधक सुरू छै लख तारा नैड़ा न दूरूं।

नव लख चंदा नव लख सुरू नव लख धं'धूकारू।

तांह परै रै जो परि हुंतीय तिं'हका करूं विचारूं ॥

अर्थात् शरीर में चन्द्रमा ऊपर (गगनमण्डल में) है और सूर्य नीचे यानि मूलाधार चक्र पर है। सूर्य और चन्द्रमा के मध्य-आसपास में क्रमशः 6 चक्र हैं। शरीर में नौ द्वार हैं, गगनमण्डल स्थित चन्द्रमा का अमृत-मनुष्य की जीवनी शक्ति, इन द्वारों के माध्यम से शनैः शनैः (धीरे धीरे) नष्ट होती जाती है। आमतौर पर नौ द्वारों के खुला रहने के कारण 'धंधूकार' (सहस्रार, गगनमण्डल) में स्थित चन्द्रमा से होने वाला अमृतस्राव मूलाधारस्थ सूर्य द्वारा नष्ट हो जाता है तथा धीरे-धीरे जरा और मृत्यु आती है। इससे परे कुण्डलिनी द्वारा निरंतर इस अमृत के पान किए जाने की स्थिति है। मैं उसकी बात कहता हूँ। इसके नौ द्वारों को बंद कर, दसवां द्वार 'ब्रह्मरन्ध्र' खोलो। कुण्डलिनी के ब्रह्मरन्ध्र में पहुंचने पर योगी तदाकार स्थिति में हो जाता है और जीव शिव स्वरूप हो जाता है। यही जीवनमुक्ति की स्थिति है।

सबद संख्या-108 में कहा गया है-

हाळीलो भल पाळीलो सिद्ध पाळीलोय खेत खडै सून्य रानूं।

चंद सूरि दोग बैल रचीलो गंग जमन दोग रासी।

सत संतोष दोग बीज बीजीलो खेती खड़ी अकासी।

चेतन राक पहरै बैठा प्रघा खेती न चरि जाई।

म्हेई अवगति केकन्यांनी साच सिध पाईलो ॥

अर्थात् मानव किसान रूप में है। हे मनुष्य, शरीर रूपी खेत में खेती करो और भली प्रकार देखभाल करो। हे सिद्ध! निज गगनमण्डल में खेती करो और भली प्रकार देखभाल करने से तत्त्व प्राप्ति होगी। सहस्रारस्थ चन्द्रमा और मूलाधारस्थ सूर्य दो बैल हैं, इड़ा (गंगा) और पिंगला (यमुना) दो नाडियां उनकी रास (रस्सी) है। दोनों बैलों (सूर्य-चन्द्रमा) का संयोग करा के (सुषुम्ना से) सत्य और संतोष के बीज बीजने हैं, जिससे

गगनमण्डल में खेती फलीभूत हो। शरीर की स्वामी जीवात्मा नित्य चेतन स्वरूप हैं। उसके पहरे पर बैठा मन रूपी मृग (मन की विषय-वासनाएं, सुकृत्य की खेती को चर न जाए)। अतः इन्हें वश में करें।

इस प्रकार श्रीजम्भवाणी में बहुत ही गहराई के साथ योग का विवरण दिया गया है।

तीन गुणों से न्यारा रहै, योगी सोई परमगति लहै।
योग सभी से ऊंचा जाण, तप ज्ञान और यज्ञ बखान ॥
योग युक्ति को जाने आप, योग किए मिटै संताप।
योग सर्वव्याधि को हरता, योग सकल सृष्टि का करता ॥
योग ही तीर्थ फल उपजावै, योग किये व्रत नेम समावै।
योग कर्म सब देवी-देवा, योग बिना नहीं पावत मेवा ॥
योग सकल साधन की सार, योग किए मिटै अंधकार।
योग विष्णु ने भानू सिखाया, गूढ़ रहस्य यही है यहाँ पाया ॥

संदर्भ ग्रन्थः

1. योग का रहस्य – अज्ञात।
2. योग शिक्षा और चरित निर्माण – डॉ. सीता रानी, डॉ. भंवर सिंह
3. जम्भसागर-आचार्य कृष्णानन्द।
4. श्री जम्भवाणी: टीका – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी।
5. पोथो ग्रन्थ ज्ञान-आचार्य कृष्णानन्द।
6. साहबराम राहड़ कृत जम्भसार (दो भाग)- आचार्य कृष्णानन्द

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल 'बिश्नोई'

संस्थापक सदस्य, जाम्भाणी साहित्य अकादमी

313, सैक्टर 14, हिसार 125001 (हरि.)

मो.: 9518139200, 9467694029

बाल कोना

रतन कटोरा (दादी गी बाता)

एक था ठग। उसका काम था देश-परदेश घूमते रहना। इस भ्रमणवृत्ति में उसे हमेशा नए-नए आदमी मिलते। वह नए-नए स्थान देखता। नई से नई बातें सुनने को मिलतीं। एक बार उसने किसी सेठ को प्रभावित किया तो सेठ ने उसे एक रतन जड़ित कटोरा देते हुए कहा- 'आप इसी में भोजन किया करना'।

उसका रतनजड़ा कटोरा देखकर, लोग उसे कौतुक से देखते थे। अब वह जहां भी जाता, वहां के लिए नया व्यक्ति होता था।

वह स्वयं भी बुद्धिमान था तथा नए स्थानों की नई-नई बातें सुन उसने सोचा- 'क्यों न मैं ये नई बातें सुनाने वाला सौदागर बन जाऊं'। यह निश्चय कर वह नए स्थान पर पहुंचकर शाम के वक्त इकट्ठी भीड़ से कहा- 'मैं संसार की वह हर बात जानता हूं जिसे तुम नहीं जानते हो। विश्वास न हो तो कोई भी नई बात सुनाकर देखो। यदि मैं अपनी बात सिद्ध न कर सका तो यह रतन कटोरा तुम्हें दे दूंगा।

गांव के लोग उसे नई से नई बातें सुनाते, पर वह

हर बार अपने बुद्धि बल से पहले सुनी हुई बात सिद्ध करता और अपनी विजय पर गर्व करता हुआ आगे से आगे चलता जाता। इस तरह उसे अभिमान हो गया कि उस जैसा बुद्धिमान कोई हो ही नहीं सकता। एक बार पुनः वह किसी नए स्थान गया और वहां अपनी बात दोहराई। तभी एक युवक आया और उसने कहा- 'सब बातें आपकी सुनी- सुनाई होगी, पर मेरी सुनकर बताना कि यह पहले कभी सुनी हुई है या नहीं? वह बोला- 'तुम्हारे पिताजी ने मेरे पिता से एक लाख स्वर्ण मुद्रा उधार ली थी। ब्याज सहित चुकाने का वादा भी किया था। बोलो यह बात नई है या पुरानी? अगर पुरानी है तो ब्याज सहित चुका हो। नई हैं तो रतन कटोरा मेरा। ठग को कोई उत्तर न सुझा, उसे पराजित होकर रतन कटोरा गवाकर आगे चल देना पड़ा।

-बिन्दु

वरिष्ठ अध्यापिका

गाँव-6 ईईए,

जिला-श्री गंगानगर (राज.)

Recent Pandemics, Environmental Consequences, Inter-relationship and Solutions in Jambhani Philosophy

Pandemics in general are not merely serious public health concern, rather these trigger disastrous socio-economic and political crises in the infected countries. The COVID-19 pandemic is considered as the most crucial global health calamity of the century and the greatest challenge that the human kind faced since the 2nd World War. COVID-19, apart from becoming the greatest threat to global public health of the century, is being considered as an indicator of inequity and deficiency of social advancement. As is implied in the name COVID-19, 'CO' stands for 'corona,' 'VI' for 'virus,' and 'D' for disease, and 19 represents the year of its occurrence. Coronavirus is a single stranded RNA virus with a diameter ranging from 80 to 120 nm. The first modern COVID-19 pandemic was reported in December 2019, in Wuhan, Hubei province, China and most initial cases were related to source infection from a seafood wholesale market. Since then, the disease rapidly circled the globe and has eventually affected every continent except Antarctica. It has been categorized as a pandemic by the World Health Organization (World Health Organization, 2020). International Committee on Taxonomy of Viruses; named the virus as severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2). According to WHO, in 2002–2003, more than 8000 people suffered and 774 died of a coronavirus, called SARS. In 2012, MERS-CoV pandemic broke out infecting more than 2494 persons and killing over 858 lives worldwide according to reports of World Health Organization, 2004, World Health Organization, 2013 respectively. Coronaviruses belong to a large diverse family of viruses. All the previously discussed coronaviruses responsible for worldwide spread of pandemics, namely SARS, MERS-CoV and SARS-CoV-2 (COVID-19).

Apart from COVID-19, the human civilization has witnessed at least four pandemics in the current century, e.g. H1N1 in 2009 (Swine influenza/swine flu). This virus is a combination of viruses from pigs, birds and humans that caused disease in humans. Polio Virus in 2014 (Polio was known to be an infectious disease since Karl Landsteiner and Erwin Popper's famous experiments in 1908 showed that polio could be transmitted between animals. It is transmitted from human to human, typically through drinking water contaminated with faeces containing the virus), Ebola 2014 (out broke in West Africa in 2014. Scientists do not know where Ebola virus comes from. Based on

similar viruses, they believed EVD is an animal-borne, with bats or nonhuman primates being the most likely source. Infected animals carrying the virus can transmit it to other animals, like apes, monkeys, duikers and humans), Zika (2016) was first discovered in 1947 and was named after the Zika Forest in Uganda. In 1952, the first human case of Zika was detected and since then, outbreaks of Zika have been reported in tropical Africa, Southeast Asia, and the Pacific Islands.

All these diseases would have transmitted by two ways from such animals to humans i.e. either humans have destroyed or forcefully changed their habitat for human need or they've consumed these animals like in Wuhan from where this viral disease started spreading in humans was a wholesale market where fishes and bats were sold as consumables and it is suspected that bats would probably be the cause of spread of this virus as this virus belongs from coronaviridae family of viruses which further has two sub family Letovirinae and Orthocoronavirinae, the members of the latter are known as coronaviruses which are found in bats and harm humans. As per WHO the evidence from surveys and targeted studies so far have shown that the coronaviruses most highly related to SARS-CoV-2 are found in bats and pangolins, suggesting that these mammals may be the reservoir of the virus that causes COVID-19.

Subsequently COVID-19 outbreak has been declared as the sixth public health emergency of international concern on 30 Jan 2020 by the WHO. These worldwide outbreaks triggered a large number of fatalities, morbidities, and cost billions of dollars. Compared to other diseases and their respective burdens, COVID-19 is likely to cause as much or greater human suffering than other contagious diseases in the whole world. In addition, other global environmental changes such as soil degradation, ozone layer depletion, pollution, and urbanization, changing environment creates an indisputable threat to our planet and human health. Global warming has its roots in industrial development, with the huge release of CO₂ during the industrial revolution and beyond, finally allowing the greenhouse effect to take place. To some extent COVID-19 outbreak may be considered as an indirect consequence of global environmental changes. As these changes would have decreased immunity level of human beings a lot of pollution would have reduced the capacity and efficiency of lungs and also have caused respiratory diseases

due to which it had become easy for coronavirus to attack and kill humans. Besides its upsetting effects on human life, the novel coronavirus disease (COVID-19) has the potential to significantly slowdown the economy not only of China, USA, or India, but also of the world as a whole. Therefore, healthcare personnel, government and the public in general need to show solidarity and fight shoulder to shoulder for prevention and containment of the pandemic. At present, our main focus is to highlight the impacts of COVID-19 on environment and society, and attempts are being made to point out the preventive measures for minimizing the risk factors. But some major impacts are like loss of human lives, massive increase in production of ayurvedic products indirectly would put an impact on environment. The intensification of single-use products and panic buying have increased production and consumption, hence pushing back our efforts towards reducing plastic pollution.

Due to the stockpiling of gloves, gowns, masks and other protective clothing and equipment, there appears to be a waste emergency due to the unusual production of waste from both households and health facilities. Failure to properly manage the waste generated from health facilities and households may escalate the spread of COVID-19 via secondary transmission. The potential rampant dumping, open burning, cremation and incineration could affect air quality and health outcomes due to the exposure to toxins as per WHO 2020 (Report on Water, sanitation, hygiene, and waste management for SARS-CoV-2, the virus that causes COVID-19: 29 July 2020).

The unprecedented use of masks to reduce the exposure to COVID-19 is reported to have increased its production, hence increasing the global sales by US\$166 billion (UN2020). Due to the current role of protective equipment like disposable masks and gloves, the COVID-19 pandemic appears to have thwarted efforts to decline plastic pollution. To reduce the spread of COVID-19, the World Health Organization projects a monthly global expenditure of 1.6 million plastic-based protective goggles, 76 million plastic-based examination masks and 89 million plastic-based medical masks. The daily production of plastic-based masks in February, 2020 increased by 116 million (about 12 times higher than January) in China (W4C 2020). There are several reports of enormous plastic waste soaring from 1500 to 6300 tonnes daily in Thailand, owing to food products delivered to homes, whereas the UK saw 300% rise in illegal waste disposal during the lockdown period (Weforum, 2020). This is the data of 2020 would

have increased to about double till now. India is facing surge in managing covid 19 medical waste while guidelines have been issued by Central Pollution Control Board (CPCB). In India due to holy practices and devastating second wave of the pandemic in recent weeks, it has recorded more than 25 million cases and 275,000 deaths, but experts say the real death toll is 4 to 6 times higher. The bodies on the river banks, taken together with funeral pyres burning round-the-clock and cremation grounds running out of space, tell the story of a death toll unseen and unacknowledged in official data.

All these pandemics and other deteriorating conditions of environment would have been easily prevented by following Jambhani Philosophy where the solutions are given centuries ago.

मांस न दूर ही त्यागे।

That is, for the welfare of human being, for good health, to avoid killing of innocent creatures, one should eat the best products made from raw materials like grain, fruit, milk, curd, ghee etc. and completely avoid the meat. If this thing would be followed or would have been followed than if this virus originated from bats would not have been transmitted to human beings.

जीव दया पालणी, क्षमा, दया हिरदै धरो गुरु बतायो जाण।

We should have an attitude of kindness, forgiveness and mercy towards innocent creatures both plants and animals as well as humans these three things should be part of our character. And most importantly again we should not harm animals and green plants or humans. If people develop which resulted an attitude for nature then they would not harm nature so badly many species to an edge of extinction and forests would not have been cleaned up like this. If we follow such policies of sustainable development we can save mother nature and ourselves from such calamities.

रूख लीला नहीं घावे, हरित वृक्षं नहन्त्वयम्

In Brahma Samhita and in Shabdhwani of Guru Jambheshwar it has been said that green trees should not be pruned because even in trees there is a life and all living souls have the same pain and all living souls have a divine being. For example Guru Jambheshwar preached humans to imagine the pain of plants and animals;

सूल चुभीजै करक दुहेली। तो है है जायो जीव न घाई।

“If a the thorn is in the body of a human being, then there is unbearable pain. Similarly when you cut off the head of any human being, then how much pain will be caused to him.” Therefore, we should not think of killing any creature.

Also Lord Krishna in Bhagwad Geeta says

that, "any living body is the eternal part of me, i.e. I am in every living being." Which indicates that we should not harm any living being for our benefit.

ममै वांशोजीव लोके जीवभूतः सनातनः ।

As a warning Guru Jambheshwar tells in his Shabdhwani

जीवां उपर जोर करीजै । अंतकाल होयसी भारूँ ।

You will definitely get the very terrible result of killing the innocent creatures. As we are experiencing right now the pandemic which has its link with those creatures whom we've killed for our greed. He also gives solution that we should find a middle way out instead of blindly destroying nature by just finding food without killing any living creatures eating milk and milk products, grains, etc. he says

इहि हेडै हर दिन की रोजी तो इसही रोजी सारो ।

आप खुदायबंद लेखो मांगै । रे बिनही गुन्है जीव क्यूं मारो ।

"We should do the work to earn livelihood in which no innocent creatures have to be killed and lead a happy life." And if we don't do so either we will get back consequences like such pandemics or if not also then after death he says "After leaving the body, God will ask the decision of sinful virtue, true untrue, what answer will you give there if you've killed animals or consumed them or destroyed their habitat by doing deforestation for your luxuries by destroying their habitat leading them to extinction?" and then if we blame God for our misdeeds He would not be able to help.

We all know that every action has an equal and opposite reaction. If we do bad we would get bad, if we do good we would get good Jambhani Shabdhwani also says

विष्णु न दोष किसो रे प्राणी । तेरी करणी का उपकारूँ ।

Shri Guru Jambheshwar Ji here says that there is no fault of his in this, as man does deeds, good or bad gets the same result.

Humans harmed environment and now environment is restoring itself, but humans are somewhere getting harmed. By this pandemic and sudden pause on economic and industrial expansion environment had become a bit better than before air quality at many places has improved deforestation rates reduced, etc.

To be safe and secure from any disease and even this pandemic Jambhani Philosophy has solutions provided hundreds of year ago, but people are either unaware or do not follow them then they get affected by it.

करे रसोई हाथ सूं आन सूपला न लावै ।

Make your own food and do not come in

contact with any other person till the food is made or eaten. If we would have followed this rule out of 29 we would be safe enough from many of the diseases even from COVID this suggests us to make food by own and without coming in contact with anyone until and unless we finish up the meal.

पानी वाणी ईंधणी दूधन लिजै छाण ।

Rule 6,7 and 8 suggests that four things specially should be purified or properly cleaned before using them are water, milk, fuel and the words which we speak even those should not hurt or harm someone. If water and milk like products are purified and then diseases like Ebola, etc. would not have spread so much.

शुचि (शौच)

It is said in context of personal hygiene we should be clean internally as well as externally i.e external hygiene means a clean physical body while internal means a healthy and happy brain and heart and also clean by being truthful.

सेरा करो स्नान ।

A part of personal hygiene is taking bath in early morning, which would make a person mentally and physically healthy.

Such small rules and teachings would play an important role in overall improvement in environmental conditions across the world and well being of human beings and other animals.

Sources-

- 29 Rules and Bishnoi Shabdhwani and their interpretations from Book Bishnoi Dharm Prakash (Publication Bishnoi Printing Press) (Rule No.1, 2, 6, 7, 8, 10, 11, 16, 17, 26, 29)
- Shabdhwani by Jambhani Sahitya Academy. (Shabd No. 8, 9, 11, 13)
- Bhagwad Geeta (Adhyay 15)
<https://www.who.int/health-topics/coronavirus/origins-of-the-virus>
- Report on Water, sanitation, hygiene, and waste management for SARS-CoV-2, the virus that causes COVID-19: 29 July 2020 (<https://www.who.int/publications/i/item/WHO-2019-nCoV-IPC-WASH-2020.4>)
- ब्रह्मसंहिता अध्याय 3 मं. 10
<https://www.bbc.com/news/world-asia-india-57154564>
- <https://www.thehindu.com/news/national/coronavirus-india-witnesses-surge-in-covid-19-related-biomedical-waste/article34563675.ece>
- <https://cpcb.nic.in/covid-waste-management/>

-Laxman Singh Vishnoi

'Ishavasyam' 124, Shyam Nagar, 2nd Yojna Behind Pal Balaji Temple, Jodhpur (342008)

Mob.- 9521772961

1857 की क्रांति और प्रत्यक्षदर्शी संत साहबराम जी

आजादी के 75 वर्ष होने के उपलक्ष्य में आगामी 15 अगस्त 2023 तक देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। राष्ट्र फिर से याद कर रहा है मां भारती के उन वीर सपूतों को जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मातृभूमि को दासता से मुक्त करवाने के प्रयासों में लगा दिया। ऐसे असंख्य वीरों को 'वतन पर मर मिटने वालों की राह में निशाँ भी बाकी नहीं मिला'।

जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' जी की यह पंक्तियाँ-
**शहीदों की चिताओं पर लगेगे हर बरस मेले,
वतन पर मर मिटने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।**

भी शायद इनके त्याग, समर्पण के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन में बौनी साबित होती है।

भारत सरकार ने दांडी यात्रा प्रारंभ दिवस 12 मार्च से कार्यक्रमों की व्यापक श्रृंखला का औपचारिक आगाज किया है। इस दौरान विशेष बल दिया जायेगा कि इस कालावधि में उन सपूतों के त्याग और बलिदानों को रेखांकित किया जाए, व्यापक प्रकाश में लाया जाए। जिनके आजादी के लिए किए गए अथक प्रयास मुख्यधारा के आजादी आंदोलन के नेताओं की तरह जनजीवन पर अपनी छाप नहीं छोड़ पाए।

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी की अमर कविता 'कलम आज उनकी जय बोल' से उन महान सपूतों को अपनी भावांजलि प्रस्तुत करते हुए इस आशय के साथ इस लेख द्वारा कुछ जानकारी भारतीय समाज के अभिन्न अंगभूत घटक बिश्नोई समाज के वीरों के स्तुत्य प्रयास प्रकाश में लाकर सुधीजनों को आगे शोध-अनुसंधान हेतु प्रेरित करने का ही यह एक अत्यंत विनम्र और लघु प्रयास है। हालांकि इस क्षेत्र में मेरा अध्ययन अत्यंत अल्प है, पर फिर भी कहा जा सकता है कि समाज के इस महान क्रांतिकारी वर्ग द्वारा आजादी के लिए किए गए प्रयासों का अभिलेखीकरण नहीं हो पाया है।

जला अस्थियां बारी-बारी,

**चटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन,
मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएं,
उगल रही सौ लपट दिखाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी,
धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
अंधा चकाचौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के,
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।**

-रामधारी सिंह दिनकर

संत साहबराम जी राहड़ जिन्होंने अपने लौकिक जीवन के कुछ वर्ष लान्धड़ी, जिला हिसार में भी व्यतीत किये, महान बिश्नोई संत कवि थे जो अट्टारह सौ सत्तावन की क्रांति या प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्यक्षदर्शी (चश्मदीद) थे, ने अपनी महान कृति जंभसार में विक्रमी संवत् 1914 अर्थात् सन् 1857 ई. के गदर का आँखों देखा वर्णन किया है -

**अब एक कथा अजब एह गावौ। विस्नोइयां का धरम बतावौ।
चवदैं साल वैसाख सुदी मैं। बरत्यों समें जग सकल बुधी मैं।
डिग्यौ राज भाद्र अंगरेजा। डिगतां कछुवन लागी जेजा।
अधरम राज करत है जब ही। देत दंड परमेसुर तब ही।**

अंगरेजा कोसल एक करी। एक घरम मन अँछ्यां धरी।
जितनी फोजा हिंद कहावै। कूस तान करो मेरे मन भावे।
बड़े लाट ऐसे कहै भाख्या। ठीक बात ऐसे कहि आख्या।
सब अंगरेजा के मन भाई। आटै में चरबी मिलवाई।
कारतूस के चरबी पासा। खांड घृत में चरबी भाषा।
पूरबीया कूँ द्रस्यौ पापा। फिरा फोज सब आप हि आपा।
मिरट आद लाहोर विचालै। फिरी फोज अज्ञा नहि पालै।
कियो सांम नूँ पूरब फिरी। जाहां ताहां जूध मच्चौ तिहि घरी।
डाक बंध कर दीनी जबही। तूटी नाड़ जीवन ही कब ही।
नाड़ समांन डाक ईह जांगौ। देह समान राज इह ठाणौ।
नाड़ गये देही मर जावै। डाक बंध किये राज नसावै।
डाक बंध तबही उनकरी। जिन तिन देशा गदर परी।
केई अंग्रेज गये ते है मारे। राज गया विभरे नर सारे।
सबल निबल लूअण लागे। चोर लुटेरे जाहा तांहा जागे।
हाहाकर भयो जग सारे। ऐक ऐक नै जाहां ताहां मारे।
मच्चौ गदर अंगरेज मराने। रहे खए विज लेय पराने।
मिरअ मार हांसी आय भारी। हंसार गदर मच्चो बहु भारी।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि गदर के अनेकानेक राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक कारणों के साथ-साथ धार्मिक कारण भी इस क्रांति का प्रमुख और तात्कालिक कारण थे।

गौमाता के प्रति श्रद्धा और रक्षा का भाव भारतीय जनता के लिए सदैव सर्वोपरि रहा है। गांधीजी भी कहते थे कि उनके लिए गौ रक्षा का प्रश्न उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की आजादी का।

आज जब देश अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ को 'अमृत-महोत्सव' के रूप में मनाने की तैयारी कर रहा है तो बिश्नोई बंधु यह गौरव अनुभूति कर सकते हैं, कि हमारे पूर्वज भी आजादी के इस महायज्ञ में अपनी आहुति देने से नहीं चूके थे।

1857 की क्रांति में भारतीय हिंदुओं और मुसलमानों को लगा कि अंग्रेज उन्हें धर्म से च्युत कर रहे हैं। फलस्वरूप दोनों ही वर्ग भड़क उठे। धर्म रक्षा भारतीयों के लिए राष्ट्र रक्षा का पर्याय रहा है। जीवमात्र की रक्षा और संरक्षण बिश्नोई पंथियों के लिए सर्वोपरि धर्म (कर्तव्य) रहा है।

संत साहबराम जी के जम्भसार में ऐसे अनेक दृष्टान्त मिलते हैं जैसे सीसवाल गाँव में एक अंग्रेज अधिकारी हिरणों का शिकार करने जाता है। गाँव के बिश्नोईजन उसे शिकार करने से रोकते हैं, पर वह नहीं मानता और हिरणों पर गोली चला देता है, तब तारोजी नाम का एक बिश्नोई उसे लाठियों से पीटकर भगा देता है, जिसके कारण बाद में तारोजी को सरकारी अधिकारी पर हाथ उठाने की सात माह कैद की सजा मिलती है। जब बड़ी-बड़ी रियासतों के मालिक अंग्रेजी दरबार में हाथ जोड़े खड़े रहते थे, तब भी बिश्नोई इन निरपराध जीवों की रक्षा के लिये इन अंग्रेजों से भिड़ पड़ते थे। (जाम्भाणी साहित्य साधक संत साहबराम-विनोद 'जम्भदास')

यह था गौरवशाली बिश्नोई परम्परा का स्वाभिमान और उसे अपनी कथा-वार्ताओं में पुनः स्मरण दिलाकर नित्य नवीन रखने वाले संत साहबराम जी जैसे धर्म प्रचारक, जिन्होंने स्वधर्म रक्षा को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया। 'स्वराज के स्वप्न दृष्टा संत' साहबराम जी का जीवनवृत्त निश्चित ही सदैव आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

सन् 1857 से शुरू हुए भारतीय स्वाधीनता संग्राम जो 1947 में पूर्णाहुति को प्राप्त हुआ था। उसमें अनेक साधु-संतों ने भी अपनी आहुतियां प्रदान की थी या यूँ कहें कि अधिसंख्या में साधु-संत, परिव्राजक, ब्रह्मचारी, बैरागी, धर्म प्रचारक आदि लोग स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़े थे। आज हम जिस स्वराज का सुख भोग रहे हैं यह उनकी तपस्या और बलिदान का ही फल है। जिसमें एक नाम संत साहबराम जी का भी है। दुर्भाग्य से इनका नाम प्रकाश में नहीं आया। आज जरूरत है उस आजादी आन्दोलन के इतिहास के धूल-धूसरित दस्तावेजों को खंगालने की, कहीं कोने में पड़े ऐसे भूले-बिसरे स्वाधीनता प्रेमी मनीषियों की जीवन गाथाओं को प्रकट करने की।

अन्य भारतीयों कि तरह विदेशी, विधर्मी अंग्रेजी राज से उत्पन्न विषम परिस्थितियों ने बिश्नोई समाज को बहुत असहज कर दिया। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर

संध्या वंदन, सूर्योदय पर हवन, अनाश्रित जीवों के लिये चारा, चुग्गा-पानी की व्यवस्था, खेती-गोपालन का कार्य दिनभर करने के बाद रात्रि में जाम्बा-जागरण और उसके बाद भगवद्स्मरण करते हुए सो जाना, इन सब कार्यों में भी समय बच जाए तो विष्णु का जप करना यही बिश्नोइयों की दिनचर्या रही, यही बात बिश्नोई परम्परा में पीढ़ी दर पीढ़ी सिखाई और अपनाई गई और इसी का प्रचार अपने प्रवचनों में उस समय संत श्री साहबराम जी कर रहे थे। पर जब चारों तरफ लूटमार मची हो, गौहत्या हो रही हो, लोग मारे जा रहे हो, राज्य का भय आततायियों में समाप्त हो गया हो, तो उस समय संत साहबराम जी ने अद्भुत नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया, समाज को जुल्म के विरुद्ध खड़ा किया। लोगों को आश्वासन दिया कि भगवान सत्य का साथ देते हैं, अंत में विजय धर्म, न्याय और सत्य की ही होती है-

**जीत गए बिश्नोई भलेऊ, देश देश में चर्चा चलेऊ।
जम्भ गुरु प्रतिज्ञा राखी, गुर अज्ञा सूं साहब भाखी।
उनके हाण कदे नहीं आवैं, जो गुण जम्भ गुरु का गावैं।
जीवां लीये जुध इन कीन्हा, जम्भगुरु तब दस्न दीन्हा।**
(जम्भसार, 2/24/43)

जिनके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था, ऐसे अंग्रेजी साम्राज्य को उनके क्रूर, कुटिल, अनीतिपूर्ण कार्यों के लिये संत साहबराम जी ने फटकार लगाई तथा जम्भसार में उस घटना का वर्णन किया जब चर्बी लगे कारतूसों के कारण फौज बागी हो गई थी। संत श्री कहते हैं कारतूसों में चर्बी लगाकर सिपाहियों को उनके धर्म से भ्रष्ट करने का षड्यंत्र अंग्रेजों ने रचा था, जिसका डंड परमात्मा ने अंग्रेजों को दिया था-

**अधरम राज करत है जब ही, देत डंड प्रमेसुर तबही।
सब अंगरेजा कै मन भाई, आटै में चरबी मिलवाई।
कारतूस के चरबी पासा, खांड घृत में चरबी भाशा
पूरबीया कूं दस्यो पापा, फिरा फोज सब आप हि आपा।
मेरठ आव लाहोर विचालै, फिरी फोज अज्ञा नहीं पालै।**
(जम्भसार, 2/24/17)

धर्म रक्षा, राष्ट्र रक्षा के लिए छिड़ा यह संग्राम भले ही स्वतंत्रता विहान को नहीं सजा पाया हो, परन्तु अंग्रेजी साम्राज्य की चूलों हिला कर रख दी थी।

संत साहबराम जी इसका उल्लेख करते हुए लिखते हैं-

**कई अंग्रेज गए है मारे, राज गया बिचरे तर सारे।
सवल निवल कूं लूटण लागे, चोर लुटेरे जहां तहां जागे।
हाहाकार भयो जग सारे, एक एक नै जहां तहां मारे।**

समग्र दृष्टि से देखा जाए तो 1857 की लड़ाई भारतीय जनता द्वारा लड़ा गया मुक्ति युद्ध ही सिद्ध होता है। इस युद्ध में भारतीय जनता अपने बीच के धर्मगत, जातिगत तथा लिंगगत सभी भेद मिटाकर एकजुट होकर ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लड़ी थी।

1857 की मुक्ति लड़ाई को हर वर्ग, हर वर्ण, हर धर्म, संप्रदाय के लोगों ने हर मोर्चे पर अपने जौहर दिखाए- मुक्ति योद्धाओं को अपने घरों में छिपाने, उन्हें सुरक्षित जगह पहुंचाने, जासूसी करने, घायलों की तीमारदारी करने, संदेश पहुंचाने से लेकर खुद हाथ में तलवार या बंदूक लेकर दुश्मन पर टूट पड़ने तक की भूमिका जोरदार ढंग से निभाई थी।

दुर्भाग्यवश हमारे पास भारतीय पक्ष का विवरण देने वाले पर्याप्त दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। जाहिर है पराजित पक्ष के बारे में किसी तरह के लिखित विवरण किसी के घर में मिलना उसे अपराधी सिद्ध करने और सजा देने के लिए काफी था, तनिक से संदेह के आधार पर ही गांव के गांव जला दिए गए। ऐसे में किसी तरह का लिखित विवरण प्राप्त होना असंभव ही है। अनेक अनाम क्रांतिकारियों, आजादी के मतवालों का आज भी तारीख में अता-पता नहीं मिल रहा। आजादी के लिए हुआ 1857 का विद्रोह पूर्व में हुए विद्रोहों की तरह स्थानीय नहीं था। इस विद्रोह में संत, सैनिक तथा असैनिक सब शामिल थे। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

1857 के विद्रोह में संतों, सैनिक वर्ग तथा असैनिकों के मेल को स्वीकार करने के बाद भी कुछ

लोग राष्ट्रीय संग्राम या जन आंदोलन के रूप में स्वीकार करने में घोर आपत्ति करते हैं। वे इसे विनाश के कगार पर खड़े सामंतवाद का विस्फोट मानते हैं। तर्क दिया जाता है कि यदि यह सफल होता तो भारत फिर सामंतशाही की अंधी कोठरी में बंद हो जाता। सैनिकों के विद्रोह करते ही ताल्लुकेदार और जमींदारों ने विद्रोह की अगुआई तुरंत अपने हाथों में ले ली। अपने वर्चस्व को पुनः स्थापित करने और उसको विस्तृत का यह सुंदर मौका था। कितने ही अंशों में भले यह पूर्ण सत्य हो परन्तु यह निर्विवाद है कि विद्रोहियों का उद्देश्य पुरानी व्यवस्था की पुनर्स्थापना करना नहीं था। उनका एकमात्र उद्देश्य विदेशी होने के नाते भारत से अंग्रेजों को निष्कासित करना था। वे मानते थे, विदेशी होने के नाते अंग्रेजों को भारत में सत्ताधारी बनने का अधिकार नहीं है। विदेशी और देशी का विभाजन राष्ट्रीय चेतना का पहला चिह्न है और इतनी चेतना विद्रोहियों में अवश्य मौजूद थी, इस चेतना को जाग्रत करने का महनीय प्रयास साहबरांम जी जैसे संतों की बदौलत ही था।

प्रश्न उठता है कि आज हम 1857 को क्यों याद करें और कैसे याद करें? प्रसिद्ध इतिहासशास्त्री ई. एच. कार कहते हैं इतिहास, इतिहासकार और उसके तथ्यों के बीच कभी न समाप्त होने वाला संवाद है और वर्तमान व अतीत के बीच अनवरत चलने वाली अन्योन्य क्रिया है। चूंकि विगत 250 वर्षों में उस विराट घटना के बारे में बहुत लिखा गया और बहुत कुछ नया ढूँढा गया है, परन्तु स्थानीय समुदायों, बिश्नोई पंथ जैसे धर्म रक्षा कवच सम्प्रदायों के योगदान बारे अभी बहुत कुछ लिखना, शोध करना शेष है। संत साहबरांम जी के साहित्य का इस दृष्टि से अध्ययन कर हम उन सभी उद्देश्यों, भावनाओं और परेशानियों का विवेचन कर सकते हैं जिनके चलते लोगों ने यह महान् विद्रोह शुरू किया और उसमें शामिल हुए। ये अनेक प्रकार के उद्देश्य हमें इस क्रांति को समझने में मदद तो कर सकते

हैं लेकिन उसकी महानता से किसी प्रकार हमारा ध्यान नहीं हटाते यह साम्राज्यवाद के खिलाफ 19वीं सदी में सारी दुनिया में सबसे बड़ी हथियारबंद जंग थी।

शायद यही वजह है कि हमें बार-बार 1857 को याद करने की जरूरत है। भले ही इस संग्राम में भारतीय पक्ष की पराजय हुई, परन्तु इस पराजय में भारतीय लोगों के लिए एक सीख छिपी थी, उनको अपने भीतर राष्ट्रवादी विचारधारा को पल्लवित करना है। आधुनिक राजनीतिक संगठन के सिद्धान्तों को सीखना है और अपने को विज्ञान और प्रौद्योगिकी से परिचित कराना है, उसके बाद ही राजनीतिक स्वतंत्रता का स्वप्न साकार हो सकता है।

1857 का महत्त्व यह भी है कि इसने काफी स्पष्ट कर दिया कि भारतीय समाज में 'उदासीनता' नहीं है वरन इसमें पर्याप्त प्रतिरोधात्मकता है और यह प्रतिरोधात्मकता व्यापक होकर राष्ट्रीय रूप भी धारण कर सकती है। भारत एक संरक्षणशील देश है और पूरी दुनिया इसका आँगन है यह ग्रहणशील है, पर यह प्रतिरोध भी करता है।

आज के दिनों में किसान और आदिवासी या 'विकास' की वजह से विस्थापन झेलते लोग जब अपने खेत, जमीन और अस्मिता के लिए लड़ रहे हैं, एक बार और लगता होगा कि ये विकास को रोक रहे हैं, भारत को पिछड़ा रखना चाहते हैं। इनकी असफल लड़ाइयाँ और वैश्वीकरण की दिग्विजय कुछ-कुछ 1857 के दिनों को ताजा कर सकती है। आज पुनः लग सकता है कि किसानों के आंदोलन या अस्मिता की लड़ाइयाँ उदारीकरण की प्रक्रिया को उलटने वाली हैं। परन्तु सच्चाई यही है कि यह भी जनचेतना के उभार का प्रतिबिम्ब है।

-डॉ. राजा राम

सहायक प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय, भट्टू कलां

(फतेहाबाद)

सभी पाठक बन्धुओं को सस्नेह नवन प्रणाम। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आप सब सकुशलपूर्वक रहें व आपसे जुड़े हुए सभी बन्धुजनों का स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। जैसा आप समझते हैं कि वर्तमान हालात काफी डरावने हैं। हर तरफ से रोजाना बुरी खबरें मिल रही हैं। कोरोना की इस दूसरी लहर ने सांसारिक नश्वरता की गति को बढ़ा दिया है। ऐसा लगता है कि हम इस जगत के दायरे में जो भी वहम पालते हैं, सब शून्यता की तरफ इशारा कर रहे हैं। चहूँ ओर से परेशानी भरे समाचार हमें निरन्तर सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि यह जीवन महज एक यात्रा के समान है। जिस मुसाफिर की यात्रा का सफर पूरा हो जाता है वह अपनी सीट छोड़कर अनजान दुनिया की ओर चल देता है। आप सोच रहे होंगे कि इस लेख में मुझे बार-बार ये बातें क्यों सूझ रही हैं। यह लेख पर्यावरण को समर्पित है इसलिए मैं विषय से हटकर बात नहीं कर रहा हूँ। पर्यावरण का अर्थ है ऐसा आवरण जो हमें चारों तरफ से घेरे हुए है। जिस वातावरण में हम गुजर-बसर कर रहे हैं, जो परिस्थितियाँ हमारे जीवन पर प्रभाव डालती है, पर्यावरण के दायरे में है।

मनुष्य के जीवन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं- भूमि, हवा, जल, आकाश, अग्नि आदि। इन्हीं सब तत्वों का मिश्रण ही हमारा जीवन है। मनुष्य जाति ने लाखों वर्षों की यात्रा पूरी करके 21वीं सदी की चकाचौंध को हासिल किया है। वर्तमान पीढ़ी के पास जितने सुख-सुविधाओं के साधन अब मौजूद हैं, उतने मानव जाति के इतिहास में कभी नहीं रहे। खाने- पीने की वस्तुओं की भरमार, यातायात के अत्याधुनिक साधन, घातक हथियार, जीवन को सुलभ बनाने वाली तमाम मशीनें, विचार अभिव्यक्ति के तरीके, दूरियाँ घटाते जनसंचार के माध्यम, अंतरिक्ष की ओर बढ़ते मानवीय कदम, उंगली के ईशारे से बटन दबाते ही होने वाले विभिन्न यान्त्रिक कार्य, इन तमाम बातों पर विचार करें तो हम पाते हैं कि स्वर्णिम सुख भोगने वाली पृथ्वी की पीढ़ी हम ही हैं। थोड़े से समय पहले 100-200 वर्षों पहले की बात करें तो मानव जाति बहुत अभावों का जीवन व्यतीत करती थी।

जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कठिन संघर्षों के दौर से गुजरना पड़ता था। महज जठराग्नि को शांत करने के लिए घोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। हालांकि रोटी के लिए करोड़ों लोगों को अब भी बखूबी लड़ना पड़ता है लेकिन फिर भी उतना भयावह नहीं है। अकाल की स्थिति में करोड़ों लोगों को जीवन से हाथ धोना होता था। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि हमने विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ है। विज्ञान नित नई खोज के माध्यम से मानव जीवन को सुगम, सुखप्रद बनाने की ओर निरन्तर अग्रसर है। मानव जाति की इस प्रगति पर विचार करें तो पाते हैं कि हमें विकास के साथ-साथ विनाश का भी सामना करना पड़ रहा है। मानवीय स्वभाव है कि मनुष्य संतुष्ट नहीं होता है। एक इच्छा पूरी होने के साथ ही चार नई इच्छाएं जन्म ले लेती हैं।

भगवान बुद्ध हजारों वर्ष पहले ही कह चुके थे यह संसार दुखों का घर है, दुखों का कारण इच्छाएं हैं। इच्छाओं पर काबू पा लेने से दुखों से छुटकारा मिल सकता है। इसके लिए उन्होंने अष्टमार्ग पर चलने का संदेश दिया। इस मामले में भारतीय संस्कृति समृद्ध है। पश्चिमी संस्कृति की अपेक्षा हमारी संस्कृति त्याग, प्रेम व सहानुभूति का संदेश देती है। वेदों से लेकर गुरु महाराज की सबदवाणी तक, विभिन्न काल में दिव्य संदेश लेकर आए विचारकों, चिन्तकों ने हमारी संस्कृति को विश्व में अनूठा स्थान प्रदान किया। पश्चिमी लोगों ने भौतिकवाद, भोग, प्रकृति पर बाहरी रूप से विजय हासिल करने पर बल दिया। हमने भीतर की तरफ मुड़कर इन्द्रिय सुखों की अपेक्षा आन्तरिक जगत पर जीत हासिल की। हमारे पूर्वज मनीषियों ने ध्यान, धारणा, योग, साधना द्वारा सूक्ष्मतर तत्वों की खोज पर अपना जीवन लगाया। अन्तर स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक तत्वों के साथ श्रेष्ठतर बनी। पश्चिमी सभ्यता भौतिकता को लेकर आगे बढ़ी। बाहरी जगत पर उनका वर्चस्व है। 18वीं व 19वीं सदी के दौरान यूरोपियों ताकतों ने ताकत व साहस के बल पर दुनिया के काफी देशों पर विजय हासिल की व अपना गुलाम बनाया। आर्थिक विकास व औद्योगिक प्रगति के

कारण यूरोप ने एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के लोगों पर राज किया व भौतिकवाद, पूंजीवादी व्यवस्था को थोपा। यूरोपियों के कल-कारखाने दुनिया को शोषण की चक्की में पिसने लगे/दो विश्वयुद्धों ने ब्रिटेन को हटाकर अमेरिका को दुनिया की नई शक्ति बनाने में मदद की। रूस भी महाशक्ति के रूप में उभरा। 20वीं सदी ने दुनिया के इतिहास को बदला। 21वीं सदी में एशिया की शक्ति चीन अब अमेरिका व यूरोपियों का मुकाबला करते दिखाई दे रहा है। पिछले लगभग 300 वर्षों में हुए आर्थिक व भौतिक परिवर्तनों ने आज की 21वीं सदी की दुनिया को एक गांव के रूप में परिवर्तित कर दिया है। वैश्वीकरण, भौगोलिकीकरण, संचार क्षेत्र में क्रान्ति के कारण दुनिया की 700 करोड़ की आबादी आज से पहले एक-दूसरे के नजदीक कभी नहीं थी। इन कारकों ने मानव जीवन को आरामदायक बनाया है, तमाम भौतिक सुख प्रदान किए हैं, लेकिन इसके साथ ही बहुत से हानिकारक तत्व भी मनुष्य के जीवन में प्रवेश कर गए हैं। आज पर्यावरण की जो हालत हैं इतनी बुरी हालत कभी नहीं हुई। परिस्थितिकी तन्त्र खतरनाक मोड़ पर हैं। पेड़-पौधे व जीवों की सैकड़ों जातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। दुनियाभर के जंगल सिकुड़ चुके हैं। विश्वभर के वैज्ञानिक बार-बार मानव जाति को चेतावनी दे रहे हैं कि पृथ्वी का वातावरण प्रदूषण के खतरनाक दौर से गुजर रहा है। मनुष्य के अन्धे लालच ने इस धरा के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इस स्तर तक किया है कि अब अति की सीमा पार हो चुकी है। भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, यहां तक कि अंतरिक्ष तक को मानव जाति प्रदूषित कर चुकी है। पर्यावरण प्रदूषण के खतरों व प्रभाव से हम सभी जुड़े हुए हैं।

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि 'यह धरती इस पर रहने वाले सभी जीवों की जरूरतें पूरी कर सकती है लेकिन किसी भी मनुष्य के लालच को नहीं।' पर्यावरण प्रदूषण का कारण मनुष्य का लालची स्वभाव है। पश्चिमी सभ्यता की भौतिकवादी संस्कृति जिम्मेदार है, जिसने पूरे विश्व में अपना प्रभाव जमा लिया है। भोग की संस्कृति हम पर इतनी बुरी तरह से हावी है कि हम सब कुछ समझते हुए भी इस पर ध्यान नहीं देते। स्वार्थ ने हमें इतना अन्धा कर दिया है कि हम अपनी संस्कृति के

अनमोल खजाने को अनदेखा करते हैं।

भारत के चिन्तन में हमेशा त्याग की संस्कृति रही है ना कि भोग की। प्रेम का भाव हावी रहा है ना कि ईर्ष्या का। हमारी संस्कृति सहानुभूति का संदेश देती है ना कि स्वार्थ का। वेदों की वाणी सबदवाणी को हम केवल जाप करने तक ही इस्तेमाल करते हैं। इसके मूल भावों को जीवन के व्यवहारिक पक्ष में हम स्थान नहीं देते हैं।

आइए, इस पर विचार करें कि हम इस तुच्छ, नश्वर, क्षणभंगुर जीवन को व्यतीत करने के लिए हर समय स्वार्थ का बोझ क्यों ढोए रहते हैं? जब यह स्पष्ट है कि पृथ्वी से कुछ भी साथ लेकर नहीं जाना है तो हम कई पीढ़ियों का जोड़ने के लिए क्यों योजना बनाते रहते हैं। क्यों हम दूसरों का भी हिस्सा छीनने के लिए झूठ, बेईमानी का सहारा लेते हैं? हम आपस में एक-दूसरे का साथ देने के बजाए क्यों टांग खिंचाई में लगे रहते हैं।

शायद कुछ महानुभाव सोच रहे होंगे कि उपरोक्त प्रश्नों का सम्बन्ध पर्यावरण से कैसे हैं? मैं इस विषय पर गम्भीर विचार करके आगे बढ़ा हूं। मानवीय स्वार्थपरता पर्यावरण के भौगोलिक कारक को तो प्रभावित करती ही है, साथ ही साथ सामाजिक पक्ष भी प्रभावित होता है।

जब मनुष्य केवल अपने बारे व परिवार के दायरे में रहकर ही सोचता है तभी पर्यावरण प्रदूषण होता है फिर वह प्रदूषण चाहे धरा का हो, जंगल का हो, पानी-हवा का हो या समाज का हो। हमारा सीमित व तंग नजरिया ही वातावरण को दूषित करता है। यह गन्दगी भौगोलिक व वैचारिक दोनों स्तर की है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःख भागभवेत् ॥

जब हमारे विचार ऐसे उच्च स्तर के होंगे, पूर्वजों की वाणी को कार्यरूप में लाएंगे, तभी यह धरा रहने लायक हो सकेगी। सबके कल्याण में ही अपना सुख देखेंगे, तभी स्वार्थपरता जाएगी। उसी वक्त हम पवित्र विचारों के साथी हो सकेंगे। ये विचार ही मनुष्य का निर्माण करते हैं। उत्तम विचार ही उत्तम कार्य के लिए मार्ग तैयार करते हैं। गुरु जम्भेश्वर ने मानव मात्र के कल्याण के लिए 29 नियमों की शिक्षा प्रदान की। विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से सबदवाणी द्वारा जगत कल्याण के हितार्थ उत्तम वचनों का अमृत पान करवाया। पृथ्वी के इस प्राणी को अपने भीतर झांक कर

देखना चाहिए कि हम महापुरुषों के वचनों पर कितनी मात्रा में अमल करते हैं। अपने दुःख तकलीफों के उत्तरदायी हम स्वयं ही हैं। चारों तरफ फैले सामाजिक प्रदूषण की जिम्मेदारी हमें खुद लेनी होगी।

सबद संख्या 70 में गुरु महाराज कहते हैं 'एक हलालू हक साच कृष्णों, सुकृत अहल्यों न जाई।' हक की कमाई पर ही संतोष कर लेना सत्य के नजदीक पहुंचना है। अपनी मर्यादा में रहते हुए परिश्रम द्वारा जो धन प्राप्त होता है वही सच्चा है। इस प्रकार का क्रिया हुआ सुकार्य व्यर्थ में नहीं जाता, उसका फल अवश्य प्राप्त होगा। इस पर हम विचार करें तो कितने उत्तम स्तर की वाणी गुरु महाराज ने हमें प्रदान की, स्वार्थ से कोसों दूर रहने की शिक्षा इसमें निहित है। दुनिया के ज्यादातर झगड़े स्वार्थपरता की ही देन हैं। दूसरों के हक पर डाका डालना सामाजिक प्रदूषण का हिस्सा है। हम अपने आसपास देखते हैं कि हक की कमाई पर संतुष्ट न रहने से ही भाई-भाई का दुश्मन हो जाता है। इस स्वार्थ ने ही रिश्तों में खटास पैदा की है। खून के रिश्ते बोझिल हो गये हैं। अपने सगे-संबंधी दूर के हो गये हैं। दूर के रिश्तों में अपनापन खोजने में लगे हैं। लेकिन सुकून तो नजदीकियों में बैठकर ही मिलता है। गुरु महाराज की वाणी को अपनाकर ही हम प्रेम भरा संसार बना सकते हैं।

सबद संख्या 69 में गुरु महाराज कहते हैं, 'काचे पिण्डे किसी बड़ाई, भौले भूल अयाणो। म्हां देखता देव दाणु सुरनर खीणा, बीच गया बेराणों।' गुरु महाराज के इस सन्देश में मानव को स्पष्ट चेतावनी है कि यह शरीर कच्चे घड़े के समान शीघ्र नाशवान है, किसी भी समय फूट सकता है। फिर इसे लेकर क्यों बड़ाई? वृथा अभिमान, अहंकार, यह बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं। इससे बड़ी नादानी और क्या होगी? हम रोजाना आंखों सामने मौत के दृश्य देखते हैं, फिर भी सोचते हैं कि मेरी बारी नहीं आएगी। काल ने देव, दानव किसी को नहीं छोड़ा। राजा, महाराजा राजभोग की अभिलाषा बीच में ही छोड़कर चले गए।

कोरोना महामारी की इस दूसरी लहर में हम इसे बखूबी महसूस कर सकते हैं। इस बार यह मौत का तांडव कर रही है। शायद ही किसी ने अपने किसी परिजन को इस महामारी में ना खोया हो। अगर बीमार

की मौत अस्पताल में हो तो जीवन नरक समान हो जाता है। अस्पतालों की खुली लूट मौत को और भयानक दुखदायी बना देती है। जीवनभर की गाढ़ी कमाई चंद ही दिनों में डाक्टरों के पास। परिजनों की मृत्यु पश्चात् उसका अंतिम संस्कार तक प्रशासन कर रहा है, घर लाना तो दूर हम सामाजिक संस्कार तक करने में असहाय हैं। ये महामारी बार-बार हमें अगाह कर रही है कि हम जीवन-मृत्यु की नश्वरता को समझें। व्यर्थ का अभिमान छोड़ें। पैसे व रसूख वालों को भी अस्पतालों में बैड नहीं मिल पा रहा। ऑक्सीजन की कमी से दम तोड़ते परिजन। ऐसी हालात देखकर भी सन्तों की वाणी पर हम विचार नहीं करेंगे तो हमारा जीना बेकार है।

‘अहनिश करणी धीर न रहिबा, न बच्या जम कालू। कोई-कोई भल मूल सींचीलो।’

गुरु महाराज कहते हैं कि हे प्राणी, दिन-रात दौड़कर कमाया हुआ धन स्थिर नहीं रहेगा। न ही यमदूत से बच सकेगा। किन्तु अधिकतर लोग धन कमाने, जोड़ने में ही लगे हैं। कुछ विरले लोग ही हैं जो अपने मूल स्वरूप को सींचते हैं। परमपिता परमात्मा से नाता जोड़ते हैं। वे लोग संत पुरुष से भले तत्व की बात पूछते हैं। जो ऐसा करते हैं वे ही जीवन की विधि जान सकते हैं, जीवन कैसे सफल बनाते हैं?

आइए, गुरु महाराज की वाणी पर विचार कर अपने आस-पड़ोस के पर्यावरण को सुखद बनाएं। सामाजिक प्रदूषण तभी दूर हो सकता है जब हम अपने विचार उत्तम व स्वस्थ रखेंगे। सबद संख्या 66 में गुरु जम्भेश्वर फरमाते हैं- 'संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं घण बरषंता नीरू, संसार में उपकार ऐसा, ज्यूं रूही मध्ये खीरूं।' गुरु महाराज ने दो पंक्तियों में कितना उच्च संदेश मानव मात्र को दिया है। उनकी वाणी का कुछ हिस्सा भी हम अपने विचारों में, कार्यों में समाहित कर लें तो यह धरा स्वर्ग ही है। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने भी ऐसा ही कुछ संदेश दिया है। गुरु महाराज कहते हैं कि हमें स्वार्थ छोड़कर परोपकार का मार्ग अपनाना चाहिए। इस दुनिया में उपकार करते हुए हमें पानी बरसाते बादलों की तरह व्यवहार करना चाहिए। मेघ पानी समुद्र से सोखते हैं जहां पानी की भरमार है और उस स्थान पर बरसाते हैं जहां इस धरा को जरूरत है। बादल यहां अपना-पराया नहीं देखकर बिना

कोई बदले में उम्मीद पाले परमार्थ का संदेश देते हैं। अगर हमें इस छोटे से सांसों के ताने-बाने को बोझिल नहीं बनाना है तो 'मैं' नहीं 'आप' की भावना के साथ आगे बढ़ना होगा। स्वार्थ नहीं परमार्थ को अपनाया होगा। अगर हम 29 नियमों व गुरु महाराज की कामधेनु रूपी सबदवाणी के साथ तालमेल बनाकर जीवनयापन करें तो हमारा पर्यावरण कदापि दूषित नहीं होगा। अपनों की तरक्की में हम खुशी ढूंढने लगे तो हमें आगे बढ़ने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। ईश्वर की असीम कृपा का फल हमें तभी प्राप्त होगा जब हम उसकी बनाई दुनिया से प्रेम करेंगे। उसके बन्दों से बिना किसी प्रकार की उम्मीद पाले निस्वार्थ भावना से जुड़ेंगे। सबद 39 में कहा गया है-

‘उत्तम ढंग सु ढंगू, उत्तम जंग सुजंगू, तातै सहज सुनीलूं। सहज सुपंथू, मरतक मोक्ष दवारूं।’

गुरु जम्भेश्वर जी इंसान को बार-बार चेता रहे हैं कि तुम्हें किस तरह का जीवन जीना चाहिए। उत्तम ढंग से जो जीवन जीया जाए वही जीवन कहलाने योग्य है। जीवन शालीनता से जीया जाए। यदि जंग करनी है तो अपनी इन्द्रियों के साथ करो। यह सबसे उत्तम जंग होगी। इससे तुम्हारा जीवन सहज, आनन्दमय होगा। यही सुमार्ग है, इसी मार्ग पर चलते हुए मृत्यु काल में मोक्ष की प्राप्ति होगी।

‘मन के जीते जग जीत’ दुनिया भर के दर्शन गुरु महाराज के उपदेशों का समर्थन करते हैं। हमारी वास्तविक दुश्मन इन्द्रियां ही हैं जो हमें कुमार्ग पर ले जाती हैं। स्वार्थी बनाती हैं। इन्द्रियां काबू न हो तो लालच, भय, क्रोध, अहंकार, द्वेष, काम वासना आदि शत्रु हावी हो जाते हैं जो जीवन को नरकमय बनाकर सामाजिक पर्यावरण को दूषित करते हैं। इन्द्रियों पर विजय जगत विजय होती है। जब हमारी जिह्वा काबू में नहीं रहेगी तो बोलने व खाने में अति होगी। अति हर वस्तु की जहरीली बन जाती है। परनिन्दा का स्वाद हो, या अधिक मीठा-तीखा खाने का। जीवन का स्वाद बिगाड़ देते हैं। स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है, अनेक रोगों का निवास शरीर बन जाता है। चुगली का स्वाद ज्यादातर झगड़ों का कारण बनता है। वैरभाव को बढ़ाता है। आसपास का वातावरण तनाव भरा व संशयशील बनाता है। इन्द्रियां काबू न हो तो समाज में आपके चरित्र

का पतन होता है। चरित्र मूल्यवान है। बिना पवित्र आचरण के हमारे में व पशुओं में क्या अन्तर रह जाता है? चरित्र के अभाव में जीवन टूट हो जाता है। गुरु महाराज ने हर प्रकार से दिव्य संदेश के माध्यम से इस धरती के पर्यावरण को साफ-पवित्र बनाए रखने के लिए आशीर्वाद की वर्षा की। भौतिक पर्यावरण को बचाने के लिए उनके शिष्यों द्वारा दिया गया खेजड़ली बलिदान तो विश्व में अद्वितीय है। महज वृक्ष के बचाव को 363 बिशनोइयों का जीवन बलिदान गुरु जम्भेश्वर जी की दूरदर्शिता को इंगित करता है। इस पृथ्वी को मनुष्य के रहने के लायक बनाना है तो हमें गुरु महाराज की शिक्षाओं पर अपने जीवन की सांसों को समर्पित करना होगा। खेजड़ली बलिदान को विश्व पटल पर रखने के लिए अभी काफी कुछ प्रयत्न की आवश्यकता है। जीव रक्षा के क्षेत्र में भी बिशनोई समाज अपनी पहचान के साथ आगे बढ़ रहा है। अपने प्राण देकर भी निरीह बेजुबानों की रक्षा करना यह समाज अपनी आन समझता है। ऐसे क्रियाकलापों को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने की जरूरत है। तभी 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी। गुरु जम्भेश्वर की शिक्षाओं को जब तक धरती के हर इंसान के पास नहीं पहुंचाया जाएगा, तब तक हम सही अर्थों में विश्व पर्यावरण दिवस को तर्कसंगत नहीं बना सकते। न केवल भौगोलिक पर्यावरण बल्कि सामाजिक पर्यावरण को भी साफ, स्वच्छ बनाने की उतनी ही आवश्यकता है। पूरे विश्व में जिस तरह से पूंजीवाद हावी होता जा रहा है। उससे विश्व की सम्पत्ति का बड़ा हिस्सा 1% लोगों के हाथ में सिमटता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कुछ एक लोगों की तिजोरियां भरने को किया जा रहा है। गरीब को अधिक अभाव की तरफ धकेला जा रहा है। मनुष्य में तनाव, मानसिक दबाव, बीपी, शुगर, दिल व किडनी की बीमारियां, टीबी, अकेलापन आदि बीमारियां घर कर चुकी हैं। अमीर लोग तो बीमारियों के साथ स्टेटस सिम्बल जोड़कर जी रहे हैं। हमारे युवा वर्ग में पश्चिमी संस्कृति की बुराइयां घर कर चुकी हैं। पहनावा, पार्टियां, नाजायज रिश्ते, छोटी आयु में ही भटकाव, नशा, संस्कारों से दूरी ये चीजें युवाओं को खतरनाक मोड़ पर ले आई हैं। 8-10 वर्ष का बच्चा टेंशन, बोरियत जैसे शब्दों का आदि हो चुका है। यह सोचकर हम बेचैन हो जाते हैं। हमारा भौगोलिक व

सामाजिक पर्यावरण पतन के निचले पायदान पर पहुंच चुका है। ऐसे में घोर अंधकार के बीच रोशनी की किरण नजर आती है तो वह है हमारी सांस्कृतिक विरासत, हमारे पूर्वजों के मूल्य। हमारी संस्कार प्रणाली ही इस प्रदूषण से हमें निजात दिला सकती है। गुरु जम्भेश्वर की शिक्षाएं ही भटकी हुई मानव जाति को सच्चा मार्ग दिखा सकती है। ये देश वेदों की वाणी, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों का देश है। गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, स्वामी विवेकानन्द, कबीर, गुरु नानक आदि सन्तों का देश है। इनके दिखाए मार्ग पर हम चलते हैं तो हमारा वर्तमान व

भविष्य सुनहरा होगा, तेजोमय होगा, मंगलमय होगा। हमारी आध्यात्मिकता ही हमारा जीवन रक्त है। वेद कहते हैं-

त्याग करो, त्याग करो, इसके सिवा दूसरा पथ नहीं है। मुक्ति न सन्तानों से होती है, न धन से, न यज्ञ से, वह अमृतत्व केवल त्याग से मिलता है।'

-कृष्ण कुमार

प्रवक्ता इतिहास, गांव लांधड़ी, हिसार
मो.: 9416686549

प्राणवायु कहीं प्राणहर्ता न बन जाए!

हवा सभी मनुष्यों, जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों सभी के लिए बहुत ही जरूरी है। इसके महत्व का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आदमी भोजन के बिना कई दिनों तक, जल के बिना कुछ घण्टों तक जीवित रह सकता है किन्तु हवा के बिना कुछ क्षण भी उसका जीवित रहना असंभव है। प्रतिदिन मानव लगभग 22000 बार श्वास लेता है। इस प्रकार प्रतिदिन वह 16 किलोग्राम हवा ग्रहण करता है। हवा में विभिन्न गैसों एक निश्चित मात्रा में होती है। इसमें जरा सा अन्तर आने पर यह असंतुलित हो जाती है। इससे हवा की गुणवत्ता में ह्रास हो जाता है। यह प्रदूषित हवा सभी के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

भारत को पर्यावरण की दृष्टि से विश्व का सातवां प्रदूषित देश बताया गया है। भारत के मेट्रो शहरों में वायु की शुद्धता का स्तर 20 वर्षों में निरन्तर खराब होता जा रहा है। औद्योगिक प्रदूषण चार गुणा बढ़ा है। जैविक ईंधन के जलने के कारण कार्बनडाइआक्साइड का उत्सर्जन 40 प्रतिशत बढ़ चुका है। यदि यही स्थिति रही तो सन् 2030 तक पृथ्वी के वातावरण में कार्बन-डाइआक्साइड की मात्रा 90 प्रतिशत बढ़ जाएगी और पृथ्वी का तापमान असहनीय हो जाएगा।

वैज्ञानिकों के शोध-अध्ययन के अनुसार यदि तापमान एक डिग्री बढ़ता है तो जीवों और वनस्पतियों की 12 हजार प्रजातियों के समाप्त होने की आशंका

है। इसमें मानव को भोजन देने वाले पौधे भी शामिल हैं। यदि 2 से 3 डिग्री की बढ़ोतरी हुई तो फसलों की पैदावार पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। नदियों में बाढ़, फिर सूखा पड़ सकता है। हरे पेड़-पौधों से वातावरण शुद्ध रहता है। प्राणवायु ऑक्सीजन पेड़-पौधों प्रकृति प्रदत्त मिलती रहेगी। भगवान का निवास भी हरे-पौधों में ही है। इसलिए भगवान जाम्भोजी ने एक शब्द में कहा है- 'हरि कंकड़ी मण्डप मेड़ी जहां हमारा वासा'। इसलिए हमें पेड़-पौधों की देखभाल रक्षा-सुरक्षा संरक्षण अपना परम कर्तव्य समझते परिवारजनों की तरह करना चाहिए। यदि मानव एवं प्राणी मात्र का अस्तित्व को बचाए रखना है तो प्रकृति प्रदत्त पेड़-पौधे, वन एवं वन्य जीवों की रक्षा एवं संरक्षण करना जरूरी है। मनुष्य को कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे वायु प्रदूषण हो। यदि वायु प्रदूषण इसी दर से होता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब शुद्ध वायु भी बाजार से खरीदनी पड़ेगी। इसलिए हर व्यक्ति को वायु को प्रदूषित होने से बचाने के हर संभव प्रयास करने चाहिए। इसलिए ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाने चाहिए।

-मोतीराम कालीराणा, अध्यापक

ग्राम-श्री लक्ष्मणनगर (चाडी)

तह.-आऊ, जिला-जोधपुर (राज.)

मो.: 9783338265

(राग आसा)

संतो सांभळ्य अमर कहांणी । गुर परताप्य अमर घर पाया, बजर कहर होय पांणी ॥1 ॥टेक ॥
 मैंतू डूबि मूवा दोय परबत, तिसनां लहर समांणी । सुमति सुहागण्य गिरवर बैठी, बोलै सीतळ बांणी ॥2 ॥
 मछा ग्रब गरीबी मंछी, व्रंभ अखर विण्य पांणी । जामण-मरण जुग का फरजंद, समझि व्रंभ गियानी ॥3 ॥
 नारी लबध्य बोहत जुग डसीया, उनमन रहत अकेला । सुरजनदास कहरे साधो, सबद गुरु मैं चेला ॥4 ॥

हे संतो, अमर कहानी सुनो, सतगुरु के प्रताप से अमरता का घर मिलता है और जहां सब दुख समाप्त हो जाते हैं। तृष्णा के प्रभाव से यह संसार तेरा-मेरा समझकर डूब गया, जो सुमती अटल है और अलग बैठी है, वह शीतल वाणी बोलती है। अभिमान मच्छ है और गरीबी मछली के समान है, लेकिन ब्रह्म के अक्षर बिना पानी ही सम्पन्न है अर्थात् ब्रह्म में जाने से अभिमान और गरीबी दोनों ही पीछे रह जाते हैं, जन्म-मरण और वृद्धावस्था के दुख को मेटने के लिए ब्रह्म ज्ञान को समझो। इस तृष्णा ने समस्त संसार को खाया है, इसलिए सुरजनदासजी कहते हैं कि हे साधो, सत् सबद गुरु के समान है और मैं उसका शिष्य हूँ।



(राग भैरू)

समझि भई सतगुरु पहचान्यां, मुगति गुरु मेरा मन मान्या ॥1 ॥टेक ॥
 जीण्य गढि गढिरस गढिही विराजै । चलै की मति सतगुरु लाजै ॥2 ॥
 पढिर हीर अमोल्याक वांणी । मेरा गुर कथीयै अथक कहाणी ॥3 ॥
 पारस कै संग्य लोह लगाया । सा फिरय हाथे हेम कहाया ॥4 ॥
 उडि गया हंस विरख पघराणां । गुर सरणांगति हंस समांणां ॥5 ॥
 मैज जीव कहा गम जाणौ, सुरजन हरि की सरण्य समाणौ ॥6 ॥

मुझे जब से समझ हुई है, मैंने सतगुरु को पहचान लिया है, मेरे मन में यह विश्वास है कि ये गुरु मुक्ति देने वाले हैं। जिस गढ़ में, गढ़ का स्वामी विराजमान है, वहां शिष्य की अकर्मण्यता से सतगुरु को ही लाज है। (यहां मन के विकारों की ओर संकेत है।) हे जीव, इस अमूल्य वाणी को पढ़ो, मेरे गुरु का कथन हमेशा सत्य है, जिसको किसी ने कहा नहीं है। पारस की संगति से लोहा सोना हो जाता है, ऐसा ही साथ मेरे गुरु का है। इस शरीर को छोड़ कर हंस जब जाता है तो गुरु के स्वरूप में समा जाता है। सुरजनदास जी कहते हैं कि मैं तुच्छ जीव कुछ भी नहीं जानता था, लेकिन सतगुरु की कृपा से ब्रह्म में समा गया हूँ।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

गंवर के गीत

आ बाड़ी लाल किवाड़ी रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बाड़ी में भंवरो भिणकै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 ईसर जी गी पाग बिराजै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बहू गंवरा गै घूंघट बेसै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बहू गंवरल फिर घिर निरखै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 कानूडै गै होठें बेसै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बाई सुगणा गै चुड़लै बेसै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 आ बाड़ी लाल किवाड़ी रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बाड़ी में भंवरो भिणकै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 रामू जी गी पाग बिराजै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बहू खीचड़ गै घूंघट बेसै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बहू गोदारी फिर घिर निरखै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 राजू जी बहनोई गै होठे बेसै रे, सुरंग मरवो महकै लो ।
 बाई रामी गै चूड़लै बेसै रे, सुरंग मरवो महकै लो ॥2 ॥

--00--

ओ कुण गोरो तोड़ै ए मरवै रा पान, ओ कुण बाड़ी रूंद सी ?
 ईसर गोरो तोड़ै ए मरवै रा पान, कानूडो बाड़ी रूंद सी ।
 ऊभी मालण ए भोळी करै ए पुकार,
 राजी डै ब्रह्मा जी री कोठड़ी ।
 थे ब्रह्मा जी ओ थारै कंवरा नै राखल्यो,
 फूल झाड़ियां बाड़ी रूंद ली ।
 गेली मालण भोळी असल गंवार, म्हारोड़ा ए कंवर लाड़ला ।
 गंवरल आडा ए बाई दिन चार, घोड़ला फेरन निसरया ॥
 ओ कुण गोरो तोड़ै ए मरवै रा पान, ओ कुण बाड़ी रूंद सी ?
 रामू गोरो तोड़ै ए मरवै रा पान, राजू बाड़ी रूंद सी ॥
 ऊभी मालण ए भोळी करै ए पुकार, राजीडै काळू जी
 री कोठड़ी

थे काळू जी ओ थारै कंवरा नै राखल्यो,
 फूल झाड़िया बाड़ी रूंद ली ॥
 गेली मालण भोळी असल गंवार, म्हारोड़ा ए कंवर लाडला ।
 गंवरल आडा ए बाई दिन चार, घोड़ला फेरन निसरया ॥3 ॥

--00--

आज सबेरै उठस्या, म्हें लेस्या सूरज जी रो नाम ।
 कमोदर बांस देवा में ॥
 बहू ए रोयल रो भरतार, कमोदर बांस देवा में ।
 आज सबेरै उठस्या, म्हें लेयस्या ईसर जी रो नाम ।
 कमोदर बांस देवा में ॥
 बहू ए गंवरल रो भरतार, कमोदर बांस देवा में ।
 आज सबेरै उठस्या, म्हें लेस्या रामू जी रो नाम ।
 कमोदर बांस देवा में ॥
 बहू ए खीचड़ रो भरतार, कमोदर बांस देवा में ॥4 ॥

--00--

काळै भाटे कुवटी ए, राते भाटै राय, जी लो मेरी चूंदड़ी ।
 ओ कुण खोदै कुवटी ए, ओ कुण काडै खम्ब ?
 जी लो मेरी चूंदड़ी ॥
 ईसर खोदै कुवटी ए, कानूडो काडै खम्ब ।
 जी लो मेरी चूंदड़ी ।
 कुणा रो धन उछरयो ए, आ कुणा जी री पिणयार ?
 जी लो मेरी चूंदड़ी ॥
 कानूडै रो धन उछरयो ए, ईसर जी री पिणयार,
 जी लो मेरी चूंदड़ी ॥
 गाया रै गळ टोकरा ए, बहुआ रै गळ
 फीकी लागै बाजरी ए, चरकी लागै सूंठ, जी लो मेरी
 चूंदड़ी ॥5 ॥

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओं-बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके। -सम्पादक

इक किरसाण रहे इक गांवा ।
 पशुपाळक खेतीखड् ठांवा ॥1 ॥
 इक बळदारी जोड़ी आले ।
 हळजोते अर गाड़ी चाले ॥2 ॥
 खूब कमावै खरचे पैलो ।
 दूध दही रो चाले रैलो ॥3 ॥
 धन-धान भरिया कोठारा ।
 सुख-समृद्धि अपरम्पारा ॥4 ॥
 घर आयो भूखो नहीं जावे ।
 दीन-दुखी आदर इत पावे ॥5 ॥
 बाजू शहर बसे इक भारी ।
 पशु मेळो लागे हर बारी ॥6 ॥
 बैली-साथी मिळकर सारा ।
 पशु बेचण को जावे प्यारा ॥7 ॥
 बळद बेच रोकड कर लेवा ।
 रोकड ले पेटी धर देवा ॥8 ॥
 काळ-दुकाळ आवैला आडा ।
 महू माळवे जोते गाडा ॥9 ॥
 बळद बेच कीया कळदारा ।
 ले निकी में भरिया सारा ॥10 ॥
 निकी ले कड़ियां रे बांधी ।
 डाकू चोर भले मेह आंधी ॥11 ॥
 मेलो माण घरां ने धावे ।
 लम्बो रस्तो छेह न पावे ॥12 ॥
 चालत गांव सगा को आयो ।
 रात रुकने रो मनडो ठायो ॥13 ॥
 देख सगा ने हुये सब राजी ।
 घणा दिना सूं आये बाजी ॥14 ॥
 कर व्याळू ने करी हथाई ।
 सगे सगी ने बहु मन भाई ॥15 ॥
 माघ महिनो हवा सियाळू ।
 लूरी बाजे मावठ चालू ॥16 ॥
 सगोजी घर सिधाळे सोया ।
 थका हारा निर्भय होया ॥17 ॥
 निकी खोल सिरहाने मेली ।
 उठे साकळे मिली न थेली ॥18 ॥
 सगो सगी सोच में पड़ीया ।
 खोज करी पैसा नी जड़ीया ॥19 ॥

इत उत ठावा देख्या भाळ्या ।
 थक हार कर सगोजी चाल्या ॥20 ॥
 घरां गया घरवाळी बूझे ।
 बळद बेचिया धन नहीं खूजे ॥21 ॥
 कैसे बात बताऊं तोहे ।
 आफत एक आयगी मोहे ॥22 ॥
 आते रास्ते रुका सगा के ।
 धन हड़पियो मोय ठगा के ॥23 ॥
 सूतो निकी दे सिरहाने ।
 सुबह सिरहाने मिळी न म्हाने ॥24 ॥
 सगे सगी झाड़ियो पल्लो ।
 फिर हमने भी सोचा चलो ॥25 ॥
 हीयो फूट्यो सगे सगी को ।
 पंच ले चालो पड़सी फीको ॥26 ॥
 पंच पटेल चौधरी जबरा ।
 सगे सगी री लेवा खबरां ॥27 ॥
 पंच पटेल सगे संग भाळे ।
 समझ गये अब सामी आळे ॥28 ॥
 सुण घर लिसमी बात हुय चूकी ।
 चोरी सगे की आपां पर डूकी ॥29 ॥
 सगो पंचड़ा लेयर आवे ।
 भरणो करदां मोय मन भावे ॥30 ॥
 आपां चोरी करी न स्वामी ।
 भरणे चोर भणीजे नामी ॥31 ॥
 भरणो कर भरम तो भाखां ।
 चोर बणा पण रिशतों राखां ॥32 ॥
 हाथ बळे अर दुळसी होळ ।
 ऐड़ी बात घराळा बोला ॥33 ॥
 भरणो तो अब करणो पड़सी ।
 नितर बात रिशते में अड़सी ॥34 ॥
 धन जावे धरम भी जैला ।
 नाडू निंवा कर बैसा भेळा ॥35 ॥
 चंद कळदारिये चांदी वाळे ।
 भरणो ले सगोजी चाले ॥36 ॥
 घर गये अरू भूले बातां ।
 काळ चकरिया चलता जाता ॥37 ॥
 असल बात इण भांत कहीजे ।
 कथा मोड़ ले ध्यान दहीजे ॥38 ॥

सगे सगी रे गैया गौरी ।
 सेवा करे नित राखे सोरी ॥39 ॥
 गुड़ फिटकड़ी जावो पावे ।
 कळी काळकी भरके ठावे ॥40 ॥
 सियाळो बित्यो सुखदाई ।
 रस मटकी रीता हो जाई ॥41 ॥
 खाली मटकी देखण लागी ।
 उड़ गये होश भरमना भागी ॥42 ॥
 सगी सगे ने बात बताई ।
 निकी पड़ी कळी रे मांही ॥43 ॥
 सगो सूता खाट सिरहानो ।
 रस मटकी भर राखी जानो ॥44 ॥
 निवली खोल सिरहाने मेली ।
 ठरके जा मटकी में ठेली ॥45 ॥
 सगे ने संदेशों पेखो ।
 पकडूयो चोर आय कर देखो ॥46 ॥
 सुण सगोजी दोडूयो आयो ।
 असली बात जाण पिछतायो ॥47 ॥
 धीरज मोटी करो धारणा ।
 तथ्य तर्क सूं करो पारणा ॥48 ॥
 धरती बीज गुमावे नांही ।
 बिन प्रमाण शक कीजे नांही ॥49 ॥
 शंका संदेह मत राखो भाई ।
 मोटो है विश्वास सदाई ॥50 ॥
 धन सार मत करो मन मैला ।
 'ऊदा' पावन रिशता पैला ॥51 ॥
 असल आदमी रिशतो देखे ।
 नकली जन माया ने लेखे ॥52 ॥
 छिण भंगूर जगत री माया ।
 भजन करो भगवत रा भाया ॥53 ॥
 सत भाखो अर रखो सबूरी ।
 हरि करते मन इच्छा पूरी ॥54 ॥

- डॉ. उदयराज खिलेरी

गांव-मेघावा, चितलवाना, जिला-

जालोर (राजस्थान)

मो. 8003238748

दुर्गुणों की जड़ है क्रोध

संसार में मनुष्य प्रत्येक वस्तु की कीमत समझता है लेकिन वह अपने जीवन की कीमत नहीं समझता। मनुष्य सांसारिक वस्तुओं का ध्यान रखता है, उसकी रक्षा करते हुए उनका सदुपयोग करता है, लेकिन दुर्भाग्यवश मनुष्य ना ही तो इस जीवन की रक्षा करता है, ना कीमत समझता है। आज हम देखते हैं कि प्रत्येक मनुष्य विकारों से ग्रसित हो चुका है और उससे बचने का एकमात्र उपाय सबदवाणी ही है। अगर हम अपने जीवन की वास्तविक कीमत समझनी है और अपने जीवन को सुखमय, शांतिमय बनाना है, तो हमें गुरु जी के आशीर्वाद से और सबदवाणी से जुड़ना होगा। सबदवाणी हमें जीवन जीने की कला सिखाती है और जीवन की वास्तविक कीमत बताती है।

गुरु जंभेश्वर जी ने मानव को जीवन के पांच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से सजग रहने के लिए बार-बार चेताया है।

**भल के बीर बिगोवो होयसी, दुसमन कांय लकोवो।
ले कूची दरबान बुलावो, दिल ताला दिल जोवो।**

गुरु जी कहते हैं कि ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष हमारे शत्रु हैं। इन्हीं को हमने अज्ञानतावश सदा आश्रय दिया है। जब तक हम इन शत्रुओं को बाहर नहीं निकालेंगे, तब तक जीवन को सफल नहीं कर पाएंगे। इन शत्रुओं के कारण हमारे भीतर दबे हुए सदगुण दया, करुणा, प्रेम, सौहार्द, संतोष आदि उदय नहीं होंगे। जीवन को विकारों से मुक्त करना ही जागृत होना है और यही जीवन का मूल मंत्र है। जब तक हम पांच विकारों को अपने जीवन से निकाल नहीं देते तब तक हम अपने वास्तविक लक्ष्य की प्राप्ति तक नहीं पहुंच सकते। इन पांचों विकारों में क्रोध रूपी विकार जो हमारी बुद्धि का नाश करने का काम करता है और हमारी निर्णय क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है।

क्रोध क्या है?

क्रोध को 'हम स्वस्थ, मानवीय भावना' के रूप

में परिभाषित कर सकते हैं। क्रोध बढ़ने पर, यदि हम अपने क्रोध के प्रति जागरूक हो जाते हैं और तो इसके दुष्प्रभाव से बच सकते हैं। नहीं तो, यही क्रोध अनियंत्रित हो जाता है। हमारे जीवन के सभी क्षेत्र (शारीरिक व मानसिक व भावनात्मक) पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

आज हम देखते हैं कि युवा पीढ़ी अनेक बीमारियों से ग्रसित होती जा रही है और उन बीमारियों का सबसे बड़ा कारण क्रोध को ही कह सकते हैं। क्योंकि क्रोध की वजह से व्यक्ति मानसिक संतुलन खो देता है और अनेक प्रकार की बीमारियां शरीर में पैदा हो जाती है। गुरु जंभेश्वर जी क्रोध के दुष्प्रभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि

बासंदर क्यूँ एक भणीजै। जिहिं के पवन पिराणों।

सूका मेल्हे नाहिं। जिहिं दिश करे मुहाणों।

जब क्रोध बेकाबू हो जाता है, तो जीवन के सभी क्षेत्रों में समस्याएं जन्म लेने लगती हैं। क्रोध बहुत तबाही मचाता है, जैसे कि आंधी-तूफान। गुस्से में बोला गया एक शब्द इतना जहरीला होता है, जो हमारी हजार प्यारी बातों को एक पल में नष्ट कर देता है। क्रोध और आंधी दोनों बराबर है। शांत होने के बाद ही पता चलता है कि कितना नुकसान हुआ ?

क्रोध एक आंतरिक अभिव्यक्ति है जो अचानक हमारे सामने आती है। आज हम देख रहे हैं कि निराशा ग्रस्त होने, दबाव ग्रस्त होने व थके होने के कारण व्यक्ति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं कर पाता है और उसका दुष्प्रभाव क्रोध के रूप में सामने आता है। आज प्रत्येक व्यक्ति को क्रोध ने अपना शिकार बना रखा है। प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान है कि क्रोध के कितने दुष्प्रभाव हैं लेकिन फिर भी से बच पाना मुश्किल होता जा रहा है। मानते हैं कि कई बार क्रोध के सकारात्मक परिणाम भी सामने आते हैं जो कि परिस्थितियों के अनुसार ही होते हैं लेकिन अगर सजग होकर क्रोध

किया जाए तो ही परिणाम बेहतर होते हैं। नहीं तो, क्रोध हमेशा नुकसान ही करता है।

गुरु जी हमें जीवन दर्शन सिखाते हुए बताते हैं कि अपनी जीवन रूपी गाड़ी को हमें सजग होकर चलाना है। क्रोध के वश में होकर इसे समाप्त नहीं करना है। क्रोध का प्रभाव व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सभी जगह पर पड़ता है। क्रोध पर विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है: आत्मानुशासन और सजगता। व्यक्ति जितना आत्म अनुशासित व सजग होगा उतना ही क्रोध के ऊपर नियंत्रण स्थापित कर पाएगा।

गीता में कहा गया है कि-

क्रोध से मूर्खता उत्पन्न होती है, मूर्खता से स्मृति भ्रष्ट हो जाती है, स्मृति भ्रष्ट हो जाने से बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है।

‘क्रोध करने का मतलब है, दूसरों की गलतियों की सजा स्वयं को देना, जब क्रोध आए तो उसके परिणाम पर विचार करो।’

-कन्प्यूशियस

‘किसी विवाद में हम जैसे ही क्रोधित होते हैं हम सच का मार्ग छोड़ देते हैं, और अपने लिए प्रयास करने लगते हैं।’

-गौतम बुद्ध

जिनमें बदले की भावना प्रबल होती है, वो व्यक्ति अपने क्रोध पर अंकुश नहीं लगाते अपितु उसमें जलकर अपने जीवन को कठिन बनाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अगर मानव अपने जीवन को सफल बनाना चाहता है तो क्रोध पर नियंत्रण करना बहुत जरूरी है और इसके लिए आवश्यक है आत्मानुशासन और अपने गुरु द्वारा बताया बताए गए मार्ग पर चलना। सबदवाणी में आस्था रखते हुए प्रेम पूर्वक निरंतर पाठ करना। शुभ अमृत वेला में उठ कर ओम विष्णु का जप करना, व्यायाम व प्राणायाम पर बल देना, दूसरों की भलाई के कार्य करना। प्रत्येक कार्य सोच-विचार कर करना और अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना, कथनी और करनी में एकरूपता रखना, अपने सांस रूपी पूंजी को सोच-समझकर खर्च करना।

जंपो रे जिण जंघ्यो जणीयर, जपसी सो जिण हारी।

लह लह दांव पड़न्ता खेलो, सुर तेतीसां सारी।

कहने का अभिप्राय यह है कि हमें अपने जीवन की वास्तविक कीमत समझनी होगी, तभी हम क्रोध रूपी विकार पर नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं और इस से बच सकते हैं।

-सुमन बिश्नोई

सहायक आचार्य

एम.एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फतेहाबाद

E-mail: suman29.gill@gmail.com

इंतजार चौमासा रो

इंतजार चौमासा रो,
बिरखा बरसी सांतरी, मुरधर जागी आस।
कोठा भरसी धान रा, डांगर चरसी घास।
हाळी हळडा सांभिया, साथै साम्भ्या बीज।
खेतां ढाणी घालसी, स्यावड़ गई पसीज।
ऊंचौ धोरै बाजरी, ढळवाँ बीजू ग्वार।
बिच्च-बिच्च तूपू टैंढसी, मतीरा मिश्रीदार।
ऊंचौ धोरै टापरी, साथै रैसी नार।
दिनडै करां हळोटियो, रातां बातां त्यार।
काचर काकड़ कीमती, मतीरा मजेदार।
मोठ मोवणा म्होबला, धान धमाकैदार।
आभै गाजी बादळी, मुरधर नाच्या मोर।
जीया जूण खिलखिली, देख घटा घनघोर।
आभै चमकी बीजळी, मनडै जाग्यो मोह।
बादळ राजा बरससी, मिटसी पिया बिछोह।
छमछम बरसै बादळी, धम धम नाचौ मोर।
धरती माथै रूखड़ा, घालै घूमर जोर।
बादळ ऐड़ा ओसरया, मुरधर करियो वास।
धरती आली सांतरी, करसां पूरी आस।
डेडर जीभां खोल दी, भरिया देख तळब।
कोयल वाणी सांचरी, मुरधर उमड़ी आब।

-गोपाल बैनीवाल, जांगलू

तीर्थ धाम रोटू ग्राम

गुरु जाम्भोजी सम्भराथल पर विराजमान थे, उनको रोमांचित हुआ देखकर वहां उपस्थित भक्तजनों ने पूछा, गुरु जी आज किस जीव के भाग खुले हैं? तब गुरु महाराज ने बतलाया कि रोटू ग्राम में एक भक्तिमति उमा रहती है। वह भादू गौत्र की है और झोदकण गोत्र में विवाहित है, उसकी दो कन्याएं विवाह लायक हो गयी, तब उमा अपने माता-पिता, भाइयों को विवाह निमंत्रण देने गई परन्तु माता-पिता ने निमंत्रण लेने से इन्कार कर दिया तथा कहा कि तेरे को जाम्भोजी ही भात भरेंगे। उमा ने गुरु महाराज से पुकार करी। हे सांवरिया, तुम्हीं मेरी लाज रखना।

गुरु जाम्भोजी ने उमा की पुकार सुनकर भक्तों से कहा अति शीघ्र रोटू ग्राम चलने की तैयारी करो। उमा की बेटियों का विवाह है तथा उमा को भात भरना है। गुरु जाम्भोजी वि.सं. 1572 अक्षय तृतीया (अपना तीज) के दिन अपने हजारों भक्तों व जोधपुर नरेश मालदेव सहित पहली बार रोटू ग्राम में पधारे थे। गुरु जाम्भोजी रथ से नीचे उतरने लगे, तभी पत्थर पर उनका चरण अंकित हो गया, जो आज भी रोटू मंदिर में स्थित है। भक्तजन पत्थर पर अंकित चरण के दर्शन कर सकते हैं।

गुरु जाम्भोजी ने उमा को रत्न जड़ित नौरंगी चीर उड़ाया। तभी से ही उमा का नाम नौरंगी पड़ गया। उमा का थाल हीरे, मोतियों से भर गया था तथा सभी प्रकार के भण्डार भर गये थे। रोटू ग्राम के लोग आनन्दित हुए तथा उमा का मान बढ़ाया। गुरु महाराज ने जब ग्राम रोटू में प्रवेश किया, उस समय उन्होंने एक सूखी खेजड़ी के पेड़ को हरा-भरा किया था। उस जगह अब साथरी बनी हुई है। सूखी खेजड़ी को हरा देखकर रोटू ग्राम के लोगों ने गुरु महाराज से प्रार्थना की कि हमारे यहां हरे वृक्षों का अभाव है। तब गुरु जाम्भोजी ने एक ही रात्रि में पूरे गांव की सीमा में खेजड़ियों का बाग लगा दिया था। साथ ही वरदान दिया कि इन खेजड़ियों पर बैठने वाले पक्षी आपके गांव की फसल को हानि नहीं पहुंचाएंगे। यह वरदान आज भी सिद्ध है। साथरी की खेजड़ी आज भी वैसी की वैसी साथरी में मौजूद है तथा उस समय की कुछ और भी खेजड़ियां रोटू ग्राम में मौजूद हैं।

गुरु महाराज के उनतीस नियम में एक नियम है - 'अमर रखावे थाट'। इस नियम का जीवन्त उदाहरण केवल इसी रोटू ग्राम में ही है। बकरो का थाट, जिनकी

देख रेख पूर्ण रूप से बिश्नोई ही करते हैं।

थालीये ओट दूदो मिलयो, तुठा सारा काज।

जब तब खाण्डो राख सी, तब लग निश्चल राज।।

मेड़ता के राव दूदा जी का राज्य चला गया था। गुरु जाम्भोजी के बारे में महिमा सुनकर राव दूदा गुरु जाम्भोजी से मिले तथा उस बारे में उन्हें बतलाया। गुरु जाम्भोजी ने आशीर्वाद के साथ खाण्डा दिया था तथा कहा जब तक खाण्डा रखोगे तब तक आपका राज्य निश्चल रहेगा। दूदा जी मेड़ते वापिस आए तो राज्य फिर मिल गया। कालान्तर में किसी अन्य व्यक्ति के ताने मारने से राव के वंशजों ने खाण्डा फेंक दिया जो कि आसोजी का डूंगरी पर जा गिरा। वह खाण्डा केशो जी को मिल गया तथा वह खाण्डा रोटू ग्राम के मन्दिर में रख दिया। आज भी उन्होंने वह खाण्डा रोटू ग्राम मन्दिर में विराजमान है। यात्रियों के आने पर दर्शन करवाते हैं तथा इसके दर्शन करने से भक्तों की मनोकामना पूरी होती है। शुरू से ही इस खाण्डा को मोहन जी भादू के पूर्वज व उनके उत्तराधिकारी संभाल रहे हैं।

साणीयां भूत को रोटू से भगाना: रोटू ग्राम के पेदड़ो नाम के व्यक्ति को कोई भूत-प्रेत चिपक गया। वह व्यक्ति भूत की शक्ति से लोगों को बातें बतलाता था जो कि सच होती थी तथा अपने आप को गुरु जाम्भोजी का छोटा भाई बतलाता था। भूत-प्रेत के चरित्र करने लगा, उस तरह लोग उसको स्याणा कहने लगे। इस प्रकार पाखण्ड देखकर वीरम भादू रोटू निवासी गुरु जाम्भोजी के पास सम्भराथल धोरे पर पहुंचे। वीरम भादू ने इस भूत-प्रेत के चरित्र बारे में गुरु महाराज को बतलाया। गुरु महाराज ने कहा यह तो चेड़ा है, अधोगति में पड़ा हुआ भूत-प्रेत की योनि का जीव है। उस प्रेत से छुटकारा दिलाने वास्ते गुरु महाराज रोटू ग्राम में पधारे। गांव के निकट साथरी में खेजड़ी वृक्ष के नीचे आसन लगाया। गुरु जाम्भोजी ने साणियों को बुलाने के लिए चार व्यक्ति भेजे। साणीयां रोटू गांव के पश्चिम की ओर टीले पर आसन लगाये बैठा था। साणीयां ने गुरु जाम्भोजी के पास जाने से इन्कार कर दिया। गांव के लोगों ने गुरु जाम्भोजी को आकर बतलाया कि साणीयां ने आने से इन्कार कर दिया। गुरु जाम्भोजी ने कहा कि तुम लोग दोबारा जाओ और हाथ पकड़कर धोरे से नीचे घसीट लेना। गांव के लोगों ने वापिस आकर साणीयां को आसन से उठाकर धोरे से नीचे घसीटा। तब वह बिना विरोध किए

गुरु जाम्भोजी के पास आ गया। गुरु जाम्भोजी ने पूछ साणीयां मुलतान के दरवाजे पर क्या है? तब साणीयां ने कहा वहां घोड़े दौड़ रहे हैं। फिर पूछ लंका के दरवाजे पर क्या है? तब उसने कहा वहां पर एक मालिन बैठी है, उसकी छबड़ी में चार नींबू हैं। गुरु जाम्भोजी ने दो नींबू उठा लिए, फिर पूछ अब कितने हैं? उसने कहा अब दो दिखाई दे रहे हैं। फिर दो नींबू और उठा लिए, फिर पूछ अब कितने हैं? साणीयां ने कहा अब तो छबड़ी खाली है। फिर जाम्भोजी ने पूछ अब वे नींबू कहां हैं। तो साणीयां ने कहा अब तो मालूम नहीं कहां हैं? गुरु जाम्भोजी ने कहा तुम मुलतान व लंका की बात बता रहे हो, परन्तु निकट की बात नहीं बता सकते। उसी समय पेरड़ो साणीयां के अन्दर से प्रेत निकल गया। इस तरह रोटू ग्राम से साणीयां भूत-प्रेत भगा दिया। जिस धोरे पर साणीयां भूत रहता था उसे अब टौकी धोरा कहते हैं। साणीयां को धोरे से नीचे घसीटने की घीसट आज भी टौकी धोरे पर देखी जा सकती है। अब वहां मन्दिर भी बना दिया है। वहां रहने की भी व्यवस्था है। वहां तक पक्की सड़क भी बन गई है।

जाम्भोजी का भ्रमण : गुरु जाम्भोजी ने भक्तों की इच्छा पूर्ति करने हेतु पूर्व की ओर गंगा पार जाने का निश्चय किया तथा चार हजार भक्तों के साथ सम्भराथल धोरे से प्रस्थान किया। सम्भराथल से चलके पहला पड़ाव गांव सांवतसर में जमात सहित निवास किया। दूसरे पड़ाव में रोटू गांव में पहुंचे। इससे पहले गुरु जाम्भोजी उमा के भात के समय रोटू पधारे थे। रोटू ग्राम पर तो गुरु जाम्भोजी का स्नेह सदा ही रहा था। इसलिए वहां पर पांच दिनों तक ठहरे थे जो जिसने सत वरदान मांगा उसकी इच्छा पूर्ण की थी। केवल रोटू गांव ही नहीं बल्कि वहां तो रामसर, गुगरिवाली, दुगैली, भरनाऊ व खारी आदि सभी गांवों के लोग गुरु जाम्भोजी से मिलने पधारे थे। रोटू गांव के लोगों को विशेष रूप से कहा कि तुम्हारे यहां तो त्रेता युग की तुलसी ये खेजड़ियां हैं। आप लोग इनकी रक्षा करना। ये तुम्हारी रक्षा करेगी। ये तुम्हें शीत-गर्मी से बचाएगी। तुम्हें जीवन का प्राण आधार यहीं से मिलेगा। इस प्रकार से रोटू गांव तथा आसपास के लोगों को उपदेश देकर गुरु जाम्भोजी ने अपने भक्तों सहित आगे के लिए प्रस्थान किया।

इस तरह तीर्थ धाम रोटू ग्राम में गुरु जाम्भोजी के चमत्कारों की भरमार है। आज भी मन्दिर में हवन के समय सुबह-शाम कम से कम 100 व्यक्ति उपस्थित रहते हैं तथा सबदवाणी की मधुर लहरें उठती हैं।

गुरु जाम्भोजी की तरह ही स्वामी चन्द्रप्रकाश जी सम्भराथल धोरा की भी रोटू ग्राम व मन्दिर पर विशेष कृपा

रही है। रोटू ग्राम मन्दिर काफी पुराना हो गया था। स्वामी चन्द्रप्रकाश जी ने रोटू ग्राम मन्दिर का पूर्ण निर्माण आवश्यक समझा तथा 15 अगस्त 1993 को उन्होंने रोटू मन्दिर के पूर्ण निर्माण की आधारशिला रखी व मन्दिर निर्माण का कार्य सभी के सहयोग से शुरू हुआ। मार्च 1996 में स्वामी चन्द्रप्रकाश जी ब्रह्मलीन हो गये। इसके बाद स्वामी चन्द्रप्रकाश जी के शिष्य स्वामी जुगती प्रकाश जी के दिशा निर्देशन में मन्दिर निर्माण कार्य चला। स्वामी जुगती प्रकाश जी स्वामी चन्द्रप्रकाश जी के समय से ही कार्य सम्भाल रहे थे। 14 फरवरी, 1999 में शिवरात्रि के दिन बिश्नोई रत्न स्व. चौ. भजनलाल जी व राजस्थान के लौह पुरुष स्व. रामसिंह बिश्नोई व अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में रोटू मन्दिर पर कलश स्थापित किया गया।

सम्पूर्ण भारत के बिश्नोई समाज का मन्दिर निर्माण में सहयोग रहा। मन्दिर निर्माण में अमीचन्द पूनियां ढाणी माजरा का सहयोग उल्लेखनीय रहा। इन्होंने लगातार चार-पांच वर्ष समय दिया। वह हरियाणा-पंजाब से धनराशि भी लाकर मन्दिर निर्माण में सहयोग किया। आज भी इनका परिवार मन्दिर के कार्यों में अपना सहयोग कर रहा है। मास्टर लेखराम माल व भाड़मल रोटू निवासी ने मन्दिर निर्माण का लेखा-जोखा तैयार करना व अन्य कार्यों में विशेष सहयोग किया।

साथरी जहां गुरु महाराज ने उमा के भात के समय विश्राम किया था, वहां भी यात्रियों के रहने की बहुत अच्छी व्यवस्था की हुई है। अब साथरी के मुख्य द्वार का निर्माण कार्य चल रहा है। मुख्य द्वार पर तीन गुम्बज बनाए गए हैं जिनकी लम्बाई लगभग 75 फुट है। वह उंचाई 41 फुट है। जोधपुर पत्थर से तैयार हो रहा है जो कि लगभग तीन महीनों में तैयार होने की उम्मीद है। इसके बाद इन गुम्बजों पर कलश की स्थापना की जाएगी। आज भी स्वामी जुगती प्रकाश के दिशा निर्देशन में कार्य चल रहा है। अक्षय तृतीया के दिन का रोटू ग्राम के लिए विशेष महत्व है क्योंकि इसी दिन गुरु जाम्भोजी प्रथम बार रोटू पधारे थे। उमा बाई का भात भरकर मान बढ़ाया। सूखी खेजड़ी को हरा करना व हजारों खेजड़ियों का बाग रोटू ग्राम में लगाना, पक्षियों का रोटू ग्राम की सीमा में दाना चुगना, पत्थर पर चरण चिह्न अंकित होना ये सभी चमत्कार अक्षय तृतीया के दिन ही हुए थे।

-मास्टर लेखराम माल

सदस्य मन्दिर कमेटी, रोटू ग्राम
तह.-जायल, जिला- नागौर (राज.)

मो. : 9468723856

हमारी स्वास्थ्य प्रणाली कितनी मजबूत है?

‘स्वास्थ्य का अधिकार’ शब्द का संविधान में कहीं भी उल्लेख नहीं है, फिर भी सर्वोच्च न्यायालय ने अपने विभिन्न निर्णयों के माध्यम से, इसे अनुच्छेद 21 में निहित जीवन के अधिकार के तहत एक मौलिक अधिकार के रूप में व्याख्यायित किया है। यह सर्वोच्च न्यायालय का एक महत्वपूर्ण विचार है कि पहले इसने भाग-4 यानी राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के तहत स्वास्थ्य के अधिकार की व्याख्या की और कहा कि यह राज्य का कर्तव्य है कि वह बड़े पैमाने पर लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल करे। अनुच्छेद 21 की व्यापक व्याख्या में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि स्वास्थ्य का अधिकार जीवन के अधिकार का एक अभिन्न अंग है और इसलिए भारतीय संविधान के तहत प्रदान किया गया मौलिक अधिकार है। अदालत ने सार्वजनिक स्वास्थ्य को बनाए रखने और सुधारने के लिए अधिकारियों के रूप में सकारात्मक दायित्वों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वास्थ्य देखभाल और स्वास्थ्य वितरण सुविधा की प्रणाली देश में इस तरह से डिजाइन की गई है कि इसका उद्देश्य पूरी आबादी को आवश्यक स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं प्रदान करना है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ आदिवासी आबादी, गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों, हिंसा के शिकार और हाशिए पर रहने वाले और कमजोर समूहों पर विशेष ध्यान दिया गया है। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य और वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य को मजबूत करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कुल आबादी का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों की स्वास्थ्य चुनौतियों को संबोधित करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, प्रमुख संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण और पारंपरिक और स्वदेशी दवाओं की प्रणालियों को बढ़ावा देने के क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण और जिम्मेदार है। इनके अलावा, मंत्रालय तकनीकी सहायता के माध्यम से मौसमी बीमारी के प्रकोप और महामारी के प्रसार को रोकने और नियंत्रित करने में राज्यों की सहायता भी

करता है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय या तो सीधे केंद्रीय योजनाओं के तहत या स्वायत्त/सांविधिक निकायों आदि और गैर सरकारी संगठनों को सहायता अनुदान के रूप में खर्च करता है। 100% केंद्र प्रायोजित परिवार कल्याण कार्यक्रम के अलावा, मंत्रालय नामित क्षेत्रों में एड्स, मलेरिया, कुष्ठ, क्षय रोग और दृष्टिहीनता के नियंत्रण के लिए विश्व बैंक द्वारा सहायता प्राप्त कई कार्यक्रमों को लागू कर रहा है। इसके अलावा, विश्व बैंक की सहायता से राज्य स्वास्थ्य प्रणाली विकास परियोजनाएं विभिन्न राज्यों में कार्यान्वित की जा रही हैं। परियोजनाएं संबंधित राज्य सरकारों द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग केवल राज्यों को बाहरी सहायता प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करता है। इन सभी योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं तक पहुंच में सुधार के लिए राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को पूरा करना है जहां बीमारी की घटनाएं अधिक हैं।

कोविड-19 महामारी के मद्देनजर भारत दुनिया में कोविड-19 के खिलाफ सबसे बड़ा टीकाकरण कार्यक्रम चला रहा है। कोवैक्सीन और कोविशिल्ड दो टीके हैं जिन्हें कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम के तहत रोल आउट किया गया है, जिनका निर्माण भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड द्वारा क्रमशः भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के सहयोग से किया गया है। भारत ने कई देशों को लाखों कोरोना वैक्सीन की खुराक और आपूर्ति करके इस मुश्किल समय में मानवता के प्रति अपने दायित्व को पूरा किया है। इस कार्य के लिए विश्व स्तर पर भारत पर बरस रही वाहवाही के साथ-साथ हमारी सदियों पुरानी सांस्कृतिक परंपरा ‘सर्व संतु निरामया’ का सार हमारे प्रयासों को शक्ति प्रदान कर रहा है। कोविड-19 महामारी को रोकने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए भारत सरकार की प्रतिक्रिया का आधिकारिक तौर पर स्वास्थ्य पर संसदीय स्थायी समिति द्वारा मूल्यांकन किया गया था जिसमें समिति ने सिफारिश की थी कि

सरकार एलोपैथी को भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के साथ एकीकृत करने के लिए हर संभव प्रयास करेगी।

भारत के 104 मिलियन आदिवासी लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवा में सुधार स्वास्थ्य और पोषण लक्ष्यों को पूरा करने की देश की क्षमता के लिए एक बड़ी चुनौती है। भारत की कुल आबादी की तुलना में आदिवासी समुदाय उच्च मातृ और पांच वर्ष से कम उम्र के लोगों की मृत्यु दर से पीड़ित हैं। बौने, कमजोर और कम वजन वाले बच्चे, मलेरिया और तपेदिक की घटनाएँ, मधुमेह, हृदय रोगों और उच्च रक्तचाप का एक उच्च और बढ़ता बोझ। आकांक्षी जिले कार्यक्रम के द्वारा आदिवासी आबादी के समग्र कल्याण को मुख्य धारा में लाने का प्रयास करते हैं जिसमें इन जिलों के समग्र मूल्यांकन में 'स्वास्थ्य और पोषण' को प्रमुख संकेतकों में से एक के रूप में बनाए रखा जाता है। इन जिलों में प्रशासन के सभी स्तरों पर सहयोग, स्वास्थ्य संकेतकों की रीयल टाइम ई-मॉनिटरिंग और जनभागीदारी के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त करने के प्रयास काफी हद तक सफल रहे हैं। स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाने और जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए इन जिलों में ममता ब्रिगेड, जन्म साथी कार्यक्रम, जन्म प्रतीक्षा गृह, सास-बहू सम्मेलन, किलकारी: टैबलेट आधारित आईईसी, लाइफलाइन एक्सप्रेस और सिरहा

गुण सम्मेलन जैसी अनूठी पहल की गई हैं। केंद्रीय बजट 2021-22 के मूल में स्वास्थ्य और भलाई को रखकर सरकार ने बजट आवंटन के पैटर्न में एक क्रांतिकारी बदलाव की शुरुआत की है। इस बजट ने स्वास्थ्य और भलाई को विकास और विकास के छह मूलभूत स्तंभों में सबसे शीर्ष के रूप में स्वीकार किया है और स्वास्थ्य के समग्र क्षेत्र के साथ-साथ स्वास्थ्य को प्रमुखता से रखा है। आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21 ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में परिकल्पित स्वास्थ्य सेवाओं पर सार्वजनिक खर्च को जीडीपी के 1 प्रतिशत से बढ़ाकर 2.5-3 प्रतिशत करने की जोरदार सिफारिश की है। यह नोट करता है कि यह आउट-ऑफ-पॉकेट-व्यय (ओओपीई) को काफी कम कर सकता है जो कुल स्वास्थ्य देखभाल खर्च का 35 प्रतिशत है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता है, तमाम चुनौतियों के बावजूद भारत ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में स्वास्थ्य क्षेत्र में कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं और दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

—सलिल सरोज

जी0006, टॉवर 3, वैशाली, सैक्टर 3,
नजदीक नवीन अस्पताल, गाजियाबाद (यू.पी.)

मो.: 9968638267

लेखकों से अनुरोध है कि.....

- ❖ अमर ज्योति के जन्माष्टमी विशेषांक हेतु अपना लेख 10 अगस्त, 2021 से पहले अमर ज्योति कार्यालय में भेजने की कृपा करें।
- ❖ जांभाणी सिद्धान्तों व विचारधारा का प्रसार-प्रचार ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है। लेखक अधिकाधिक इसी उद्देश्य के आलोक में लिखकर भेजें।
- ❖ अपने लेखों में जंभवाणी के उद्धरण देते समय उसका मूल से मिलान अवश्य करें व कोष्ठक () में सबद क्रम संख्या भी लिखें।
- ❖ विभिन्न संदर्भ ग्रंथों के उद्धरण देते समय भी कोष्ठक () में उनका संदर्भ लिखें।
- ❖ विशेषांक हेतु भेजे जाने वाला लेख 1500 शब्दों (अमर ज्योति के तीन पृष्ठों) से अधिक न हो इससे अधिक होने पर लेख को क्रमशः छापा जाएगा।
- ❖ विभिन्न जांभाणी मेलों, उत्सवों व सामाजिक गतिविधियों का विवरण भेजते समय ध्यान रखें कि आपकी सामग्री 10 तारीख तक पत्रिका कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए, क्योंकि पत्रिका 15 तारीख तक मुद्रण हेतु भेज दी जाती है।
- ❖ लेख टाइप करके भेजें तो अधिक अच्छा होगा, अन्यथा बाई ओर दो इंच का हाशिया छोड़कर साफ सुथरा लिखकर भेजें।
- ❖ लेख के साथ मौलिकता का प्रमाण-पत्र भेजना अनिवार्य है।
- ❖ लेख फॉन्ट AAText, Kruti Dev, Devnagri में टाइप करके ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। पत्रिका का ई-मेल पता है- editor@amarjyotipatrika.com
- ❖ लेखक लेख के साथ अपना पूरा पता, दूरभाष नं., यदि हो तो ई-मेल पता भी आवश्यक रूप से लिखें।

—सम्पादक



भारत कृषि प्रधान राष्ट्र है, जहां तीन-चौथाई जनसंख्या खेती पर निर्भर है। बाकी जनसंख्या भी किसी न किसी रूप से खेती से जुड़ी हुई है और इस पर या इसके उत्पादों पर निर्भर है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही खेती होती आयी है इसके प्रमाण प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों में भी मिलते हैं और प्राचीन ग्रंथों में भी। वेदों तक में खेती का महत्व बताया गया है क्योंकि यह लोगों, पालतू पशुओं का भोजन और आजीविका का मुख्य साधन है। बिश्नोई समाज भी मूलतः कृषि और पशुपालक समाज ही रहा है। तो क्या ऐसा हो सकता है कि गुरु जाम्भोजी ने खेती के बारे में हमें कोई दिशा-निर्देश ना दिए हों या जाम्भाणी साहित्य में इसका वर्णन ना हों। गुरु जाम्भोजी ने अपनी सबदवाणी में प्रकृति, बारिश, धरती, वनस्पति, जीवों, खेती, जमीन, किसानों, कृषक जीवन, बीज, अनाज, जल, रखवाली, पशुपालन, बैलों, खेती की मर्यादा का सुंदर वर्णन किया है। तो आओ आज इसी विषय पर ही चर्चा करते हैं और जानने की कोशिश करते हैं कि गुरु जाम्भोजी ने हमें किस तरह की खेती करने की शिक्षा दी थी और हमें बिश्नोई पंथ के सिद्धान्तों के अनुसार किस तरह की खेती करनी चाहिए।

बिश्नोई पंथ के 29 नियमों में से एक नियम है, 'अमर रखावे थाट बेल बधिया ना करावे' जिसका अर्थ है नर पशुओं के लिये शरणस्थल बनाएं (ताकि वो बेमौत नहीं मरें और बेल को खस्सी (नपुसंक) नहीं बनाएं।)

एक अन्य नियम है- 'जीव दया पालनी, रूख लीलो नही घावे' जीवों पर दया करें और हरे वृक्ष नहीं काटें। यानी हमें खेती करते समय भी यह ध्यान रखना है कि जीवों पर दया करें, चाहे वो बछड़ा, पाडा, बैल, ऊंट ही क्यों ना हो। पशुपालन के समय भी यही दया का भाव रखना है। दूध ना देने वाली गाय, भैंस को घर से निकालना पाप है, क्योंकि वह अबोल पशु भी भूखा-प्यासा भटकता हुआ, बूचड़खानों की भेंट चढ़ जाता है। इसी तरह हरे वृक्ष नहीं काटने हैं। वन के हरे वृक्ष तो बिल्कुल ही नहीं काटने हैं। कटे हुए पेड़ों के बदले में और नए पेड़ लगाएं। जो लगे हुए पेड़ हैं उनकी देखभाल और रक्षा करें।

संध्या मंत्र में कहा है- 'भूख को पालन अन्न अहारू' यानी भूख की पूर्ति/निवारण अन्न से ही हो सकती है और अन्न खेती से ही उत्पन्न होता है।

सबद 3 में आया है- 'जिहिं हाकणड़ी बलद जूं हाके' यानी जो बेल हांकने की साधारण लकड़ी होती है....

सबद 9 में कहते हैं- 'भाई नाउँ बलद पियारो, ताके गले करद क्यूं सारो' जिसका अर्थ है, बैल तो भाई से भी अधिक प्रिय होता है, उसके गले पर छुरी/तलवार क्यों चलाते हो? यानि हमें बैलों पर कोई अत्याचार नहीं करना चाहिए। लेकिन देखा गया है कि हम किसान लोग बछड़े को उसके हक का दूध भी नहीं पिलाते हैं और उस कमजोर बच्चे को घर से निकाल देते हैं, जो भूखा-प्यासा दर-दर की ठोकरें खाता हुआ, बूचड़खाने तक पहुंच जाता है। हमें ऐसा करने की बजाय उनकी घर में ही या नंदीशाला बनाकर रक्षा और देखभाल करनी चाहिए।

सबद 15 में गुरु जाम्भोजी समझाते हैं- 'सो पति बिरखा सींच प्राणी, जिहिं का मीठा मूल समुलुं'

हे प्राणी, उस वृक्ष को मधुर जल से सींच जिसके फल, फूल, समूल ही मीठे हों (किसी के काम आते हो) यानी हमें अपनी फसल, पेड़ों को समय से और अच्छे जल से सिंचित करना चाहिए ताकि हमें फल भी अच्छे ही मिलें।

सबद 18 में गुरु जाम्भोजी कहते हैं- 'मरणत माघ संघारत खेती, के के अवतारी रोवत राही' जिसका अर्थ है पेड़-पौधों, फसल पर आये हुए फूल, मंजरी, फल इत्यादि नष्ट होते हैं तो किसान रोता है और अवतारी पुरुष भी रोते हैं।

सबद 20 में जाम्भोजी बताते हैं- 'जां जां दया न मया, तां तां बिकरम कया'

यानी किसी भी कार्य में जहां दया और ममता नहीं होती है वहां शुभ कर्म नहीं हो सकते हैं और यह बात खेती और पशुपालन के कार्यों में भी लागू होती है।

सबद 22 में गुरु जाम्भोजी कहते हैं- 'आभे अमी झुरायो, कालर करसण कियो'

यानी जब आसमान अमृत रूपी बारिश करता है तो कल्लर (ऊसर) भूमि भी कृषि योग्य और उपजाऊ हो जाती है। लेकिन फिर भी अगर किसान समय पर खेती नहीं करता है तो गलती उसी की है। यहां हमें यह भी सीख मिलती है कि खेती का हर कार्य समय पर ही करना चाहिए, आलस्य नहीं करना चाहिए।

इसी सबद में गुरु जाम्भोजी आगे कहते हैं- 'अइया उत्तम खेती, को को इमरत रायो, ...को को कछु कमायो' जिसका अर्थ है कि जब अमृत रूपी वर्षा, उत्तम भूमि पर पड़ती है, तो बीज के अनुसार ही खेती, फसल होती है। कहीं गन्ना, कहीं निम्बोली, कहीं ढकोली, कहीं तुम्बा, कहीं आक। क्योंकि 'ताका फल बीज कूबीजू, तो नीरे दोष किसायो' यानी अगर बीज ही अच्छे नहीं होंगे तो जड़ें, टहनियां, पत्ते, फूल, फल अच्छे और मीठे नहीं होंगे, भले ही कितनी ही बारिश हो। इसमें बारिश का (पानी का) क्या दोष है। यहाँ हमें यह शिक्षा मिलती है कि अच्छे बीजों को छंटकर, भंडारण कर, उपचारित करके प्रयोग में लाना चाहिए ताकि फसल और फल अच्छे हो।

'क्यूं क्यूं भये भाग ऊणा, क्यूं क्यूं कर्म बिहुणा, .. याकें कर्म इसायो, तो नीरे दोष किसायो'

किसी के भाग्य खराब होने से तो किसी के कर्म खराब होने से ही खराब फल मिलता है। जैसे कर्म होंगे वैसे ही फल मिलेंगे, तो इसमें वर्षा या पानी का दोष नहीं है। यानी हमें खूब मेहनत, लग्न, स्नेह से समय पर खेती करनी चाहिए। नोट: भाग्य भी कर्म के अनुसार ही होता है, चाहे इस जन्म के कर्म हो या पिछले जन्म के।

सबद 30 में गुरु जाम्भोजी कहते हैं- 'भोम भली, किरसाण भी भला, बूठो है जहां बाहिये ॥ किरसण करो स्नेही खेती, तिसिया साख निपाइये।'

जिसका अर्थ है, जब भूमि अच्छी हो, तैयार की हो, किसान भी अच्छा हो, बारिश होने पर (या पानी लगाकर) समय से तैयारी के साथ, अच्छे बीजों द्वारा मेहनत और स्नेह से खेती करता है, तो फसल निश्चित रूप से अच्छी होगी और उसका सम्मान भी बढ़ेगा।

'लुण चुण लियो, मुरातब कियो, कण काजे खड़ गाहिये। कण तुस झेड़ो, होय नवेड़ो, गुरुमुख पवन उड़ाइये। पवणा डोलै तुस उड़ेला, कण ले अर्थ लगाइए।'

जिसका शब्दार्थ है, जब फसल पक कर तैयार हो जाती है, तो उसे चुन-चुन कर इकट्ठा किया जाता है और दाने निकालने के लिए गाहटन किया जाता है, फिर हवा की मदद से गुरु का ध्यान करके दाने को भूसे से अलग किया जाता है और अन्न के दाने को एकत्र कर सतकार्य में ले लिया जाता है।

सबद 31 में गुरु जाम्भोजी कहते हैं- 'भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं तरवर मेलत डालू'

जिसका शाब्दिक अर्थ है, है प्राणी भली मूल को सींचो, जिससे वृक्ष बढ़ा होकर अच्छे फल देगा। इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है, कि हमें अच्छे पौधों की समय से सिंचाई करनी चाहिए ताकि वो फल दें। खेती के संदर्भ में खराब पौधे खरपतवार हो सकते हैं, जिन्हें सींचने की बजाय समय पर निकाल कर उपयोग कर लेना चाहिए ताकि अच्छे पौधों (फसल को) को अधिक पानी और खाद मिल सके। यहाँ इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि हमें वर्जित (गैरकानूनी) पौधों की खेती या गैर कानूनी खेती नहीं करनी चाहिये।

सबद 34 में गुरु जाम्भोजी कहते हैं- 'फुरण फुंहारे कृषणी माया, घण बरसन्ता सरवर नीरे। तिरी तिरंते तीर। जे तिस मरे तो मरियो'

जिसका अर्थ है कि ईश्वर की कृपा से बादल फुहारों के रूप में बारिश करते हैं, जिससे तालाब भर जाते हैं। कुछ तैराक इन तालाबों में नहाकर, तैर कर पार भी निकल जाते हैं और कुछ आलसी और डरपोक लोग तालाब में पानी के होते हुए प्यासे ही मर जाते हैं। इसका एक अर्थ यह भी हो सकता है कि हमें वर्षा के जल का संचय कर उसका सदुपयोग करना चाहिये।

'खेत मुक्तले कृष्णो अर्थो, जे कंध हरे तो हरियो।'

यानी ईश्वर के प्रति समर्पण भाव से उत्तम खेती करते हुए अगर मेहनत की वजह से कंधों में दर्द हो तो भी मेहनत करते रहना चाहिए क्योंकि इसका फल मीठा ही मिलेगा।

सबद 42, 'घड़े उधे बरसत बहुमेहा, तिहमा कृष्ण चरित बिन पड्यो न पड़सी पाणी' भी हमें यह शिक्षा देता है कि बारिश के पानी को सूझबूझ से संचय और संरक्षण करना चाहिए क्योंकि यह बहुत कीमती है। ऐसा ही हमें सभी तरह के जल के साथ भी करना चाहिए। जल को बेकार नहीं बहने देना चाहिए।

सबद 56, 'दान सुपाते, बीज सुखेते, अमृत फूल फलिये'

दान सुपात्र को देना चाहिये और खेत को तैयार करके, उपजाऊ बनाकर, समय पर ही बीज डालना चाहिये, तभी अमृत फूल रूपी फल मिलेगा।

सबद 62, 'एक जूं औगुण रामे कियो, अणहुंतो मिरघो मारण गइयो'

जब लक्ष्मण शक्तिबाण से घायल हो जाते हैं तो राम

उन्हें कुछ संभावित दोष गिनाते हुए पूछते हैं कि क्या तुमने फलां-फलां दोष किये। तो लक्ष्मण उन सब दोषों को नकारते हुए कहते हैं कि मैंने तो नहीं लेकिन हे राम, एक दोष आपने अवश्य किया था कि एक हिरण (नकली हिरण) को मारने के लिये गए थे। इससे हम किसानों को भी शिक्षा मिलती है कि हमें ब्लेड वाली तारों लगाकर और कुत्ते छोड़कर बेचारे हिरणों और वन्य जीवों को मारना नहीं चाहिए। हमें अपनी खेती की रखवाली और रक्षा का अधिकार है, लेकिन उसके लिये किसी जानवर को मारने का अधिकार नहीं है।

सबद 70, 'भल बाहीलो, भल बीजीलो, पवणा बाड़ बुलाई, जीव के काजे खड़ो ज खेती। तामें ले रखवालोंने भाई'

इसका शाब्दिक अर्थ है कि हमें जमीन को अच्छी तरह तैयार करके, अच्छे बीज बोकर, चारों ओर बाड़ बनाकर उस खेती की रखवाली भी करनी है, तभी फसल बचेगी। इससे यह तो स्पष्ट है कि किसानों को बाड़ लगाकर अपनी खेती की रक्षा करना जायज है, लेकिन ब्लेड वाली तारों लगाकर जीवों को मारना, घायल करना गलत है। इस हिसाब से तो बाड़ या करंट वाली तार ही बेहतर है, जिससे जंगली जीव डर के भाग जाते हैं लेकिन घायल नहीं होते हैं, मरते नहीं हैं।

सबद 85, 'भोम भली, कृसाण भी भला, खेवट करो कमाई'

अच्छी उपजाऊ भूमि हो (या उसे उपजाऊ बनाया जाये), किसान भी समझदार और मेहनत से कमाई करें, फसल की चोरों से रक्षा करें तो अच्छी फसल अवश्य होगी।

सबद 108, 'हालीलो, भल पालीलो, सिध पालीलो, खेड़त सुना राणो। चंद सूर दोय बैल रचिलो, गंग जमन दोय रासी। संत संतोष दोय बीज बीजीलो, खेती खड़ी आकाशी। चेतन रावल पहरे बैठे, मृगा खेती चर नहीं जाई। गुरु परसादे, केवल ज्ञाने, सहज स्नाने, यह घर रिद्ध सिद्ध पाई।'

यहां गुरु जाम्भोजी किसान और खेती का उदाहरण देते हुए साधना करने वाले साधकों को समझा रहे हैं कि हे किसानों, अच्छे से जमीन तैयार करके, बेलों को नियंत्रित करके, सच्चाई और संतोष रूपी अच्छे बीज बोकर खेती करोगे और उसकी चोरों से रखवाली करोगे तो खेती

आकाश को छुएगी (बढ़िया होगी) और घर-परिवार में रिद्ध-सिद्ध आएगी।

सबद 111, 'खरड़ ओढीजे, तुम्बा जीमीजे, सुरहे दुहिजे, कृत खेत की सींव में लीजे, पीजे ऊंडा नीरुं' जिसका अर्थ है कि मोटा पहने, मोटा खाएं, गौपालन करें, और अपनी सीमा में ही खेती करें। यानी उन्होंने हमें सादा, सहज, स्वस्थ जीवन और खानपान का कहा और अपनी सीमाओं, मर्यादाओं का पालन करने को कहा। देखा गया है कि कुछ किसान अपनी सीमा से बाहर जाकर दूसरे किसान के खेत में (या सरकारी जमीन पर) चोरी छिपे, धोखे, जोर-जबर्दस्ती से खेती कर लेते हैं। गुरु जाम्भोजी ने उन्हें ऐसा करने के लिये मना किया है। हमें अपनी सीमाओं, मर्यादाओं में ही रहना चाहिए चाहे वो सीमा देश की, खेत की, कानून की, पंथ की, परिवार की ही हो।

अगली कड़ियों में हम चर्चा करेंगे कि प्राचीन कृषि पद्धति (वैदिक/ऋषि कृषि) कैसी थी, फिर साठ के दशक में हरित क्रांति के नाम पर क्या हुआ और सत्तर के दशक में विश्व में और बाद में भारत में प्राकृतिक और जैविक खेती की आवाज क्यों उठी और अब क्या स्थिति है? विदेशों में खेती कैसे की जाती है?

हम इन सब कृषि विधियों का विस्तार से वर्णन करके, चुन चुन लिया रत्ना मोती लेकर ऐसी कृषि विधि के बारे में बताएंगे जो गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं और जांभाणी मूल्यों के अनुसार हो, धरती, जल, वायु, पर्यावरण, स्वास्थ्य, अन्य जीवों को नुकसान पहुंचाने वाली ना हो, सहज, रासायनिक जहर मुक्त, किसान हितैषी और टिकाऊ हो।

हमने ऐसी खेती को उत्तम खेती का नाम दिया है। इसके लिये हम जैविक-प्राकृतिक खेती के सिद्धान्त, इतिहास, विधि, प्रचलन, लाभ, चुनौतियाँ, सावधानियाँ, कचरे से जैविक खाद और जैविक कीटनाशक, खरपतवारनाशक कैसे बनाएं, धरती को उपजाऊ, फसल उत्पाद को स्वास्थ्य वर्धक और लाभदायक कैसे बनाये इत्यादि पर चर्चा अगली कड़ियों में जारी रखेंगे ताकि हम उत्तम खेती कर सकें।

-आर.के. बिश्नोई

गांव लाडाणा, तह. सूरतगढ़,
जिला श्री गंगानगर, राजस्थान
मो.: 9899303026

E-mail: bishnoirk@gmail.com

अंतिम रानी ने बारहवीं के पेपर दे दिए थे। अब वह अट्टारह वर्ष की होने जा रही थी। शाम को घर में अक्सर उसकी शादी को लेकर खुसर-फुसर होने लगी थी। कुछ दिनों बाद एक अफसर नुमा आदमी अपने एक साथी को लेकर उनके घर आया। उसने मंहगे चश्मे के पीछे से झांकती बड़ी-बड़ी आंखों से उसकी तरफ घूर कर देखा, वह डर सी गई थी। उसने दो तीन बातें पढ़ाई के बारे में पूछी, एक कप चाय के साथ बिस्किट लिया, कुछ इधर-उधर की बातें करने के बाद वे दोनों चले गए। शाम को जब घर में फिर से वही खुसर-फुसर हो रही थी तभी उसका फोन आया। कुछ बातें हुईं हां हैं... ठीक है... जल्दी ही... शुक्रिया..राम राम... जैसे शब्द घर-आंगन में गूंजते रहे। अब अम्मा और पिताजी के चेहरों पर चमक साफ दिखाई देने लगी थी। कुछ ही दिनों बाद मेंहदी लगी, पांच दस औरतों ने बिगड़े सुरों में गीत गाए, मुट्ठी भर बराती, छोटा-सा टेंट, मंहगे कपड़े, सहेलियों की अल्लहडूपने की बातों के साथ... वह मंगलसूत्र पहनकर काले शीशे वाली लम्बी-सी गाड़ी में बैठ उस अफसर की पत्नी बन कर चली गयी।

वह लड़का नहीं आदमी था। जहां उसे जितना जल्दी हो सके लड़की से औरत बन जाना था। उसकी बड़ी-सी कोठी के हर कमरे में पहले वाली पत्नी की तस्वीरें लगी थी। वह अक्सर उन तस्वीरों के आगे उदास खड़ा रहता। जब बाजार जाता तो दुआ सलाम करने वाले बहुत मिलते, अंतिम ने बहुत बार उसका हाथ पकड़ कर साथ-साथ चलने की कोशिश की मगर उसके हाथ में कोई कसावट नहीं होती थी। बस एक मरा हुआ-सा अनुभवी हाथ ही होता। वह चाहती थी कि किसी लड़के जैसा चंचल हाथ हो, जिसमें खूब सारी शरारतें हो, खुशबू हो, मगर यहाँ तो एक पका हुआ हाथ था। जिसकी उंगलियां मरी हुई गिलहरी की तरह लटकी हुई थी। एक दिन वह छत पर कपड़े सुखा रही थी, उसने गीली कमीज को जोर से झाड़ा तो कोहरे जैसी बूंदें हवा में तैर गयी, साहब पास ही कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे थे। उनके चश्मे पर कोहरा-सा जम गया था। उन्होंने लगभग खीजते हुए कहा- 'दूर जाकर झाड़ लिया करो! सारा दिन मेरे सिर पर ही नाचती रहती हो', उस दिन वह सच में अंदर से मर गई थी। वह तो चाहती थी कि साहब कुर्सी से उठते, अखबार को दूर पटकते, मेरे पीछे भागते कपड़े सुखाने में मदद करते और वह गीले हाथों से उनके गाल दबाती मगर सब बेकार था।

एक लड़की के लिए पति के रूप में पहली च्वाइस लड़का ही होता है, न कि आदमी!! बाहर डोरबेल बजी, उसने तेज

कदमों से चलकर दरवाजा खोला, बाहर पिताजी और अम्मा खड़े थे, वह लगभग चीखते हुए उनसे लिपट गई, उसकी किलकारियों से सारा घर गूँज उठा जैसे वर्षों बाद आज घर बोल उठा हो। आवाजें सुनकर, साहब बाहर आए, वह सोच रही थी कि वे सास-ससुर के चरण स्पर्श करेंगे लेकिन उन्होंने सिर्फ हाथ जोड़कर नमस्कार ही किया, पता नहीं क्यों ये सब अंतिम को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सारा घर घूम-घूमकर देखा खुशी उनके चेहरों और बातों में साफ झलक रही थी। किचन, बेडरूम, ड्राइंगरूम, टॉयलेट, बाथरूम, ड्रेसिंग टेबल, पर्दे, सोफासैट और टेडीबियर (जिसे वह अक्सर छाती में दबा कर सोती हैं) सब चीजों को छू-छूकर देखा गया। चाय पानी के बाद पिता जी बोले- 'बेटी तेरी खुशी देखकर लगता है ईश्वर नाम की चीज धरती पर जरूर होती है, अब तो बस बेटे के लिए भी ऐसा ही घर मिल जाए तो सारी समस्या से मुक्त हो जाऊं, क्लर्क की नौकरी में उसका नम्बर आ ही गया है। बस पोस्टिंग बाकी है।'

वह बोली- 'पापा हमारे सामने वाले घर में एक लड़की है हमारी बिरादरी की ही है, आप कहो तो बात चलाऊं!!!' पिता जी ने खिड़की का पर्दा हटाकर सामने वाले घर की तरफ देर तक देखा, घर तो बहुत शानदार बना हुआ है बेटी!! लड़की क्या करती है, दिखने में कैसी है? बहुत सुन्दर है पापा!!, उम्र भी लगभग पच्चीस साल की है, दो साल पहले ही विधवा हुई है, कोई बच्चा भी नहीं है, बेचारी का पति एक्सीडेंट में मर गया, यहाँ मेरे घर अक्सर आ जाती है, मेरी पक्की सहेली भी बन गई है।' अंतिम ने ढेर सारी बातें एक ही सांस में कह डाली!! उसकी बातों ने पिता जी के पंखों को एक ही पल में कुतर दिया। वे अपनी असहजता को लपेटकर बोले- 'पागल हो गई हो! एक विधवा से मेरे बेटे की शादी करूंगा.. हट...कुंआरी लड़कियां मर गई है क्या धरती पर? अंतिम से कुछ नहीं बोला गया वह बस इतना ही कह सकी।' सचमुच पिता जी, धरती पर लड़कियां मर ही तो गई हैं और मरती ही जा रही हैं। जैसे एक दिन मैं लाश बनकर इस घर में आई थी, मेरे पास एक पिता की हां में हां मिलाने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं था। 'पिताजी ने पर्दा खींचकर सामने वाले घर से आ रहे डर को ढक दिया था।

-सुरेन्द्र सुंदरम्

हिन्दी व्याख्याता, शिक्षा विभाग, राजस्थान
एस.पी.-19, पंजाबी सिटी, श्री गंगानगर, राजस्थान
मो.: 9414246712, E-mail: surender.sundaram@gmail.com

नारी ओ नारी

नारी ओ नारी
तू पड़े सब पे भारी ।
कदमों में तेरे ये दुनिया सारी
नारी ओ नारी ॥
दुर्गा का रूप है नारी
शक्ति की पहचान है नारी ।
घर संसार की ढाल है नारी
नारी ने ही तो ये दुनिया संभाली ॥
सामने जिसके पड़ जाये सूर्य का तेज भी कम
वो ज्वाला है नारी ।
चंद्र की शीतलता, हवा की चंचलता और
धरती की सुंदरता
का अनोखा स्वरूप है नारी ॥
नापने के लिए जिसे, पड़ जाये समुद्र भी कम
वो गहराई है नारी ।
आसमान छुने का संकल्प ले बेटी है जो
वो मजबूत चट्टान है नारी ॥
पार करे पत्थर और चुनौतियां रास्तों की सारी उसने
वो हिम्मत न हारी ।
तू एसी महान शक्ति है नारी
जिसके आगे नतमस्तक दुनिया सारी ॥
नारी ओ नारी, नारी ओ नारी
तू पड़े सब पर भारी, तू पड़े सब पर भारी ॥

-रेभा बिश्नोई

सुपुत्री श्री भंवरलाल बिश्नोई
ग्रेटर नोएडा (यू.पी.)

करड़ो आयो कोरोना

कोरोना आय कड़कियो, अपने देशों आज ।
सम्पर्क दूरी रखतां लड़णों, रोज समझावै राज ॥1 ॥
कोरोना ने कापणों, म्हारी मानलो मीत ।
निज चित एकांत राखतां, जंग में रहसी जीत ॥2 ॥
ओ जीवन अनमोल है, डर सूं बैड़ा पार ।
डिस्टेंस हर डगर पै, जग में जय-जयकार ॥3 ॥
प्रणाम करो प्रेम सूं, हाथ जोड़त हजूर ।
हिवड़े वाले हेत ने, मन में करो मंजूर ॥4 ॥
घर में रहतां विष्णु जपतां, वाद-विवाद घण दूर ।
सुख समृद्ध दाता देसी, खुशहाली भरपूर ।
ध्यान गुरु का धरता रहणों, हरी हाजर हजूर ॥5 ॥
हाथ धोवो हेत सूं, साबुन लगावत साफ ।
दूरी मीटर दोय री, जग में मोटो जाप ॥6 ॥
काया कंचन निरोग रहे, समझो जीवन सार ।
जबर वचन है जीवन रो, सब मुख मास्क लो धार ॥7 ॥
स्नान सैनिटाइजर रो, प्रीत धर्म री पाल ।
कर जोड़ बंशी कहे, जग रा मिते जंजाल ॥8 ॥

-डॉ. बंशीलाल ढाका बिश्नोई

इंदिरा कोलोनी, बाड़मेर

मो.: 7665958429

बधाई शुभकामनाएं



अंकित गोदारा सुपुत्र श्री छबीलदास गोदारा (Retd. Dy. Collector Irrigation Dept. Haryana)
निवासी गाँव सारंगपुर हाल निवासी न्यू ऋषि नगर हिसार की नियुक्ति भारतीय रेलवे में जूनियर
इंजीनियर के पद पर हुई है। आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व
अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

हम बेसिक साइंस के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण समय के अवसर पर इससे जुड़े हुए आयामों पर चर्चा कर रहे हैं। वर्तमान महामारी के दौर में मेडिकल साइंस और इससे जुड़े हुए रिसर्च बहुत महत्वपूर्ण नजर आ रहे हैं। पिछले कुछ अंकों से हम इस विषय पर चर्चा कर रहे हैं कि साइंस में 12वीं या स्नातक करने के बाद आगे की पढ़ाई में कौन-कौन आयामों को हम छू सकते हैं। भारत में कुछ प्रतिष्ठित संस्थान जहां पर परास्नातक और अनुसंधान में यदि हम प्रवेश लेते हैं तो हम भारत के चुनिंदा लोगों की श्रेणी में खड़े हो जाते हैं। इन संस्थानों पर ही भारत में साइंस में शोध की नींव पड़ी है और कुछ उच्च श्रेणी के वैज्ञानिक यहीं से हमें प्राप्त हुए हैं और आज भी साइंस के क्षेत्र में यह अपना विशेष महत्व रखते हैं।

पिछले अंक में हमने कुछ प्रवेश परीक्षाओं के नामों की चर्चा की थी जिनके बारे में आप विस्तार से समझेंगे। यदि बेसिक साइंस के टेस्ट (NEST) नेशनल एंट्रेंस स्क्रीनिंग टेस्ट की बात करें जिसके आधार पर (NISER) नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च, भुवनेश्वर और (UM & DAE & CEBS) यूनिवर्सिटी ऑफ मुंबई- डिपार्टमेंट ऑफ एटॉमिक एनर्जी-सेंटर फॉर एक्सिलेंस एंड बेसिक साइंस मुंबई के लिए होता है। यह टेस्ट 12वीं के छात्रों के लिए 5 वर्षीय एमएससी इंटीग्रेटेड डिग्री के लिए होता है। बायोलॉजी, केमिस्ट्री, मैथ, फिजिक्स से जुड़ी हुई डिग्री होती है। इसी टेस्ट के आधार पर, परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत NISER और HBNI (होमी भाभा नेशनल इंस्टीट्यूट डीमड यूनिवर्सिटी) से भी संबंधित है। यहां प्रवेश लेने पर विद्यार्थी को प्रतिवर्ष *60000 स्कॉलरशिप भी दी जाती है। NISER भुवनेश्वर में 200 सीटों और CEBS में 57 सीटों के लिए प्रवेश परीक्षा होती है। इस 5 वर्षीय कोर्स में बायोटेक्नोलॉजिकल साइंस, केमिकल साइंस, फिजिक्स के लिए फिजिकल साइंस और मैथ के लिए मैथमेटिकल साइंस के डिपार्टमेंट कार्यरत हैं। इसी प्रकार CBES में प्रवेश के लिए KVPY (किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना) के

माध्यम से भी प्रवेश होता है और NEST के माध्यम से भी। इसके अतिरिक्त यहां उच्च शिक्षा में रिसर्च में पीएचडी की डिग्री भी होती है।

इस प्रकार बेसिक साइंस में यदि करियर बनाने की योजना बनाएं तो निःसंदेह बहुत ही महत्वपूर्ण संस्थान भारत में है जहां पर आप पढ़कर उन चुनिंदा लोगों में शामिल हो सकते हैं जो बेसिक साइंस के अतुलनीय हैं। बेसिक साइंस के योगदान को हम वर्तमान कोविड-19 महामारी के दौरान और अच्छे से समझ सकते हैं। इसी प्रकार एक और प्रवेश परीक्षा TIFR-GS (टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च-ग्रेजुएट स्कूल) की होती है जो भारत में प्रतिष्ठित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में बेसिक साइंस के विषय मैथ, फिजिक्स, केमिस्ट्री, कंप्यूटर साइंस, बायोलॉजी में ग्रेजुएशन के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन और इंटीग्रेटेड पीएचडी के लिए होती है। TIFR के फंडामेंटल रिसर्च के मुंबई, पुणे, बेंगलुरु और हैदराबाद में 6 सेंटर हैं। इनमें भी इसी प्रवेश परीक्षा से प्रवेश होता है।

इन सेंटर में CAM (सेंटर फॉर एप्लीकेशन मैथमेटिक्स) बेंगलोर है जहां विद्यार्थी मैथ के साथ ग्रेजुएशन करते हैं और मास्टर और पीएचडी के लिए भी जा सकते हैं। विद्यार्थी को 21000 प्रति माह फैलोशिप भी मिलती है। इसी का दूसरा सेंटर HBCSE (होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन) मुंबई, जिसमें केवल रिसर्च स्कॉलर के लिए पीएचडी के एडमिशन होते हैं। यह विषय बेसिक साइंस और सोशलॉजी, टीचिंग और लर्निंग साइंस के होते हैं। TIFR का तीसरा सेंटर ICTS (इंटरनेशनल सेंटर फॉर थियोरिटिकल साइंस) बेंगलुरु में है, जहां पर मैथ और फिजिक्स में इंटीग्रेटेड पीएचडी और MSc फिजिक्स के विद्यार्थी के लिए Phd के लिए प्रवेश होता है। TIFR का चौथा सेंटर NCRA (नेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स) पुणे हैं यहां पर इंटीग्रेटेड पीएचडी और केवल Phd में भी एडमिशन होता है। TIFR का पांचवा सेंटर NCBS (नेशनल सेंटर फॉर बायोलॉजिकल साइंस) बेंगलुरु है यह बायोलॉजी से जुड़े विषयों का रिसर्च सेंटर है। यहां

पर इंटीग्रेटेड पीएचडी में प्रवेश होता है। TIFR & GS का जो पेपर बायोलॉजी के लिए होता है उसे उसे JGEEBILS (जॉइंट ग्रेजुएशन एंट्रेंस एग्जाम बायोलॉजी एंड इंटरडिसीप्लिनरी लाइफ साइंस) कहा जाता है। इस प्रवेश परीक्षा अंकों का इस्तेमाल बहुत सारे ऐसे इंस्टीट्यूट करते हैं जो बायोलॉजी के क्षेत्र में विशेष तौर पर काम करते हैं। इसमें से विशेषकर बोस इंस्टीट्यूट कोलकाता, CCMB (सेंटर फॉर सेल्यूलर एंड मॉलेक्यूलर बायोलॉजी), CDFD (सेंटर फॉर डीएनए फिंगरप्रिंटिंग एंड डायग्नोस्टिक्स) हैदराबाद, CHG (सेंटर फॉर ह्युमन जेनेटिक्स) बेंगलुरु, NII (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी) दिल्ली, IISER (इंडियन इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन रिसर्च) के बहरामपुर, कोलकाता, पुणे, त्रिवेंद्रम, तिरुपति से रिसर्च के लिए यही प्रवेश परीक्षा मान्य होती है। इसके अतिरिक्त NCCS (नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस) पुणे जैसे और भी अन्य संस्थान हैं जो इस प्रवेश परीक्षा को मान्यता देते हैं।

इन सभी संस्थानों की चर्चा यहां करने का तात्पर्य है कि विद्यार्थी इस बात को समझें कि बेसिक साइंस में जाने पर उनके लिए आगे रिसर्च के क्षेत्र में बहुत ही उत्कृष्ट संस्थान हैं जहां वे आगे बढ़ सकते हैं। इसी प्रकार की TIFR का 6वां सेंटर हैदराबाद में है जहां फिजिक्स, बायोलॉजी और केमिस्ट्री में रिसर्च के लिए प्रवेश लिया जा सकता है। यदि हम आगे और चर्चा करें तो भारत के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय JNU (जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय) दिल्ली में भी लाइफ साइंस में मास्टर डिग्री और पीएचडी, बायोटेक्नोलॉजी में पीएच.डी. मौलीकूलर साइंस, में पीएचडी और नैनो साइंस में केवल पीएच.डी. के लिए नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के द्वारा प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है।

इसी प्रकार B.Sc. बेसिक साइंस के क्षेत्र के विद्यार्थी AIIMS (ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस) दिल्ली में भी M.Sc. बायोटेक्नोलॉजी के अवसर बना सकते हैं। बायो टेक्नोलॉजी बहुत विस्तृत क्षेत्र है। भारत सरकार में विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत बायो-टेक्नोलॉजी विभाग के अंतर्गत 10 ऑटोनॉमस संस्थान काम करते हैं जो अलग-अलग क्षेत्रों में विशेषज्ञता

रखते हैं। यहां पर विद्यार्थी मास्टर डिग्री व रिसर्च में जा सकते हैं। इसी प्रकार बायोइन्फॉर्मेटिक्स के क्षेत्र में भी भारत के विश्वविद्यालय में रिसर्च हेतु BINC (बायोइन्फॉर्मेटिक्स सर्टिफिकेट एग्जाम) होता है जो कि इस CISR & NET की तरह ही होता है इसे पास करने वालों को फ़ैलोशिप दी जाती है। यह पुणे यूनिवर्सिटी, पुणे के सहयोग से आयोजित किया जाता है।

इसी प्रकार भारत में एक और बहुत ही प्रतिष्ठित एग्जाम है GATE (ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग) जो कि 27 विषयों में आयोजित किया जाता है। बहुत सारे राज्यो व PSU (सार्वजनिक उपक्रमों) में भी रोजगार के लिए गेट का स्कोर मान्य रहता है। गेट में केमिस्ट्री, फिजिक्स, बायोटेक्नोलॉजी अन्य बेसिक साइंस के विषय में परीक्षा होती है। गेट का स्कोर 3 वर्ष के लिए मान्य रहता है। इसी प्रकार भारत में प्रतिष्ठित IIS (इंडियन इंस्टीट्यूट स्टैटिक्स) कोलकाता है जहां पर मैथ और स्टैटिक्स के साथ 12वीं के बाद ग्रेजुएशन और उसके बाद पोस्ट ग्रेजुएशन में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा और उसके पश्चात इंटरव्यू के माध्यम से प्रवेश होता है। इस प्रकार हम यह समझ सकते हैं कि बेसिक साइंस में बहुत महत्वपूर्ण अवसर हम बना सकते हैं। विद्यार्थी अपने विषय में अनुभव और ज्ञान के साथ यदि मेहनत करें तो संस्थानों की कमी नहीं है। इसी प्रकार हमने 12वीं में मेडिकल साइंस के विषयों के साथ भविष्य की शिक्षा के आयामों पर एक गंभीर चर्चा पिछले कुछ अंकों में की है। आगे के अंकों में हम 12वीं के बाद नॉन मेडिकल विषय में किस प्रकार भविष्य के नए आयाम बन सकते हैं। इस पर चर्चा जारी रखेंगे। उपरोक्त चर्चा में मैंने अपनी क्षमता से बिंदुओं को स्पष्ट करने की कोशिश की है फिर भी किसी विषय में कोई सुझाव या शंका हो तो उसके लिए मैं सदैव आपके समक्ष उपलब्ध हूं। मुझे आपकी किसी भी जानकारी को बढ़ाने में खुशी महसूस होगी जो कि मेरा धार्मिक दायित्व भी है।

-प्रवीण धारणीया

अध्यक्ष, अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन

मो.: 9728400029

E-mail: parveendharnia29@rediffmail.com

जैसा विचार वैसा आचार!

आमतौर पर जब भी कभी हम चार-पांच की संख्या में कहीं पार्क, शादी या किसी समारोह में इकट्ठे होते हैं तो हम किसी न किसी विषय पर या किसी व्यक्ति के बारे में चर्चा करते हैं और चर्चा आमतौर पर हम उन्हीं व्यक्तियों की करते हैं जो वहां हाजिर नहीं होते और उस चर्चा या बातचीत में हम या तो उनकी तारीफ करते हैं या हम बहुत जल्दी उनके बारे में अपनी राय जाहिर करते हुए फटाफट कह देते हैं कि फलां-फलां व्यक्ति बहुत अच्छा है और फलां-फलां व्यक्ति बहुत बुरा है या खराब है। लेकिन आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि इस संसार में कोई व्यक्ति अच्छा या बुरा नहीं होता। सारे इन्सान बराबर होते हैं क्योंकि सभी इन्सान एक ही पदार्थ से बने हुए होते हैं। सभी का शरीर एक जैसा है। हाथ-पांव, मुंह, नाक, कान सब एक जैसे हैं। जब सब ही एक ही मिट्टी के बने हुए हैं तो फिर अच्छे या बुरे कैसे हुए? असल में इन्सान अच्छा या बुरा बनता है अपने कर्मों के कारण। इन्सान अच्छा या बुरा नहीं होता। अच्छे और बुरे कर्म होते हैं। जैसा वह कर्म करता है वैसा ही वह कहलाता है और कर्म हर इन्सान अपनी सोच के अनुसार करता है। जैसी उसकी सोच या भाव होता है वैसा ही वह व्यवहार करता है, वैसा ही बोलता है और वैसा ही कर्म करता है। व्यक्ति के हर कर्म का आधार उस व्यक्ति की सोच है। इसका मतलब हुआ कि जो कुछ भी है, वह सोच है और सोच बनती है वातावरण और संस्कारों से। पिछले घटनाक्रमों से वातावरण या संस्कार बनते हैं और घटनाक्रमों की श्रृंखला बहुत लम्बी है। हम आमतौर पर इसी जन्म के घटनाक्रमों पर नजर डालते हैं लेकिन वास्तव में ये श्रृंखला बहुत लम्बी है। भाव ये है कि इस जन्म के और पिछले अनेक जन्मों के कर्म हमारी सोच और हमारे स्वभाव को प्रभावित करते हैं। एक उदाहरण से ये बात स्पष्ट हो जाती है। क्या कारण था जो शिखण्डी, भीष्म पितामह से इतनी नफरत करता था। पिछले जन्म के संस्कार शिखण्डी की सोच पर हावी थे क्योंकि इस जन्म में तो उनका आपस में कोई सम्बन्ध था ही नहीं। दोनों एक-दूसरे से कभी नहीं मिले थे। ये पिछले जन्म का कर्म था जो शिखण्डी की सोच को प्रभावित कर रहा था और आखिर में यही सोच भीष्म की मृत्यु का कारण

बनी। ये हमारी सोच है जो हमारे जीवन को प्रभावित करती है। इसलिए आवश्यकता अपनी सोच को बदलने की है और सोच को बदला जा सकता है। ऐसा नहीं है कि विचारों या सोच को बदला नहीं जा सकता। जैसा कि हम आमतौर पर समाज में कहते हैं कि आदत वाले की आदत को नहीं बदला जा सकता। कुत्ते की पूंछ का उदाहरण देते हैं। ऐसा सोचना गलत है। हम अपनी सोच को बदल सकते हैं। हम भी अपनी सोच अपनी विचारधारा को बदलकर बेहतर इन्सान बन सकते हैं। महर्षि वाल्मीकि के बारे में हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि वे पहले क्या थे और फिर क्या बन गए। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा- 'उल्टा नाम जपत जग जाना। वाल्मीक भए ब्रह्म समाना'। आमतौर पर कहा जाता है कि वाल्मीकि ने राम-राम की जगह मरा-मरा का जाप किया। लेकिन सोचने का विषय ये है कि जो मरा-मरा कह सकता है, वह राम-राम भी कह सकता है। यहां तुलसीदास जी का भाव शब्दों को उलटाने से नहीं है, उनका भाव सोच को बदलने से है। वाल्मीकि ने अपनी सोच अपनी विचारधारा को बदला और महर्षि कहलाए। कहने का मतलब ये है कि हम भी अपनी सोच को बदल सकते हैं। लेकिन इसके लिए हमें खुद अपने स्तर पर कोशिश करनी होगी और ये कोशिश जीवन के शुरू से ही करनी होगी। जो जितनी जल्दी अपनी यात्रा पर निकल जाता है उतना ही जल्दी वह अपनी मंजिल पर पहुंच जाता है। जो युवा अवस्था से ही अपनी सोच को बदल लेता है उसका जीवन बेहतर बन जाता है। लेकिन इसका ये मतलब बिल्कुल नहीं है कि सिर्फ युवा ही अपनी सोच बदल सकते हैं। कोई भी व्यक्ति चाहे वह अपनी आयु के किसी भी पड़ाव पर है, उसकी चाहे कौसी भी अवस्था है वह इस कार्य में सफल हो सकता है, आवश्यकता दृढ़ निश्चय की है, पक्के इरादे की है। अब सवाल आता है कि सोच बदलने के लिए करना क्या होगा? अपनी सोच को अच्छी और सकारात्मक बनाने के लिए सबसे पहले हमें कुसंगत का त्याग करना होगा और अच्छे लोगों की संगत करनी होगी क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके ऊपर संगत का असर बहुत जल्दी और बहुत गहरा पड़ता है। सन्तों के विचार देखें। वे इस बारे में क्या कहते हैं?

गोस्वामी तुलसीदास- 'सत्संग बिन विवेक न होई। राम कृपा बिन सुलभ न सोई'। सन्त नामदेव जी- 'जो मिलै सत्संग सुभागा! होय विवेक प्रेम वैरागा'। अच्छे लोगों की संगत में जाकर हमारा विवेक जाग जाता है जिससे हमारी सोच शुद्ध और पवित्र बन जाती है क्योंकि विवेक जगाने से हमें असलियत और सच्चाई का ज्ञान हो जाता है। सच्चाई जानकर ही हमारी सोच पवित्र बनती है। इसलिए सत्य या सच्चाई को जानें। सोच को पवित्र और निर्मल बनाने के लिए सबसे पहले हमें इस सच्चाई को जानना होगा कि हम कौन हैं? हर धर्म में अपने आपको जानने की शिक्षा दी गई है। बाईबल कहती है- "Know thyself" कि अपने आपको जानो। हमारे शास्त्रों में भी जगह-जगह अपने आपको पहचानने का निर्देश दिया गया है। संत कबीर तो हमारे से ये सवाल सीधे-सीधे करते हैं। कहते हैं 'कौन है तू कहां ते आया, कहां है निज घर तेरा! केही कारण तू भटकत डोलै तन तज कहां वसेरा'। कि भाई तू कौन है, कहां से आया है और किस चीज की तलाश में तू इस संसार में भटक रहा है। सवाल यही है कि हम कौन हैं? क्या हम हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी या अमेरिकन हैं? क्या हम हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई हैं? क्या हम ब्राह्मण, जाट, राजपूत, खत्री इत्यादि हैं? क्या हम शहरी या देहाती हैं? क्या हम गरीब या अमीर हैं? क्या हम व्यापारी, नौकरीपेशा या जमींदार हैं? क्या हम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र हैं? असल में हम ये नहीं हैं। हमने अपने आपको ऐसा समझ लिया है जो हम वास्तव में नहीं हैं जिसके कारण समाज में सारा बखेड़ा है। वास्तव में हम सब इन्सान हैं। हम सब सिर्फ आत्मा हैं। शरीर तो आत्मा का कार्य करने का यन्त्र है। जब आत्मा इस शरीर से निकल जाती है तो शरीर बेकार हो जाता है, हिलडुल भी नहीं सकता, सड़ जाता है। असल चीज आत्मा है और आत्मा परमात्मा का अंश है और ये आत्मा हर इन्सान या जीव के अन्दर है। इस हिसाब से हम सब भाई-भाई हैं। एक ही पिता की सन्तान हैं। जब एक ही पिता की संतान हैं तो फिर कौन बड़ा, कौन छोटा, कौन अमीर, कौन गरीब? कोई फर्क नहीं रह जाता। जब ये सच्चाई हमारे हृदय में उतर जाती है तो हमारी सोच बदल जाती है। हमारे अन्दर सबके प्रति प्रेम पैदा हो जाता है। इस बारे में हमारे महात्माओं सन्तों ने क्या कहा है? ये भी देख लीजिए।

सन्त गरीबदास जी-

कैसा हिन्दू तुर्क कहाया। दोनों एकै द्वारे आया।

कैसा ब्राह्मण कैसा शूद्र। दोनों हाड मांस तन गूंद ॥
सन्त कबीर-

अव्वल अल्ला नूर उपाया, कुदरत के सब बन्दे।

एक नूर तै सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे ॥

एक और बहुत बड़ी सच्चाई जिसे हम भूले रहते हैं, यदि इस सच्चाई या असलियत को हम अपने सामने रखें तो हमारी सोच में निर्मलता और पवित्रता आती है। यह सच है कि वह परमात्मा इस सृष्टि को कुछ खास नियम और कानूनों के तहत चला रहा है। उन नियमों में जो सबसे महत्वपूर्ण कानून है वह जन्म और मृत्यु का कानून है। इस कानून के अनुसार जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु अवश्य होती है। मृत्यु अटल है। इस कानून में कोई फेरबदल नहीं हो सकता। दूसरे मृत्यु किसी भी पल किसी भी रूप में और किसी भी जगह आ सकती है। एक बार भगवान बुद्ध के पास कोई व्यक्ति आया। उसने कहा- महात्मा जी, मुझे तेरे ये लम्बे-चौड़े उपदेश समझ में नहीं आते। मुझे तो कोई छोटी-सी बात बता दो जिससे मेरा जीवन संवर जाए। महात्मा बुद्ध ने कहा ठीक है, तुम सिर्फ इतना याद रखो कि मृत्यु का कोई समय नहीं है। जो तू बोल रहा है, हो सकता है ये तेरा अन्तिम वाक्य हो। जो तू सोच रहा है, हो सकता है ये तेरी आखिरी सोच हो। तू जो कर्म कर रहा है हो सकता है वह तेरा आखिरी कर्म हो। उस व्यक्ति ने कहा ठीक है। वह एक सीधा व्यक्ति था, उसने इस बात को अपने हृदय में धारण कर लिया। इसके बाद उसका तो जीवन ही बदल गया। उसकी सोच पवित्र, शुद्ध और निर्मल हो गई। पता है वह व्यक्ति कौन था? वह व्यक्ति एक आनन्द देव था जो बाद में महात्मा बुद्ध का सबसे प्रिय शिष्य बना। आइए हम भी सच के साथ जुड़ें। अपनी सोच और विचारधारा को बदलें और अपने जीवन को नेक, पाक और पवित्र बनाएं।

-रामबीर सिंह दहिया

(रिटा. ई.टी.ओ.)

1357/16, फरीदाबाद

मो.: 9810493883



जन्माष्टमी विशेषांक के लिए विज्ञापन हेतु सूचना

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति के हजारों पाठकों की हार्दिक इच्छा व न्यायोचित मांग का सम्मान करते हुए अमर ज्योति का जन्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह भव्य विशेषांक गुरु जम्भेश्वर भगवान के जन्मोत्सव (जन्माष्टमी) के उपलक्ष्य में प्रकाशित होगा, जो अगस्त-सितम्बर, 2021 का संयुक्त अंक होगा। सामाजिक, पर्यावरण व आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी समाज की अति लोकप्रिय व विख्यात पत्रिका अमर ज्योति की प्रसार संख्या आठ हजार से भी अधिक है व पाठकों की संख्या एक लाख के लगभग है। अपनी निष्पक्षता, उपयोगिता व स्तरीय प्रकाशन सामग्री व रूचिकर आवरण के कारण इस पत्रिका ने राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र सहित पूरे भारत में ही नहीं अपितु नेपाल, इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों के पाठकों के हृदय में भी अपना आदरणीय स्थान बनाया है। आपको ज्ञात ही है कि इस पत्रिका का जब भी विशेषांक प्रकाशित होता है तो वह अपनी ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ-साथ अपने मनभावन व सचित्र आवरण के कारण पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बनता है। आज व्यवसाय व महंगाई के युग में भी बिश्नोई सभा, हिसार इस पत्रिका को समाज हितार्थ लागत से भी कम मूल्य में प्रकाशित कर रही है। इसके विशेषांक के प्रकाशन का श्रेय सदैव से ही आप जैसे विज्ञापनदाताओं को रहा है। आगामी विशेषांक में भी अमर ज्योति ने कुछ पृष्ठ विज्ञापन हेतु सुरक्षित करके विज्ञापन दाताओं को एक सुनहरा अवसर दिया है, जिसका सदुपयोग करके वे लाखों पाठकों के हृदय में अपनी गहरी पैठ बना सकते हैं। पत्रिका ने इस वर्ष विज्ञापन दाताओं की पुरजोर मांग का समर्थन करते हुए विज्ञापन रंगीन पृष्ठों पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। निःसंदेह इससे विशेषांक की भव्यता को चार चांद लगेगा। अतः जो समाजसेवी, उद्यमी व व्यवसायी बंधु अपनी इस चहेती पत्रिका को विज्ञापन के माध्यम से सहयोग देना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपना विज्ञापन व निर्धारित धन राशि 15 अगस्त, 2021 तक अमर ज्योति कार्यालय, बिश्नोई मंदिर हिसार में भेज दें। आपके सूचनार्थ-

- ❖ विज्ञापन के पृष्ठ सीमित हैं, इसलिए पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर ही विज्ञापन स्वीकृत किए जाएंगे।
- ❖ विज्ञापन केवल पत्रिका के अंदर के पृष्ठों में ही प्रकाशित होंगे।
- ❖ बिश्नोई धर्म व जांभाणी विचारधारा के प्रतिकूल विज्ञापन स्वीकृत नहीं किए जाएंगे।
- ❖ विज्ञापन की निर्धारित धनराशि का ड्राफ्ट बिश्नोई सभा, हिसार के नाम भेजें या सीधे हमारे इण्डियन बैंक, हिसार के खाता संख्या 898725571 (खाता धारक- बिश्नोई सभा, हिसार), IFSC - IDIB000H028 में जमा करवाकर उसकी रसीद हमें भेज सकते हैं।
- ❖ संभव हो सके तो विज्ञापन सामग्री सी.डी. में या e-mail से भेजें। e-mail का पता है- editor@amarjyotipatrika.com
- ❖ अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- मो. : 8059027929, 9991610029, 9467090729

विज्ञापन दरें:- (अन्दर के पृष्ठ)

| | |
|-------------|--------------|
| पूरा पृष्ठ | 10,000 रुपये |
| आधा पृष्ठ | 6000 रुपये |
| चौथाई पृष्ठ | 3500 रुपये |

अमर ज्योति का यांत्रिक विवरण
मुद्रित पृष्ठ का आकार 7¼"×9", कॉलम 2

आपके शुभाकांक्षी :

रामनिवास सिहाग

व्यवस्थापक, अमर ज्योति

मो.: 9467090729, 8059027929

डॉ. मनबीर

संपादक, अमर ज्योति

मो.: 9991610029, 9416128792



आदमपुर: हरियाणा के युगपुरुष पूर्व मुख्यमंत्री एवं बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल एक विरले इंसान थे जिन्होंने सदैव समाज के गरीब व पिछड़े तथा कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए काम किए। भले ही वे आज हमारे बीच मौजूद नहीं हैं परन्तु जनता अपने महान नेता को सदैव अपने दिलों में जिंदा रखेगी। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के संरक्षक एवं आदमपुर विधायक कुलदीप बिश्नोई ने भजनलाल की 10वीं पुण्यतिथि पर आदमपुर स्थित उनकी समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। फतेहाबाद विधायक चौ. दुड़ाराम, पूर्व विधायक रेणुका बिश्नोई, भव्य बिश्नोई, द्वारका प्रसाद, विक्रांत बिश्नोई सहित क्षेत्र के 36 बिरादरियों के लोगों ने भी जननायक चौ. भजनलाल की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें शत-शत नमन किया। चौ. भजनलाल की 10वीं बरसी पर हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली सहित विभिन्न क्षेत्रों में लोगों ने रक्तदान शिविर, मास्क, सेनेटाइजर व गरीब बच्चों को फल वितरित करके उन्हें याद किया। चौ. कुलदीप बिश्नोई ने कहा कि स्व. चौ. भजनलाल राजनीति में होते हुए सदैव सामाजिक रहे। विरोधियों को अपना बनाने की उनकी कला का हर कोई मुरीद था। विधायक, सांसद, केंद्रीय मंत्री तथा मुख्यमंत्री के ओहदे पर रहते हुए उन्होंने समाज की 36 बिरादरी व प्रदेश के हर क्षेत्र में उनकी गहरी पैठ रही व उनके परिवार ने राज्य के हर क्षेत्र से न केवल चुनाव लड़े बल्कि जीत भी दर्ज की। बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल ने

हरियाणा प्रदेश ही नहीं अपितु पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान सहित भारत के हर क्षेत्र के लोगों की हर प्रकार से सहायता की। बात चाहे रोजगार की हो, शिक्षा स्वास्थ्य की हो या जनहित में कोई कार्य की हो, उसमें पूरी भागीदारी निभाई। उनके द्वारा किए गए लोक कल्याण के कार्यों को सदैव याद रखा जाएगा व उनके बताए रास्ते पर चलकर हम एक सभ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं।

हिसार : बिश्नोई मन्दिर, हिसार में पूर्व मुख्यमंत्री एवं बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल जी की 10वीं पुण्यतिथि पर बिश्नोई मन्दिर मार्किट के दुकानदारों व समाज के लोगों ने उन्हें याद किया व कोविड 19 के नियम की पालना करते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर गरीब लोगों को फल भी वितरित किए गए। इस मौके पर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुभाष देहडू, कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान निहाल सिंह गोदारा, आत्माराम जाजुदा, सुभाष गोदारा (एल.वी.ओ.), जगदीशचंद्र कड़वासरा, अनिल पूनिया, ओमप्रकाश ज्याणी, बंसीलाल राहड़, भूपसिंह मांजू, महावीर नगरासरी सहित गणमान्य व्यक्तियों ने पहुंचकर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया।

-रामनिवास सिहाग

व्यवस्थापक, अमर ज्योति, हिसार

मो. : 9467090729



विश्व रक्तदान दिवस पर रक्तकोष फाउंडेशन ने रक्तदाताओं का किया सम्मान

धोरीमना: धोरीमना विश्व रक्तदाता दिवस और रक्तकोष फाउंडेशन के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रक्तकोष फाउंडेशन के संस्थापक और वर्तमान में नागौर के जिला कलक्टर डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी आईएसएस ने फेसबुक

लाइव के माध्यम से जुड़कर 'रक्तदान का महत्व व रक्तकोष फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों' पर चर्चा की और रक्तकोष फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त 'कार्ल लैंडस्टीनर श्रेष्ठ रक्तदान अवार्ड-2021' एवं 'राष्ट्रीय स्तरीय रक्तदान आधारित

ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता-2021' के परिणामों की घोषणा भी की। डॉ. सोनी ने कहा कि रक्तदान ही महादान है जिसमें जरूरतमंद व्यक्ति को नया जीवन मिलता है।

डॉ. सोनी द्वारा रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले रक्तकोष फाउंडेशन के दस पदाधिकारियों रक्तकोष फाउंडेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज सुथार, राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल मर्मिट, जिलाध्यक्ष हनुमानगढ़ अजय गिरधर, सीकर महेश शर्मा, जिला संयोजक श्रीगंगानगर चेनाराम सारस्वत, बाड़मेर श्रीराम ढाका, जिला सचिव जयपुर करण सिंह चावला, जोधपुर जितेंद्र चौधरी, बलश्रक प्रभारी जालोर किशन सुदेशा एवं गोविंदगढ़ मुकेश शर्मा को रक्तकोष फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त कार्ल लैंडस्टीनर श्रेष्ठ रक्तदान अवार्ड-2021 से नवाजा गया। रक्तकोष फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामगोपाल विश्‍नोई ने बताया कि विश्‍व रक्तदाता दिवस और रक्तकोष फाउंडेशन के स्थापना दिवस के अवसर पर रक्तकोष फाउंडेशन के द्वारा 01 जून से 10

जून तक देशभर में रक्तदान को प्रेरित करने हेतु गूगल फॉर्म्स के माध्यम से आयोजित 'राष्ट्रीय स्तरीय रक्तदान आधारित ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता-2021' में 26 राज्यों से कुल 6396 प्रतिभागियों में सहभागिता की थी जिसमें से डॉ. सोनी ने सर्वाधिक प्राप्तांकों के आधार पर लॉटरी के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ 11 व्यक्तियों का चयन कर विजेता घोषित किया गया जिसमें सैजल सोलंकी इंदौर (मध्यप्रदेश), लौकेश जैन अजमेर (राजस्थान), प्राची गुरदासपुर (पंजाब), मनीष बैरवा नरेला (दिल्ली), अनीता कुमारी मीणा टोंक (राजस्थान), अजयपाल सिंह बनासकांठा (गुजरात), काव्य साहू बस्तर (छत्तीसगढ़), नैना महाजन गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश), अरशद अली खिलजी बीकानेर (राजस्थान), संदीप जोगपाल सिरसा (हरियाणा), प्रज्योत पांडुरंग गांवकर उत्तर गोवा (गोवा) सम्मिलित रहें। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य स्तर भी तीन-तीन व्यक्तियों को विजेता घोषित किया गया।

लड़कियों को पढ़ाई के साथ खेलों में भी अवसर प्रदान करें अभिभावक

हिसार: अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन द्वारा जूम एप पर आयोजित राष्ट्रीय खेल वेबिनार करवाया गया। संगठन द्वारा आयोजित इस वेबिनार में ख्याति प्राप्त खेल प्रतिभाओं ने मार्गदर्शन करके राष्ट्र और समाज में खेलों के प्रति रुचि जागृत करने को लेकर अपने विचार व्यक्त किए। इस संबंध में जानकारी देते हुए संगठन प्रवक्ता रामनिवास बेनीवाल ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य वक्ताओं में कर्नल (रिटा.) राज पुनिया वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला ने खेलों के संस्थागत ढांचे पर प्रकाश डाला। महावीर बिश्नोई द्रोणाचार्य अवार्डी राष्ट्रीय कुश्ती कोच सीआईएसफ टीम ने कहा कि पढ़ाई के साथ साथ खेल भी आवश्यक है तथा खेलों में रोजगार के अवसर भी अपार हैं। जगदीश बिश्नोई पुलिस अधीक्षक तरनतारन पंजाब महाराणा प्रताप अवार्डी एवं ओलंपियन ने बताया कि सही दिशा में प्रशिक्षण एथलीटों को किस प्रकार सफलता दिलवा सकता है। अर्जुन अवार्डी एवं राष्ट्रीय कोच भारतीय रेलवे महिला कुश्ती टीम कृपा शंकर बिश्नोई ने भारत की कुश्ती में सफलता की कहानी को साझा किया। भारतीय रेलवे साइकिलिंग टीम के कोच राजेंद्र बिश्नोई ने साइकिलिंग गेम की बारीकियों पर बात करते हुए भारत में इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने का आह्वान किया। कॉमनवैल्थ चैंपियनशिप गोल्ड मेडलिस्ट

किरण गोदारा ने एक रेसलर के जीवन पर प्रकाश डाला। महिला क्रिकेटर आरजू बिश्नोई ने क्रिकेट में लड़कियां किस प्रकार आगे बढ़ सकती हैं इस विषय पर बात करते हुए आह्वान किया कि लड़कियों को खेलों में अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जायें। यंगेस्ट एथलीट पूजा बिश्नोई और उनके कोच श्रवण बुड़िया ने अभिभावकों से बच्चों को खेलों से जोड़ने का आग्रह किया। भारत में 'खेल संस्कृति' का विकास करने के उद्देश्य से खेल आमुखीकरण का यह कार्यक्रम जूम प्लेटफार्म पर आयोजित हुआ जिसका सोशल मीडिया पर भी सीधा प्रसारण हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण धारणिया ने की। इस दौरान विशेष तौर पर अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजीव गोदारा, संयोजक राजू कावा व्याख्याता जोधपुर, कार्यक्रम संचालक रामनिवास बेनीवाल व्याख्याता जोधपुर, मध्य प्रदेश प्रभारी सुहागमल, उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय सचिव गौरव बिश्नोई, पवार प्रदेश अध्यक्ष मेजर नरोत्तम, प्रदेश महासचिव राजीव पुनिया महलसरा इत्यादि मौजूद थे।

—रामनिवास बेनीवाल, प्रवक्ता
अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन
मो.: 7206710029

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम



पीपासर



सम्भराथल



जम्भोलाव



जांगलू



रोट्टू मन्दिर



लोदीपुर



मुकाम



लालासर साथरी



वील्हेश्वर धाम

रामड़ावास

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्बत् 2078 आषाढ की अमावस्या

लगेगी- 9.7.2021 शुक्रवार को प्रातः 5 बजकर 16 मिनट पर

उतरेगी- 10.7.2021 शनिवार प्रातः 6 बजकर 46 मिनट पर

सम्बत् 2078 श्रावण की अमावस्या

लगेगी- 7.8.2021 शनिवार सायं 7 बजकर 11 मिनट पर

उतरेगी- 8.8.2021 रविवार सायं 7 बजकर 19 मिनट पर

गुरु पूर्णिमा- 24.7.2021 शनिवार

श्रावण अमावस मेला- बारासण 8.8.2021 रविवार, शहीद

गंगाराम ईशरवाल मेला चैराई- 12.8.2021 गुरुवार;

करावड़ी मेला- 22 अगस्त 2021 रविवार; जन्माष्टमी

मेला- 30.8.2021 सोमवार (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी): पीपासर,

जोधपुर, हिसार, मेहराणा धोरा, लोहावट, फिटकासनी, लाम्बा,

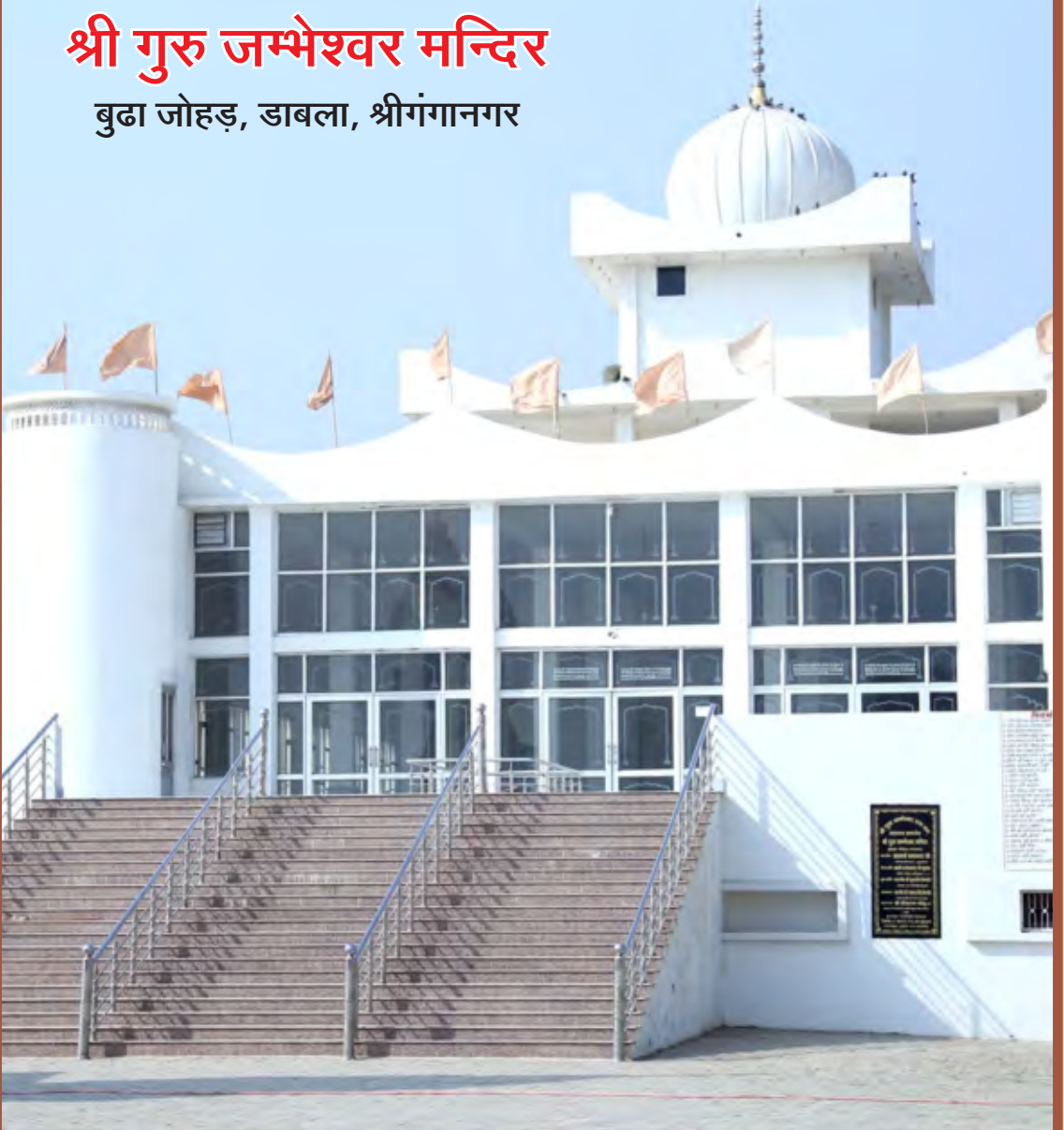
धोरीमन्ना, मालवाड़ा, सक्ताखेड़ा, हिम्मतपुरा, डबवाली

उनतीस धर्म नियम

- ❖ तीस दिन सूतक रखना।
- ❖ पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- ❖ प्रतिदिन सबेरे स्नान करना।
- ❖ शील का पालन करना व संतोष रखना।
- ❖ बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- ❖ द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- ❖ संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- ❖ निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- ❖ पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- ❖ वाणी विचार कर बोलना।
- ❖ क्षमा-दया धारण करना।
- ❖ चोरी नहीं करनी।
- ❖ निन्दा नहीं करनी।
- ❖ झूठ नहीं बोलना।
- ❖ वाद-विवाद का त्याग करना।
- ❖ अमावस्या का व्रत रखना।
- ❖ विष्णु का भजन करना।
- ❖ जीव दया पालणी।
- ❖ हरा वृक्ष नहीं काटना।
- ❖ काम, क्रोध आदि अजरो को वश में करना।
- ❖ रसोई अपने हाथ से बनानी।
- ❖ थाट अमर रखना।
- ❖ बैल बधिया नहीं कराना।
- ❖ अमल नहीं खाना।
- ❖ तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- ❖ भांग नहीं पीना।
- ❖ मद्यपान नहीं करना।
- ❖ मांस नहीं खाना।
- ❖ नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर

बुढा जोहड़, डाबला, श्रीगंगानगर



मुद्रक, प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश, प्रशासक,
बिश्नोई सभा, हिंसार ने डोरेक्स ऑफसेट
प्रिंटर्स, हिंसार से बिश्नोई सभा, हिंसार के
लिए मुद्रित करवाकर
'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर,
हिंसार से दिनांक 1 जुलाई, 2021 को मुख्य
डाकघर, हिंसार से प्रेषित किया।